मृत्यु-भय
(कहानी संग्रह)

मृत्यु-भय

निशान्त

स्वस्ति साहित्य सदन
रानी बाजार, बीकानेर-334001

निशान्त

प्रकाशक स्वस्ति साहित्य सदन रानी बाजार बीकानेर 334001
मुद्रक नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस शाहदरा दिल्ली-110032 / संस्करण
द्वितीय 1990 / मूल्य 25 00 रुपये मात्र।

MRATU-BHAY (*Short Stories*) NISHANT Price 25

क्रम

लगडी क्रांति / 7
साजिश / 13
श्रद्धा / 18
किलेबदी / 21
आदोलन / 24
छोटी स्कूल / 29
जुडे रहन की विवशता / 33
हथियार / 37
इसान और इन्सान / 41
मत्यु भय / 46
छलित / 54
गिरी हुई छत / 64
क वग / 70
एक बार फिर / 73
अयतत्र / 78
चौधरी साहब / 83
वाड नम्बर नौ / 86
बराबरी / 90
आखिरकार / 94

लगडी क्रांति

रामकृष्ण को दस साल बाद चौधरी भागीरथ ने खेत छोड देने को कहा तो गम के घूट पीते हुए रामकृष्ण ने जवाब दिया—छोड देंगे भाई। तेरा धन तुझे मुबारक! हम तो किसी के पराये धन की आश नही रखते। तुझे तो पता ही है तेरी जमीन जोतने से पहले मैं गिरधारी का खेत बीस सालो से जोतता चला आ रहा था। गिरधारी ने कहा, खेत छोड दो तो मैंने कितनी देर लगाई थी? उस वक्त भी एक-दो लोगो ने मुझे भडकाया था—भूमि पर तुम्हारा कब्जा है, क्यो छोडते हो? सरकार तुम्हारा साथ देगी। लेकिन भाई अपनी तो ऐसा करने के लिए आत्मा ही नही मानती। फिर प्यार मे खार क्यो आये? तेरी मेरी इतने दिन कितनी मित्रता रही है। इसी प्रेम के कारण ही तो मुझे तेरा खेत मिला था। अब अगर मैं विश्वास-घात करू तो क्या मेरा परलोक नही बिगडेगा? कई 'कोमनिस्ट' तो यहा तक कहते हैं कि भूमि वाले क्या भूमि अपने साथ लाये थे। परतु हम तो कहते हैं—धन तो धन वालो का ही रहेगा।

रामकृष्ण ने भागीरथ के आगे हृदय तो ऐसा रखा जसे उसे खेत छोडने का कोई गम न हो। लेकिन बाद मे वह बेहद चिन्तित हो गया। उसे पता था खेत छोडने के बाद वह, उसका बेटा, बैलो की एक जोडी, हल-पजाली और गाडी सब बेकार हो जायेंगे। चलो बैलो की जोडी, हल-पजाली और गाडी तो बिक जायगी लेकिन उनका क्या होगा? उन्हें रोटी कैसे मिलेगी? अब गाव का अन्य कोई चौधरी भी भूमि हिस्से पर नहीं देता। सब कब्जा कर लिए जाने से डरते हैं। बीता हुआ जमाना अच्छा था। चौधरी लोग भूमि देने के लिए हमारी मिन्नतें किया करते थे, अब उन्हें भूमि हिस्से पर

देने की जरूरत ही क्या है ? एक ट्रैक्टर एक-दो दिन मे सैकड़ो बीघे जमीन जोत बो देता है और कम्बाईन हार्वेस्टर एक दिन मे काटकर निकाल देती है। गाव की पचायती भूमि आये साल ठेके पर चढती है। लेकिन बोली देने वाले इतनी ऊची बोलिया देते है कि खेती करके कोई लाभ ही नहीं बचता। बोली केवल भूमिहीनो मे बीच ही लगती तो रेट इतना ऊचा न होता लेकिन भूमिहोनो के साथ-साथ भूमि वाले भी बोलिया देते हैं। और रेट बढा देते हैं। बेचारे भूमिहीनो का भूमि छुडवाने का ही हौसला नही होता। गरीब आदमी ज्यादा रिस्क भी तो नही ले सकता। कभी फसल को पाला या ओला मार जाये तो गरीब आदमी तो उमर भर बोली देने के काबिल न रहे।

खेत छुडवाने के बारे मे भागीरथ और रामकृष्ण के बीच हुई वार्ता सारे गाव म फैल गयी। तभी एक शाम रामकृष्ण का बेटा गाव मे घूमकर आया और घर आकर अपने बाप से बोला—बापू आज मैं गिरधारी के दरवाजे के आगे से गुजर रहा था तो उसने बुला लिया। हाल चाल पूछे तो मैंने कहा—हम गरीबो के क्या हाल हैं ? सारी बात तो उसे पहले ही मालूम थी। कहने लगा—तुम भागीरथ का खेत क्यो छोडते हो ? आजकल भूमि उसी की है जो उसे जोतता है। खेत का कब्जा मत छोडो। तुम आगे बढोगे तो तुम्हारे पीछे मैं भी जान की बाजी लगा दूगा। तो बापू, मेरे तो जी मे है कि हम खेत नही छोडेंगे। चौधरी गिरधारी अपनी मदद करेगा।

अपने बेटे का दिल और गिरधारी से मदद की उम्मीद नजर आने पर रामकृष्ण का दिल भी थोडा कसमसाया, सोचा—बात तो ठीक है और फिर दोनो तरफ आखिर मौत ही तो है अगर खेत छोडेंगे तो भी भूखे मरेंगे और भागीरथ के साथ लडेंगे तो भी मरेंगे। अगर लडाई मे मरेंगे तो भागीरथ को कैद तो होगी। भूख से मरना तो फोकट मे मरना है।

गिरधारी से मदद मिलने की उम्मीद होने पर रामकृष्ण की बाछें खिल गयी। उसके चारपाई मे पडे शरीर म उत्तेजना आ गयी। और वह उठ खडा हुआ। गिरधारी के घर की तरफ जाते हुए वह सोच रहा था—गाव मे दो पार्टिया होने का भी कितना लाभ है ! अगर एक पार्टी किसी पर ज्यादती करती है तो दूसरी फौरन उसका पक्ष लेने पहुच जाती है। आज से

दस साल पहले जब गाव म पार्टीबाजी नहीं थी तो इसी गिरधारी ने अपना खेत मुझसे छुड़वा लिया था । अपन ही तबके के एक-दो आदमी चाहते थे कि मैं खेत न छोड़ू लेकिन बड़े आदमियों में से किसी ने पक्ष नही लिया था। तब तो ये सब थ भी एक । किसी भी गरीब को दबाने का सवाल आता था तो सब एक हो जाया करते थे। उसे याद आया—कई साल पहले जब धानतराम ने मोती चमार के लड़के पर चोरी का झूठा इल्जाम लगा कर पुलिस से गाव ही म बुरी तरह पिटवाया था तो कोई भी उसे छुड़वाने के लिए नही आया था। अब तो गरीब-से-गरीब आदमी का पक्ष लेन को भी कोई-न-कोई तो तयार हो जाता है, किसी को एक पार्टी थाने म पकड़वाती है तो दूसरी फौरन छुड़वा लाती है । सारा गाव दो पार्टियो मे बटा है । एक धड़े का मालिक है गिरधारी और दूसरे का भागीरथ। एक-दो बातो को लेकर दोनो धड़ो म लाठी बदूक का सघ हो चुका है । वोटो की लड़ाई तो होती ही रहती है।

गिरधारी के घर की ओर जाते हुए रामकृष्ण ने यह भी सोचा— मेरे अदर वास्तव मे प्रेम और धम कुछ नही था। मैं ता डरपोक था। डर के मारे ही अब भागीरथ का खेत छोड देने की हामी भर ली थी।

गिरधारी ने जो बातें रामकृष्ण के बेटे से कही वही बातें उससे भी कहीं। सुनकर गिरधारी उसे कोई देवपुरुष-सा लगने लगा। उसने रामकृष्ण को बताया कि वह सदा से ही गरीबो का पक्षपाती रहा है। लेकिन उसने उससे भूमि इसलिए छुड़वा ली थी कि उसके आठ लड़के थे । आठ लड़कों मे बाटने के बाद भूमि बहुत थोड़ी-थोड़ी रह गयी थी। मैं तो छोटा मालिक था। तुम मेरी भूमि पर कब्जा कर ही नहीं सकते थे। भागीरथ तो बहुत बड़ा सरमाएदार है। वह तो दिनो दिन अपनी जायदाद बढा रहा है। उसने एक अय गाव मे दो मुरब्बे जमीन खरीद ली है। शहर म एक मकान भी खरीद लिया है। उसके कई फक्टरियो मे शेयर हैं। ऐसे आदमी की भूमि पर कब्जा करने पर तो स्वग के देव लोग भी खुश होगे। कहा भी है— बांट-बाट कर खाना और परमलोक मे जाना । सरकार का तो कहना ही क्या है ? वह तो खुद चाहती है कि लोगो म स्वय क्राति आये ।

अब रामकृष्ण रोज ही सुबह शाम गिरधारी क पास जाने लगा। उसका

बेटा भी जाता। उसका बेटा गिरधारी का हुक्का भी भर दिया करता था। रामकृष्ण ने किसी के द्वारा भागीरथ के पास भी संदेश पहुंचा दिया कि खेत नहीं छोड़ूंगा। भागीरथ भी सब समझ गया कि यह सब दुश्मनों की लगाई हुई है। उसने सोचा कि लड़ाई मेरी और रामकृष्ण की ही नहीं, मेरी और गिरधारी की भी है। ऐसा ही गिरधारी ने सोचा। और यही सब गांव वालों ने समझा।

भागीरथ ने घोषणा कर दी कि मैं फलां दिन खेत में हल जोड़ूंगा और रामकृष्ण को बेदखल करूंगा। भागीरथ की तो करोड़ों रुपये की भूमि थी। फिर गांव वाले तो भूमि और औरत के पीछे जान गंवाने को कुछ भी नहीं समझते।

भागीरथ के पक्ष के लोग उसके इतने दीवाने थे कि उन्होंने रामकृष्ण को खेत से बाहर निकालने की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उसका क्षेत्र में राजनैतिक दबाव इतना था कि सब लोग उसकी नजरों में ऊपर चढ़ना चाहते थे। सोचते थे, आज इसके काम आयेंगे तो कल यह भी हमारी ओर देखेगा।

दो चार भूमिहर किसान थे जिनकी आस्था तो रामकृष्ण की ओर थी लेकिन शरीर पार्टी की वजह से भागीरथ का ही साथ दे रहा था।

भागीरथ किसी भी कीमत पर खेत जाने देना नहीं चाहता था। उसने सोचा अगर गिरधारी ने आज उसे हरा दिया तो फिर कभी उसे ऊपर नहीं आने देगा। इसलिए उसने जी जान से बाजी लगा दी थी। इलाके के चार-पांच नामी गरामी गुंडे जिन्हें उसने चोरी तथा तस्करी के मामले में कई बार पुलिस के हाथों से छुड़वाया था। कह रहे थे—चौधरी साहब आप घर बैठे तमाशा देखते जाना। अपने खेत में अपना ट्रैक्टर चलेगा और जो रोकेगा उसे हम देख लेंगे।

भागीरथ ने सिर्फ नामी गुंडों पर ही विश्वास नहीं किया। उसने अपने एक-दो खास रिश्तेदारों को भी बुलाया जो पूरे दिलावर थे तथा निशाना बांधने में माहिर थे। फिर किराये के गुंडों की एक पलटन खरीद ली थी ताकि विरोधी पार्टी देखकर ही डर जाय और रक्तपात की नौबत भी न आये।

वैसा ही हुआ। भागीरथ के आदमियो से भरी हुई ट्रैक्टर की दो ट्रालियां और दो जीपें खेत मे पहुच चुकी थी। सभी शराब म मस्त थे, तथा 'हल्ला ! हू !" कर रह थे। बगल मे बदूकें लिये तथा नालियो की आड लेते हुए वे आगे बढ रहे थे। सभी ने अपने-अपने मोर्चे सम्भाल लिये। एक ट्रैक्टर रामकृष्ण की फसल उखाडने के लिए खेत की छाती पर जा चढा।

लेकिन गिरधारी के आदमी खेत मे न पहुचे। रामकृष्ण उसकी घरवाली और उसका बेटा तो था ही खेत मे। साथ मे था एक बुड्ढा अमली। उसने जिन्दगी भर चौधरियो की 'बॉडी गार्डी' की थी और जिदगी भर जायदाद के नाम पर सिर्फ एक एकनाली बदूक बना पाया था। अमली ने एक-दो फायर किये। लेकिन भागीरथ के चालाक और चुस्त रिश्तेदार ने पीछे स आकर उसे दबोच लिया। उसकी बदूक छीन ली।

एक जीप मे चढ़कर गिरधारी के आदमी भी थोडी दूर गये थे। लेकिन आगे बहुत सारे आदमी देखकर डरकर लौट आये। गिरधारी की पार्टी के लोग इतने बधे हुए नही थे कि मरलो और मारलो के इरादे पर उतर आते।

खेत म भागीरथ का ट्रैक्टर चलने लगा तो रामकृष्ण के हार खाए प्रतिपक्ष न एक बार फिर जोर मारा। उसने अपनी घर वाली से कहा कि ट्रैक्टर के आगे पड जाओ। रामकृष्ण की घरवाली ट्रैक्टर के आगे पड गयी। उसकी टाग कुचली गयी। रामकृष्ण न अपने लड़के के [illegible] पर भी चाकू से कई घाव कर दिये।

बाद मे उन दोनो को बैलगाडी म डालकर गाव [illegible] गिरधारी की जीप म बैठकर शहर के अस्पताल मे गये, [illegible] कृष्ण को शाबासी दी तथा कहा—अब मैं देख लूगा, [illegible] भर के लिए अदर न करवाया तो मेरा नाम नहीं।

लेकिन चार-पाच माह बीत गये हैं। [illegible] बिगडा। एक दिन के लिए भी उसकी गिरफ्तारी [illegible] आदमी एक-दो दिन के लिए गिरफ्तार हुए [illegible] गये। अब तारीखे पडती हैं जिन पर [illegible] नहीं।

खेती चली गयी, कोर्ट-कचहरी में आने-जाने के लिए तथा घर वाली का इलाज करवाने के लिए रामकृष्ण ने बैलों की जोड़ी तथा बैलगाड़ी बेच दी। अब वे पैसे भी खत्म हो गये हैं। कोर्ट-कचहरी कैसे जाये? गिरधारी कन्नी काटने लगा है। पास जाने पर झुंझला उठता है—तुम्हारे कारण मेरी नाक कट गयी।

अपनी लगड़ी हुई पत्नी के साथ भूख से झगड़ा करता रामकृष्ण सोचता है—भागीरथ के साथ मेरी लड़ाई, इस औरत की तरह लगड़ी थी। कितना अच्छा होता अगर वह अपने ही ढंग से लड़ता। फिर जो उसके साथ होते पूरे मन से होते। उसके विरोध में आने वाले थोड़े होते फिर हार भी होती तो इतनी जबरदस्त न होती।

i

और हड्डियां। मुंह निकलकर चिड़ी-सा रह गया है। बिना खुराक के चेतली की जवानी [redacted] माह में बीत गयी थी। बस ब्याह कर आयी थी और बीमार रहने लगी थी। चेतली की जवानी तो पानी के बुलबुले सी क्षणभंगुर साबित हुई। यह सब खुराक की कमी से हुआ। नहीं तो चौधरी गंगाधर की बहू चालीस वर्ष की होकर भी सोलह साल की छोकरी-सी लगती है। होंठ अभी भी इतने मुलायम हैं कि जैसे गुलाब के फूल की पांखुड़ी हो। उसके सातवां आठवां बच्चा भी सूरज की किरण जैसा जन्मा है। जबकि हमारा पहला भी बीमार पैदा हुआ। दस वर्ष का हो गया है कालिया और लगता है जैसे पांच साल का हो। भैंस घर पर ब्याई होगी तो सबकी काया सुधरेगी। कालिए को खूब घी पिलाना है। उसे पहलवान बनाना है।

भीखू का दस वर्ष का कालिया जो गलियों में बेकार घूमता फिरता था, कटिया के पीछे हो गया। पराये खेतों में इधर उधर लिये फिरता। कोई एक आधा रहमदिल जमींदार उसे अपने खेतों के नाले पर कटिया खड़ी कर लेने देता। कटिया हरी दूब के टुस्से खाती रहती।

निष्ठुर दिल का जमींदार कालिये की कटिया अपने नाले पर खड़ी देखकर भड़क जाता। कालिये को मां-बहन की गाली देने के साथ साथ दो थप्पड़ भी रसीद कर देता। ऊपर से कहता—खेत में बेगार! चले हैं भैंस पालने! सालो, लोगों के खेतों में कमाओ ताकि टुकड़े मिलते रहें।

सुबकियां खाता कालिया अपनी कटिया आगे हांककर किसी सूने खेत की नाली ढूंढने लग जाता।

कालिये की मां चेतली छाछ-पानी का कलेवा करके हाथ में खुरपी और फटी-पुरानी चादर लेकर खेतों में निकलती। खाली पड़े मैदान ट्रैक्टरों द्वारा जुते हुए होते। उनमें घास का तिनका भी न होता। फसलों के बीच भी हल चले हुए होते या फावड़ा से घास नष्ट की हुई होती। थोड़ी बहुत घास सिर्फ नालियों पर नसीब होती। नालियों में से घास खोदती हुई चेतली मन ही मन डरती रहती—कहीं कोई आकर टोक न दे? वह पौधों के बीच में न जाती तो भी खेतों के मालिक उस पर अक्सर आरोप लगा देते—खेत में कहां घास है? क्या बेकार घूम कर पौधे तोड़ रही है?

कई तो यह भी कह देते—तू घास के साथ-साथ पौधे भी उखाड़ लेती है। निकल खेत से बाहर।

मुफ्त म कोई घास भी न खादने देता था जबकि शरीर का सौदा करने पर कई उसे ज्वार का गट्ठर बाध कर देने को भी तैयार रहते थे। लेकिन यह सौदा करने के लिए चेतली के शरीर मे जान भी कहा थी और ऐसे सस्कार भी कहा थे? वह ऐसे लोगो को थोडा भला-बुरा कहती, मन मे बददुआए देती और किसी सूने खेत की नाली की खोज मे निकल पडती। दोपहर होते होते इधर-उधर सैकडो जगह हाथ मारने पर एक गठरी घास जुड पाता जिसे लेकर वह घर आ जाती।

भीखू शाम को घर आता। कटिटया देखता। उनके शरीर पर हाथ फेरता। रात को उसकी चारपाई कटिटयो के पास ही होती थी। जब तक नींद न आती भीखू कटिटया को देख देखकर सपने लेता रहता दो-चार साल म कट्टिया ब्याह जाएगी। घर म रोज एक मन दूध होगा। एक मन दूध! अपने घर मे इतना बडा कोई बतन भी नही! दो बडी-बडी बाल्टिया लानी होगी, दूध निकालने के लिए। दूध गम करने के लिए बडी-सारी हाडी लानी होगी। बिलौने के लिए बडा-सारा घडा होगा। इतना दूध कहा बिलोया जाएगा? आधा तो साइकिल वालो को बेच दिया करूगा। रोज नगद पसे तो आयेंगे? पसे तो आयेंगे लेकिन भसो पर खच भी करना होगा। तूडी मोल लेनी होगी कपासिया (बिनौले) और खल भी लानी होगी। चलो दूध होगा तो सब कुछ हो जायेगा। फिकर किस बात की है? मैं मजदूरी करनी छोड दूगा। सुबह शाम भसें चराया करूगा। भसें चराना कितना सुखद लगता है। भीखू को लगा कि फिर तो उसका बचपन ही लौट आएगा। पशु चराने का काम तो अक्सर बचपन मे ही नसीब होता है।

उसे बचपन के वे दिन याद आ गये जब वह पशु चराया करता था। तब लोग जमीन को इतना जोतते नही थे। चौमासे मे खूब घास फैल जाती थी। वे पशुओ को खुला छोडकर बादलो की छाव मे रेत पर कबड्डी खेला करते थे। वैसे उन्हें फिकर भी रहती थी। सुबह होती थी और प्रश्न उठता था—आज पशु किधर ले जाए?

अब तो गाव म ट्रैक्टरा की बाढ आ गयी है। लोग जमीनो को इतना जोतते हैं कि घास का तिनका भी नही उगता। अब तो सिर्फ पानी का नालियां पर ही घास उगती है।

बस भीखू इतना आश्वस्त ता जरूर था कि जिन मालिको के खेतों मे उसने कमाया है वे अपने खेता की नालियो पर उसे भस चराने से तो मना नहीं करेंगे।

कटिटयो को भसा दिखा दिया तो भीखू और चेतली के सपना को रग लग गया। लेकिन उनके सपना को रग लगे अभी एक माह ही हुआ था कि भीखू न अपने चौधरी स खबर सुनी कि सारे गाव के खेता की नालियां पक्की हो रही हैं। सुनते ही भीखू पर गाज गिर पडी। उसे चिन्ता हुई—जब नालियां ईंट और सीमेंट की हो जायेगी तब उसकी भसें क्या खायेंगी? वह भागा भागा चौधरी के पास गया—मालिक मुझे अपन खेत मे दो क्यारी ज्वार बीज लेने दो। मेरी भसें ब्याअ रही है। गाव की नालियां पक्की हो गयी तो हरा कहा स नसीब होगा? बिना हरा खाये बेचारियों के दूध कैसे उतरगा?

लेकिन चौधरी ने दूध-सा चिट्टा जवाब दे दिया—इतने दुखी क्यो होते हो भसें बेच दो।

चौधरी सब जानता था अगर यह भैंसो वाला हो गया तो अपने खत क्यार के काम से चला जायेगा।

खबर सच निकली। भीखू की भसें ब्यान तक गाव के खेता की सारी नालियां पक्की हो गयीं। गाव की राहों म कोई ऐसी जगह नही बची जहा से चेतली घास के तिनके खोद लाती या भीखू जहा अपनी भसें चराने ल जाता।

भीखू ने खेता म नौकरी करनी छोडदी लेकिन पार पडना कठिन हो गया। बिना हरा खाये भसें दिना दिन कमजोर होती चली गयीं। खल बिनौले पर खच करन पर ज्यादा न बचता। खल बिनौल पर खच ज्यादा होता फिर भी भसें खाकर इतना खुश न होती। इतना दूध न देतीं जितना वास्तव म देना चाहिए था। व तो हरी घास माग रही थी। हरी घास कहा स आती? भीखू ने जमीन वाला स कहा—ज्वार मुझ मोल ही दे

दो। लेकिन सबने कहा—हमने तुम्हारे लिए ज्वार थोडी ही बोई है हमारे तो अपने भी इतने ज्यादा पशु हैं कि पार ही नही पड रहा।

बिना हरा खाय भीखू की भैंसें सूखनी गयी। भीखू चेतली और कालिये के घी दूध खाने के सपने धरे-के धरे रह गये। जो थोडा बहुत आता उसे बेचने की कोशिश करते ताकि घर मे भैंसा के लिए तूडी, खल, बिनौला आये और उनके लिए गेहू लून, मिर्च गुड, चाय।

चेतली दावा करती—मरजानी, नालिया पक्की न होती तो भैंसो को खूब खिला खिला मैं दूध एक मन तक चढा देती।

लेकिन नालिया पक्की करने वालो ने भीखू और चेतली के दुख को नही देखा। सवाल राष्ट्र की प्रगति का था।

इस हालत म भीखू की भैंसें दूध से टल भी जल्दी गयी। बिना दूध के खाली भैंसो को सम्भालना भीखू के लिए मुश्किल हो गया। कमजोर हुए खोला को दुबारा आस भी न लगी। खाली खडे खोलो को भीखू दाना कहा से डालता? सूखी तूडी वे खाती न थी। फलस्वरूप दिनो दिन कमजोर होती चली गयी। दो चार माह मे सूखकर काटा हो गयी।

ऐसी हालत मे आस लगने की तो उम्मीद ही कहा बची थी। एक दिन गाव मे कटाई के लिए बुड्ढे कमजोर मरियल खोले और भैंसो के कटडे खरीदने वाले व्यापारी आये। भीखू ने अपने सपनो की दुल्हनों को उनके हाथ सौ सौ रुपये मे बेच दिया और आप जाकर गधाधर चौधरी के चौदह सौ रुपय मे साल भर के लिए नौकर रह गया।

श्रद्धा

कस्बे मे आवारा गाए बहुत थी। व सड़क के किनारे बैठे सब्जी वालो को बहुत तग किया करती थी। सब्जी वाला का थोड़ा सा भी ध्यान चूकता और कोई न-कोई गाय आधा किलो या पावभर सब्जी मुह म डाल बैठती। सब्जी वाले अपने हाथो मे लम्बी लाठिया लिये बैठे रहते थे। ज्योही कोई गाय सब्जी के पास आती वे गाय के मुह पर लाठी मारते।

गायो को मुह मारने के लिए सुनहरी मौका तब मिलता था, जब सब्जी वाला ग्राहक से पैसे लेकर गल्ले मे डाल रहा होता था या बकाया पैसे लौटाने के लिए अपना सारा ध्यान गल्ले मे केंद्रित कर देता था। पास म खड़ा ग्राहक गाय को दुत्कारता नही था, क्योकि धर्म का तकाजा है कि पराए खेत मे स गाय को हटाना तो क्या खेत मालिक पूछे तो बताना भी नही चाहिए।

लेकिन पूरे कस्बे मे कोई ऐसा नही था जो इन गायो मे से एक गाय को भी अपने घर ले जाकर बाध ले सेवा करे और दूध पीए। हा! कई पुण्य कमाने वाले ऐसे जरूर थे जो खास खास वारो तिथियो पर इन 'टाल' स खरीदकर हरा खिलाते थे। इस प्रकार आधी भूखी य गाए सब्जी वाला को तग करती रहती थी।

कभी-कभी ज्यादा नुकसान हो जाता तो सब्जी वाला गुस्से मे खड़ा होकर दूर तक गाय को मारता जाता था। ऐसे म कभी कभी कोई गाय किसी बच्चे-बूढ़े पर चढ जाती थी। उनके हाथो स सौदे का भरा थैला गिर जाता था चीजें बिखर जाती थी। आस-पास के लोग उन्हे सम्भालते थे। लोग ख्याल करते जिनका नुकसान होता था सब्जी वाले के साथ

झगडा करते थे, "यह भी कोई ढग है। गऊ को ऐसे मार मारते हो ? फिर देखो तो सही आगे कौन आ रहा है, कौन आ रहा है।" इस प्रकार तो तुम किसी को मरवाओगे।"

सचमुच ही एक दिन बहुत बडा बावेला खडा हो गया। तनाव के दिन तो वैसे ही थे। एक सब्जी वाले ने एक गाय के लटठ मारा तो वह एकदम पलटी। उधर से एक जीप आ रही थी। जीप वाला क्या बचाता, क्या न बचाता। गाय सब्जी वाले के लटठ से बचाव म आ ही गई। जीप कस्बे के एक सरदार गजनसिंह की थी। उसे सब जानते थे।

बात धीरे धीरे सारे कस्बे मे फल गई— 'गजनसिंह न गाय मार दी। एक सिख ने गाय मार दी।"

थोडी ही दर मे अच्छा खासा जुलूस बन गया। सब मिलकर किराए पर चलने वाली जीपो के अड्डे की ओर चल पडे। गजनसिंह किराए की जीप चलाया करता था। लेकिन जुलूस जब अड्डे पर पहुचा तो गजनसिंह वहा नहीं था। मौके की गम्भीरता ताडकर वह पुलिस के सरक्षण मे चला गया था। इकटठ हुए लोग अपने आक्रोश को जाया नही जाने देना चाहते थे। निणय लिया गया कि समूचा बाजार बद करवाया जाए। शीघ्र ही बाजार की दुकानो के 'शटर' गिरने लगे। लोग भाग-भाग कर अपने दडबो म घुसने लगे।

जुलस तोड फोड की कायवाही करता, दगा फसाद होता, इससे पहले ही गजनसिंह पुलिस के सरक्षण म जुलूस के आगे आ खडा हुआ।

उसने हाथ जोडकर पुलिस के अगुआओ म विनती की—'भाइयो हालाकि गाय के मारन म सारा दोष मेरा नही है, गाय सब्जी वाले के लटठ से डरकर जीप के आगे आ गयी थी फिर भी मैं प्रायश्चित करने के लिए तैयार हू क्योकि गऊ तो किसी की भूल से भी मर जाए तो भी उसे प्रायश्चित करना पडता है।'

उसके इतना कहने के बाद थानेदार ने कहा—"भाइयो यह तो थी इसकी ओर से अपनी सफाई। अब मैं आपको यह बता दना चाहता हू कि तेज गति स जीप चलाने के जुम मे मने इसकी जीप का चालान कर दिया है। मजिस्ट्रेट इसे जो भी दण्ड देंगे, वह इस भुगतना पडेगा। और आप कहें

तो मैं गाय की मौत की जाँच किसी भी उच्च अधिकारी से करवा सकता हूँ।"

किसी अन्य अधिकारी से क्या? सब्जी चौक में जाकर आप इसी वक्त फैसला कर लीजिए' जुलूस के एक अगुआ ने कहा।

सब सब्जी चौक में, जहाँ गाय मरी पड़ी थी, पहुँच गए।

थानेदार ने सब्जी वालों से पूछा— 'जब यह गाय जीप के आगे आई तब इसे लट्ठ से कौन मार रहा था?

एक सब्जी वाले ने बताया— 'रामलाल था, साहब।'

रामलाल खड़ा होकर लड़खड़ाती आवाज में बोला—"हुजूर, क्या करें? गाएँ हम सारा दिन बहुत तंग करती हैं।"

"तो फिर गाय के मरने में तुम्हारा दोष है?

'हमारा दोष कैसे हुआ साहब? गरीब आदमी सब्जी न लगाए और गऊओं को न हटाए तो खाए क्या?'

'तो क्या सारा दोष गजनसिंह का है?

"ऐसा कहना भी बेइंसाफ होगा साहब! दोष तो उनका है जिन्होंने थनों में दूध रहा, जब तक इन गायों को दूहा और फिर सूख जाने पर इन्हें खुला छोड़ दिया। कुछ ऊपरवाले की मर्जी थी। इधर से मैंने गाय को मारा, उधर से जीप आ गई।'

थानेदार जुलूस की ओर मुखातिब हुए। उन्होंने देखा—सबकी नजरें झुकी हुई हैं और सब पाँव के अंगूठे से सड़क खरोंच रहे हैं।

किलेवदी

वह काम न मिलने के कारण घर पर ही था। उसकी घरवाली रोटिया बनाकर छावडे मे रख कर पशुओ के लिए घास खोदने चली गई थी। बच्चे भी पडोस म खेलने निकल गए थे।

उसने आगन मे चूल्हे के आस-पास कोयलो को ढूढा। एक हडिया मे थोडे से कोयले उसे मिल गए। जिन्हे उसने चूल्हे की बेवणी मे सुलगने के लिए डाल दिया। फिर वह कोठे की पडछत्ती पर चढकर एक गिट्ठ भर का सरिया ढूढ लाया। कोयले अब तक सुलग चुके थे। उसने वह लोहा उन अगारो म तपने के लिए डाल दिया। एक बार वह फिर भीतर गया और एक पुरानी 'दूसेरी' और हथोडी निकाल लाया। 'सरिया' यू लाल नहीं होगा, सोचकर वह कोयलो को पखी से हवा करने लगा।

जब लोहा पूरा गम हो गया तो उसने सडासी से उसे पकडकर दूसेरी पर जमाया और लगा हथोडी से धडा धड मारने। सरिया जब एक तरफ से पूरा तीखा और दो-तीन उगल चौडा हो गया तो उसन उस एक बार फिर अगारो मे छोड दिया। हाडी मे बचे-खुचे कोयले डाले और हवा झलने लगा।

जब लोहा फिर से लाल हो गया तो उसने दूसरी तरफ से उसे इस तरह से तीखा किया कि उसकी गुलाई भी बनी रहे और तीखा भी हो जाए। कुछ चोटें उसने सिरिये के बीच मे भी दे मारी। गम लोहे को वह पलीडे तक ले गया और वहा गारे म छोड दिया। छन छन करती भाप उठने लगी।

लोहा जब पूणतया ठडा हो गया तो उसने उसे लाठी के एक सिरे

पर ठोक लिया। लोहा लाठी म से निकले नही और मजबूत रहे इसलिए उसने लाठी के उस सिरे पर एक पुराने फावड़े का कडा निकाल कर चढ़ा दिया। भाला तयार था। उसने ताना और दोनो हाथो से कस कर आगन की दीवार पर दे मारा। सारा का सारा सरिया गारे की दीवार मे घुस गया था।

बस ठीक है। लोलू कह रहा था—लुहार तुम्ह भाला बना कर नहीं देगा। बनाकर भी देगा तो बात गाव भर म उडा दगा। बात उडने से पुलिस मे शिकायत हो जाएगी। पुलिस आएगी और तुम्ह भाले सहित दबोच ले जाएगी।

लेकिन अब अ बल तो कोई इसकी शिकायत करेगा नही और करेगा भी तो कह दगा—यह तो मैंने खूटे खोदने के लिए बनाया है। कोई मेरा क्या बिगाड लेगा ?

तभी उसे आगन के एक कोने म पडी कुछ पक्की इटें दिखाई दीं। उसकी घर वाली पतनाले के नीचे पक्का चौकिया बनाने के लिए दूर-दराज से उन्हे उठा कर लाई थी। बरसात के दिनो म् पतनाले की सीध म आगन मे गड्ढा हो जाता है उसे रोकने के लिए। उसने सोचा —ये पक्की ईंटें भी हथियार का काम दे सकती है। लेकिन थोडी हैं। अगर एक इट की दो कर दी जाए तो एक तो उठा कर फेंकने म सरल रहेगी दूर तक जा सकेगी। दूसरा, दुगनी भी हो जाएगी। उसने दूसेरी उठाई और ईंटो के बीच म मार मार कर, सबके दो दो, तीन तीन टुकडे कर दिए।

थोडा काम करने से और शरीर मे सन्तोष पैदा होने से उसे भूख लग आई। उसने बच्चों को भी आवाज लगा ली। लाल मिच की चटनी का कुडी और रोटियो का छाबडा पास मे रख लिया। पहले थोडी-थोडी चटनी लगाकर रोटिया बच्चों को दी। फिर दो रोटियो के बीच काफी सारी मिच लेकर, एक तरफ हटकर खान बठ गया।

रोटी खाते हुए वह खुश था कि वह एक वीर की मौत मरेगा। सुसरी मौत से क्या डरना ? बूढ़े और बीमार हाकर चारपाई म पड पडे मौत की इन्तजार करते-करते मरना कितना कठिन है। घरवालों से गू मूत साफ करवाना पडता है। सेवा-बाडी करते-करते घरवाले भी तग

आ जाते हैं। झुझलाहट मे भला-बुरा भी निकल जाता है। श्वास सासाती से समाप्त हो जाये, उसके लिए पुन्न-व्रत करते हैं। भगवान से दुआ करते हैं। हे भगवान ! इस बुडढे को उठा ले। और जब बुड्ढा मरता है तो लोग कहते हैं—बुडढा मरा नही। बेचारा जी गया। बडा दु खी था।

रोटी खाकर कूडी और छाबडा भीतर रखने गया तो उसकी नजर खटिया के नीचे पडी कुल्हाडी पर गयी। उसने कुल्हाडी उठा ली और सोचा—यह भी अच्छा हथियार है। दरवाजे की ओट मे खडे होकर, अदर आने वाले बन्दूकधारी आदमी पर भी इससे वार किया जा सकता है। उसने कुल्हाडी को सम्भाल कर एक कोने मे खडा कर दिया। उसका विचार था कि वह अपनी घरवाली को भी इन हथियारो को चलाने की तरकीब बताएगा और लडते हुए मरने की बात समझाएगा।

दोपहर हो गयी तो उसकी घरवाली घास की गठरी लेकर आ गयी। आगन मे गठरी गिराते हुए उसकी नजर ईंटा के खोरो पर पडी।

ओ। ईट्या गो सित्यानाश क्यामी कर्यो है ?'

तेरे घर स्वण टोले का कोई आदमी पक्की इट लगी देख लेता तो क्या खफा न हो जाता ? और चोरी करने के जुम मे हमे । तुझे पता नही कल खारीयावास मे हरिजन टोले पर क्या गुजरी है ? सारे टोले मे कत्ले-आम मचा दिया। बलात्कार और आगजनी। क्या-क्या नही हुआ वहा। सुसरे, हरिजन भी गए-गुजरे निकले। नही तो कुल्हाडी तो हर घर मे होती है। दीवारो की ओट ले-लेकर मुकाबला करते हुए मरते तो कुछ तो पाच दस जरूर मारते ।

औरत न कुछ भी नही कहा। अन्दर रोटियो की तरफ चल दी। वह भी गडासा उठाकर घास का कुतरा करने बैठ गया। उसे एक बार फिर लगा कि हमारे घरो मे हथियारो की कमी नहीं है।

आदोलन

फटी मैली चीकट रजाई में दुबके अपने मर्द से उसने कहा—मनिये को बुखार है घर पर छोड़े जा रही हू। ध्यान रखना।

नत्थू ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की तो उसके मन में शका उठी कि पता नहीं वह मनिये का ख्याल रख पायेगा या नहीं। इसलिए उसने पड़ोसन से भी कह दिया—भट्टी पर जा रही हू। मनिया बीमार है। [illegible] रोय या बाहर निकले तो ख्याल कर लेना।

इसके बाद उसने मनिये से छोटी लड़की को कांख में दबाया। सिर पर अनाज छानने वाली छलनी रखी और चल पड़ी। वह मन-ही-मन सोच रही थी कि आज की कमाई से वह मनिये के लिए दवाई ले आयेगी। आटा दाल, नमक, मिर्च और लकड़ी तो दो चार दिन लायक उसके पास पड़े ही हैं। आने वाले दो दिनों की कमाई से वह रजाई में रुई भी डलवा लेगी। मनिया तथा छोटकी जिस रजाई के नीचे सोते थे, वह कई जगह से फट चुकी थी। वास्तव में मनिये के बीमार होने की वजह भी यही थी।

बाजार मे आयी तो दूर से ही उसे भट्टी के इर्द गिर्द पड़े कपास के ढेर नजर आये। उसका दिल कांपा—हाय राम! यह क्या हो गया? उसकी भट्टी के तो ऊपर तक कपास पड़ी है। अब वह कैसे भट्टी जलायेगी? उसे भट्टी जलाने भी कौन देगा? कपास तो बारूद है! बारूद! झट से आग पकड़ती है पिछले ही साल बिजली के तारों के आपस मे टकराने से एक ढेरी मे थोड़ी-सी आग लगी थी और देखते-देखते सारे बाजार में फैल गयी थी। वह तो हवा का रुख बदल गया था नहीं तो आग बस्ती तक में फैल आती।

वह भट्टी तक आयी। भट्टी के चार पांच जमींदार चारपाई पर बैठे ताश पीट रहे थे। वह उनसे कहने लगी—मेरी भट्टी के ऊपर तक यह कपास किसने गिरायी है?

—हमने गिरायी है। कपास बिक जायगी तो यह जगह खाली हो जायेगी।

—इतने दिन तक हम क्या खायेंगे? मेरे बीमार बच्चे के लिए दवाई आज कैसे आयेगी?

उनको ऊंचा बोलते देखकर सेठ आ गया। किसानों का आढ़तिया। वह उसे डांटते हुए बोला—ज्यादा करोगी तो कमेटी वाला को कहकर तेरी भट्टी पर किराया लगवा देंगे। तेरे कौन से बाप की जगह है यह?

सेठ की बात से वह डर गयी। वह जानती थी कि सरकारी जगह पर भट्टी बनाना लोगों की नजरों में गैर-कानूनी है। इसलिए तो वह कभी-कभार कमेटी वाले बाबुओं को चने मुफ्त में भून देती थी।

वह घर आ गयी। उसे उधार या मुफ्त दवाई मिलने की आशा नहीं थी। शाम रोटियां बनाते वक्त उसने चूल्हे में पक्की ईंट का खीरा गर्म करने के लिए डाल दिया। रोटियां खा कर उसने गर्म खीरे को एक गीले 'खाइये' में बांधा, भाप निकलने लगी। उसने मनिये को एक फटे पुराने कंबल से ढांपा तथा धीरे धीरे सेंक करने लगी। उसके ख्याल में मनिये को सर्दी लगी थी तथा सेंक देने से सर्दी टूट सकती थी।

यह तरीका उसने अपने बाप से सीखा था और उसके बाप ने एक नीम-हकीम से। लेकिन मनिये को सिर्फ सर्दी ही नहीं थी, उसे कमजोरी भी था। बीमारी ने धीरे धीरे उसके शरीर में गहरे तक जड़ें जमा ली थी। उसे कई रातों से बुखार आ रहा था। अब दो दिन से लगातार ताप चढ़ रहा था। इसलिए सेंक से मनिये का बुखार नहीं उतरा। हां एक बार थोड़ा-सा चैन पड़ गया और वह सो गया।

मनिये को सुलाकर वह पड़ोस में से सूखी पराली मांग लायी। इतने दिन तो वह फटी रजाई पर पराली डालकर सोने की बात टालती आयी थी। सोचती थी नयी रूई ही डलवा लेगी लेकिन आज उसकी उम्मीद टूट चुकी थी।

छोटके को लेकर, रजाई पर पराली डालकर वह मनिय के साथ सोयी लेकिन उसे लगा कि जो 'निवास' रूई से होता है, वह इस पराली से नहीं हुआ है।

दूसरे दिन वह फिर भटटी सभालने गयी। सोचा—शायद कपास उठ गयी हो लेकिन कपास नहीं उठी थी। वह घर आ गयी और मनिय तथा नत्थू की टहल मे लग गयी।

शाम को थोडी-सी फुसत मिलने पर वह मनिये को लेकर अस्पताल चली गयी। अस्पताल से उसे कोई ज्यादा उम्मीद नही थी। मनिये के बाप के लिए अस्पताल से मुफ्त दवाइया लेकर वह गयी थी। कोई फायदा नही हुआ था। एक बार उसने डाक्टर गुप्ता से एक दवाई लिखवायी थी। उस दवाई ने कुछ फायदा किया लेकिन यह दवा बहुत महगी थी। कभी-कभार अच्छी कमाई होने पर ही वह दवाइ खरीद पाती थी। महीने मे एक-आध बार। वह उस दवाई की एक शीशी को सहेज कर रखती थी। पसे जुडने पर शीशी लेकर दवाइयो वाली दुकान पर जाती थी। शीशी दिखाकर दवा ले आती थी। अब नत्थू के लिए दवाई खरीदे महीने से ज्यादा हो गया था। ऊपर से मनिया और बीमार हो गया।

अस्पताल के डाक्टर ने मनिये को देखकर लबी चौडी पर्ची के साथ एक छोटी-सी चिट भी उसे पकडा दी। वह जानती थी कि जो कुछ इस छोटे कागज के टुकडे पर लिखा है वही अस्पताल से मिलेगा। वह दवाइया मिलने वाली जगह चली गयी वहा उसे चार गोलियां मिली।

बडी पर्ची पर लिखी दवाइया खरीदने की उसकी पहुच कहा थी, इसलिए वह घर चली आयी। रात से मनिय को वे चारो गोलिया खिला दी लेकिन आराम नही आया। अगले दिन दोपहर तक मनिये तथा नत्थू की देखभाल करती रही। दोपहर के बाद भटठी देखने बाजार गयी। बाजार मे उसने देखा कि बहुत से लोग इकट्ठा होकर नारे लगा रहे हैं—कपास के भाव बढाओ! किसान बचाओ! इन भावो पर कपास नहीं बेचेंगे!

सब कुछ देख-सुनकर उसकी सांसें टूटने लगी। न जाने अब उसे कितने दिन यू ही इतजार करना पडेगा? मौसम भी तो कितना खराब है। बादल आ रहे हैं। भयकर पाला है। इस पाले मे वह कहां से इट-गारा

लाये और कैसे दूसरी जगह भट्टी बनायें ? ऊपर से मनिया और नत्थू बीमार हैं। इस गीले और ठंडे मौसम मे नयी बनायी भट्टी सूखेगी भी नही, फिर दूसरी जगह दाने भुनाने आयगा भी कौन ? दाने भुनाने वाले तो यही आयेंगे। इस जगह कपास देखकर लौट जायेंगे। उनको उसकी नयी भट्टी की जानकारी कैसे मिलेगी ?

नयी जगह भट्टी बनाने को लेकर मन म जहा ऐसी शकाए और मुश्किले थी वही उसके मन म यह भी या कि चलो आज नही तो कल कपास बिकेगी ही।

लेकिन नही। कपास बिकी नही। किसानो का आदोलन लबा हो गया। पूरे दस दिन गुजर गये। अब उसे मनिये और नत्थू की दवाई की ही फिकर नही थी। रोटियो की भी चिंता लग गयी थी। जोडकर रखा उसका अन्न धन सारा समाप्त हो गया। वह पडोस से उधार भी माग बैठी थी और उधार की अब उसे उम्मीद नही थी।

अब वह पछता रही थी कि अच्छा होता वह पहले दिन ही कही और भट्टी बना लेती। इतने दिनो मे तो उसकी भट्टी सूख भी जाती और इक्का दुक्का ग्राहक भी आने लग जाता। साथ ही वह अपने दिल को इस बात से भी तसल्ली दे रही थी कि पहले किसे पता था—कपास इतने दिनो नही उठेगी। पहले भी तो दो चार बार ऐसा हुआ था। उसकी भट्टी दो तीन दिन से ज्यादा बद नही हुई थी। लोग जल्दी-से-जल्दी कपास बेचकर घर चले जाते थ।

ऐसे पन्द्रह दिन हो गये। भट्टी वाली उसकी जगह खाली नही हुई। वह रोटियो का कोई वसीला न कर सकी। घर म चूल्हा जलना बद हो गया। बीमारी से मनिय का बुरा हाल था। मनिये पर वह कई देसी नुस्खे आजमा चुकी थी। पीर मौलवी के धागे भी बांध चुकी थी। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक दिन सूरज उगने के साथ मनिये के प्राण-पखेरू उड गये।

मनिये के निर्जीव शरीर को माटी देकर पडोस के दो आदमी घर आये तो वह नये सिरे से विलाप करने लगी। उसी वक्त नत्थू ऐसा बेहोश हुआ कि बाद मे उसे होश ही नहीं आया। उसका कमजोर शरीर इतने बडे दुख

को बर्दाश्त नहीं कर पाया। मनिये को एक पुरानी चादर में लपट कर माटी दे दी गयी थी लेकिन मनिये के बाप के लिए कफन का सवाल उठा। उसके पास कफन के पैसे नहीं थे।

ऐसे वक्त पर पड़ोसियों ने उससे मांगे भी नहीं। दो-चार जने मिलकर कफन तथा सीढ़ी का सामान लाने बाजार गये। सारा सामान लेकर जब वे लौट रहे थे तो बातें कर रहे थे—चीजों के भाव बहुत बढ़ गए हैं। साला कफन का कपड़ा भी इतना महंगा हो गया है। कफन के लिए जो सस्ता कपड़ा आता था, वह मिलता ही नहीं।

सब दुकानदार कहते हैं—कफन और क्या होता है ? सफेद कपड़ा ही तो होता है। ज्यादा करो तो माड वाला ले लो। लेकिन माड वाला कपड़ा शरीर को आग नहीं पकड़ने देता।

उधर बाजार में किसान अब भी नारे लगा रहे थे—कपास के भाव बढ़ाओ ! किसान बचाओ !

छोटी स्कूल

जुलाई का महीना है। सात बजने में अभी थोड़ी देर है। एक मास्टर जी स्कूल में आ गये हैं। हेडमास्टर साब अभी नहीं आये हैं। सारे स्कूल की चाबियां उनके पास हैं। बेचारे मास्टरजी पहली घंटी बजवायें तो कैसे? घंटी लगाने का हथोड़ा तो कमरे में बंद है। खैर उन्होंने एक पक्की ईंट के टुकड़े से ही घंटी बजवा दी है और देश-समाज और हैडमास्टर के प्रति पूरी वफादारी दिखा दी है।

पूरे सात बज गये हैं। बड़े गुरुजी अभी भी नहीं आये हैं। हां, चाबियां जरूर आ गयी है। एक लड़के के हाथ। दफ्तर खुल गया है। कुर्सियां चबूतरे पर निकल गयी हैं। लड़के हथोड़ी भी निकाल लाये हैं और मास्टरजी ने दूसरी घंटी बजवा दी है। दो मास्टर और भी आ गये हैं। प्रार्थना शुरू हो गयी है। दो अध्यापक चबूतरे पर कुर्सियां पर बैठे गप्पें लगा रहे हैं। एक मास्टर प्रार्थना करते लड़कों के बीच घूम रहा है।

प्रार्थना खत्म हो गयी है। लड़के अपनी क्लासों में चले गये हैं। इतने में द्वितीय नम्बर के मास्टरजी भी आ गये हैं। मास्टर नम्बर एक मानी हैडमास्टर जी अभी भी नहीं पहुंचे।

सारे मास्टर जी अपनी-अपनी क्लासों की हाजिरी लगा चुके हैं। दो नम्बर ने हैडमास्टर की क्लास की हाजिरी लगा दी है। सारे लोग बाहर चबूतरे पर खड़े हैं। यहां हवा काफी लग रही है। क्लासों में दम तो नहीं घुटता लेकिन वहां शोर है! शिकायतें हैं! वे कौन सुने?

बड़े मास्टर जी आध-पौन घंटा लेट आये हैं। उसे देखकर दो अध्यापक अपनी अपनी कक्षाओं की तरफ रवाना हो गये हैं। दो वहीं खड़े हैं। हाथ

जोड़े हुए। दो लड़के ने भागकर हैडमास्टर की साइकिल सम्भाल ली है। ठीक वैसे ही जैसे किसी मंत्री की कार का दरवाजा ड्राइवर आगे बढ़कर खोल देता है।

हैडमास्टर जी उन दो मास्टरों सहित दफ्तर में चले गये हैं। लड़का भेजकर बाहर वाले होटल से चाय मंगवा ली गयी है।

आधा घंटा गप्पबाजी और चाय में बीत गया है। दफ्तर में हवा कम लगती है इसलिए वे फिर बाहर चबूतरे पर आ गये हैं। लो! दो अभिभावक बच्चों को दाखिल करवाने आ गये! हैडमास्टर जी ने पास बैठे दोनों अध्यापकों को एक एक फार्म भरने के लिए पकड़ा दिया है। वे फार्म भर रहे हैं। फार्म भर कर वे हैडमास्टर साब को पकड़ा देते हैं। वे उनको दो-तीन तहें करके जेब में घुसेड़ लेते हैं। अभिभावक उठते हुए पूछते हैं— फीस?

'पांच पांच रुपये दे जाओ। बहुत है। ज्यादा तुमसे क्या लेने हैं।'

"हां! साब गरीब आदमी हैं।"

'वह तो हम भी जानते हैं। यहां सरकारी स्कूल में गरीब ही आते हैं।"

अभिभावक पांच-पांच रुपये दे जाते हैं। क्लासों में खड़े दो दिलजले अध्यापक देखते हैं। उनके दिल और भी ज्यादा जल उठते हैं।

हैडमास्टर खड़े होकर पहली कक्षा में जाते हैं। उन्हें पता है कि इसी क्लास की वजह से या सर्टीफिकेट कटा करके आने वाले बच्चों से ही उनका कुछ बनता है। यही पहली क्लास सबसे ज्यादा कमजोर रहती है। अध्यापक यहां आकर बिल्कुल ही नहीं पढ़ाते।

हैडमास्टर ने क्लास ले ली है। लेकिन वे दो अध्यापक जो अभी उनके साथ थे, दफ्तर में जा बैठे हैं। उन्होंने अपनी-अपनी क्लास नहीं ली हैं। हैडमास्टर जी देख रहे हैं कि जो दो अध्यापक क्लासों में हैं वे भी पढ़ा नहीं रहे हैं। उन्हें लगता है कि मास्टर जानबूझ कर उसे जलाने के लिए क्लासों में खाली बैठे हैं। उनका इसी तनाव के कारण सिरदर्द होने लगता है। वे एक लड़के के हाथ एनासिन की गोलियां का एक पत्ता मंगवा लेते हैं। साथ में चाय भी।

हैडमास्टर जी ने चाय के साथ गोली ले ली है। क्लास से थोड़ा दूर

हटकर एक बीडी भी फूक दी है। अब व क्लास मे हैं। उन्होन कुछ लडको का बारी-बारी से कायदे का पाठ पढन को कहा है। लेकिन जो पाठ वे पढने को कहते हैं। वह उन बच्चा स पढा ही नही जा रहा है। उन्होंने दफ्तर से अपनी बेंत मगवा ली है। और उन्हे मारना शुरू कर दिया है—हरामजादो, तुम्हे कितने साल हो गये स्कूल आते हुए ?

लडके रो रहे हैं। वे रोने पर और अधिक मारते हैं—रोता है ! रोता है ! ले ! और रो ! ल !! डडा पड रहा है लडका के सिर पर। हाथो पर और टागो पर। हारकर लडके चुप होते है तभी उनका पिंड छूटता है।

आधी छुट्टी हो गयी है। सभी अध्यापक अपने-अपने काम से निकल गए हैं। सिर्फ हैडमास्टर जी स्कूल मे है। रखवाली के लिए सारी जिम्मेदारी उनकी है। बस इसी बात के लिए वे दूसरे मास्टरो से अपने को अलग समझते हैं और कुछ नाजायज अधिकारा का उपभोग करते हैं।

आधी छुट्टी खत्म हो गयी है। सारे मास्टर स्कूल मे आ गये हैं तो हैडमास्टर जी चल पडे हैं। स्कूल मे करें भी क्या ? आप से पढाया नही जाता। अध्यापका को पढान के लिए कह नही सकते। कहें भी किस मुह से ? खुद तो समय पर स्कूल नही आते। पूरा समय स्कूल म नही लगा पाते। बच्चो से नाजायज फीसें लेते ह। वे अलग। अगर य अध्यापको पर सख्ती करेंगे तो वे बोलेंगे न ? फिर प्राथमिक विद्यालय के हैडमास्टर की औकात ही क्या है ? वह भी मास्टरो जैसा मास्टर है। उसके, स्कूल का इचाज होने की, एकमात्र योग्यता तो है सब से सीनियर होना।

दूसरे टाइम की हाजिरी लगाकर अध्यापक पुन दफ्तर म इकट्ठे हो गये हैं। अब की बार दिलजले अध्यापक भी शामिल हैं। बातें काफी देर चलती हैं। इक्का दुक्का अध्यापक कभी-कभार बालको की शिकायत पर क्लास मे जाता है और क्लास को डरा धमका कर बिठा आता है।

हा। तो बातें हो रही हैं। महगाई की, डी० ए० की, कटौतिया की, पिक्सेशन की। एक बार एक दिलजला अध्यापक यह भी कहता है कि अब की बार हैडमास्टर जी ने हम कभी चाय नही पिलायी। नहीं तो दाखिले के दिनो मे वे सारे स्टाफ को रोज चाय पिलाया करत थे। दो नम्बर सफाई देता है—भाई, चाय महगी बहुत हो गयी है। अब वे एक कप मगवाते हैं।

पास खडे को आधी देते है तो देते है नही तो सारी सुडक जाते हैं।

और तो सभी तरह की बातें इस स्टाफ म होती हैं, लकिन हैडमास्टर की नाजायज फीसो का विरोध करन की बातें कभी नही होती। शुरू शुरू मे उन दो अध्यापका न जिह हमन दिलजलो की सज्ञा दी है, यह बात उठायी थी। लेकिन दो और तीन नम्बर के साथ न न्ने के कारण बात शुरू मे ही दब गयी। परिणामस्वरूप य दोना हैडमास्टर की आखा म अभी भी रडक रहे है।

उनकी बातो के बीच म एक अभिभावक एक बच्चे को दाखिल करवाने आ गया है। दूसरे नम्बर का अध्यापक फाम भर देता है। अगूठा लगवाकर पाच रुपये ले लता है।

इस प्रकार समय काफी बीत गया है। छुट्टी होने म अभी थोडी देर है। हैडमास्टर जी आ गये हैं। मास्टरा को क्लासा म न देखकर वे मन-ही मन मे जल भुन जात हैं कि दूसरे नम्बर का अध्यापक उन्ह पाच रुपये और फाम पकडा देता है।

पाच रुपये हाथ मे आने पर हैडमास्टर को कुछ राहत-सी महसूस होती है। तनाव धीरे धीरे ढलने लगता है। व मास्टरा स कहत हैं—सारा सामान स्टोर मे रखवा दो। क्लासो मे ताले लगवा दो।

दो मिनट बाद ही छुट्टी की घटी बज उठती है—टन ! टन !

जुडे रहने की विवशता

उसने ज्याही कॉलेज के प्रागण मे प्रवेश किया, उस देखकर चार-पाच छात्रो की टोली मे खडा एक छात्र खासने लगा। वह उन लडको को अच्छी तरह जानता है। ये वही लडके है जो उसकी क्लास मे पीछे बैठे आपस म बातें करते है और वह अक्सर उनकी अनुपस्थिति माफ कर देता है। कोई अन जान व्यक्ति उनके खासने को स्वाभाविक मान सकता है लेकिन वह नही। वह अच्छी तरह जानता है कि य इस प्रकार की शरारत उसका अपमान करने के लिए ही करते है।

उसे बहुत दुख होता है। थोडी देर पहले साफ दिन की उजली धूप ने उसके जिस हृदय को खिला दिया था, अब वह पुन मुरझा गया ह। उसके सामने कई प्रश्न उठते है। लडके प्राध्यापको का इतना निरादर क्यो करत है? उनका पढने मे मन क्यो नही लगता? क्या उसका व्यक्तित्व प्रभाव शाली नही है? आदि। कुछ प्रश्नो का उत्तर उसके पास है, लकिन वह कर कुछ भी नही सकता।

वह क्लास लेता है। उसका हृदय अशान्त है। अशान्त मन से कोई काय ठीक ढग से नहीं किया जा सकता। वह यह अच्छी तरह जानता है। उसने महसूस किया कि उसका भाषण प्रभावशाली नही है और बालको की समझ मे नही आ रहा है। परतु इस सबके लिए छात्र स्वय ही जिम्मेदार है। साथ ही उसके आगे यह भी उजागर हो जाता है कि सभी छात्र एक समान नही हैं। अधिक छात्र ऐसे हैं जो उसका हर जगह मान करते हैं। उसक भाषण को ध्यान से सुनते हैं। बडे अच्छे अच्छे प्रश्न पूछते हैं। वह महसूस करता है कि ऐसे लडको की हानि नही होनी चाहिए, पर त यह भी

सभव है [redacted] शरारती विद्यार्थियो से निपट लिया जावे। इन्हें पढाई या ज्ञान मे कोई मोह नही है। कॉलिज को इन्होंने मनोरजन का स्थान ही समझ रखा है।

तभी पीछे से कुछ लडके शोर मचाते हैं। वह सबको खडा करके सात सात अनुपस्थितिया लगा देता है और क्लास से बाहर निकाल देता है। उसे उन बालको पर क्रोध आता है। वह ऐसे छात्रो को देखना तक नही चाहता वह इनसे तग आ गया है कि वह ऐसी नौकरी ही छोड देना चाहता है। कभी कभी उसके जी मे आता है कि वह सब वस्तुओ का मोह छोड दें। उसे तन के वस्त्रो की कोई सुध न रहे। सडक के किनारे बैठकर भाग और धतूरा पीने लग जायें। या अफीम, गाजे चरस और अन्य मादक पदार्थों की तस्करी करनी शुरू कर दे। तभी उसे गाव के एक व्यक्ति का याद आती है जो पाकिस्तान से सोना ला लाकर बेचता था और करोडपति बन गया था। लेकिन ये सब भी उसके मन की कल्पनाए ही है। वह कुछ भी नही कर सकेगा।

जो कुछ उसके लिए करना सभव था वह भी उसने नही किया। वह जो कुछ कर सकता था—कहानियां लिखना, फाके मे दिन काटना और खादी पहनना, अगर वह ऐसा करता तो अवश्य ही साहित्य मे ही उसका कुछ स्थान बन जाता और शायद रोटियां भी इसी के सहारे मिलने लग जाती, परन्तु उसने यह सब नही किया। आनन्द भोगने की लालसायें उसे ऐसी जगह खीच लाई जहा वह छात्रो की समस्या मे ही उलझा रहता है। कक्षाओ मे जाकर माथा पच्ची करता है। अपने गुट के प्राध्यापको से मिलता है। कैंटीन मे बैठता है चाय पीता है गप्पे हाकता है शाम को पत्नी को साथ लेकर सैर करता है। उसकी बहुत सी फरमाइशें पूरी करता है। थोडी बहुत गाव मे रह रहे बुड्ढे माता पिता की सभाल लेता है। छोटा भाई जो ला कर रहा है उसे आय महीने उसकी माग से कुछ कम पैसे भेजता है। परन्तु वह महसूसता है कि जो कुछ वह कर रहा है वह उसके लिए नही है।

स्टाफ-रूम मे बैठे-बैठे इतनी बातो का विश्लेषण करने पर भी उसे कोई हल नजर नही आया। उसे कोई दूसरी राह नहीं सूझती। वह निर्णय करता है कि वह उन छात्रो को ही सुधारेगा। वह खडा होकर प्रिंसिपल के

दफ्तर में चला जाता है। उन विद्यार्थियों के रोल नम्बर बताकर सिफारिश करता है कि ये लड़के हमारा अपमान करते हैं, कक्षा का अनुशासन भंग करते हैं, इसलिए ये लड़के कॉलेज से निकाल दिये जाने चाहिए।

प्रिंसिपल एक फीकी हंसी हंसता है, शर्मा साहब, इस तरह हम अगर लड़कों को निकालते चलें तो यह कॉलेज एक दिन खाली हो जायेगा। हमें तो फीस चाहिए। फिर इन छात्रों के माता पिता तो शहर के माने हुए लोग हैं। इनको छोड़कर हम जायेंगे भी कहां? इन लोगों से तो हम साल में हजारों रुपये का चन्दा प्राप्त होता है। खैर, आप अपने मस्तिष्क पर इतना बोझ न रखें। मैं इन लड़कों के माता पिता से मिलकर इन्हें अच्छी प्रकार समझा दूंगा।'

स्टाफ रूम की ओर रास्ते में उसने एक क्लास रूम के अन्दर झांका। प्राध्यापक बोर्ड पर कुछ लिख रहे थे, लेकिन पीछे की बेंचों पर बैठे लड़के उन पर कागजों की छोटी छोटी गेंद सी फेंक रहे थे। प्राध्यापक बेचारे जान-बूझकर उनकी इस शरारत से अनभिज्ञ हुए जा रहे थे।

तभी उसे लगा कि अगर वह भी इसी तरह अपमान से आंखें मूंद ले और किसी बात की परवाह न करे तो उसका भी गुजारा हो सकता है।

शाम को जब वह अपनी पत्नी के साथ एक रेस्तरां में पहुंचा तो वही चार-पांच लड़के और दो उनके विरोधी गुट के प्राध्यापक बैठे थे। उन्हें देखकर लड़के एक साथ खिलखिला पड़े। उनके साथ बैठे प्राध्यापक उन्हें रोक नहीं सके। रोकते भी कैसे?

पत्नी ने पूछा, "ये कौन हैं।"

'पता नहीं कौन हैं इतना बड़ा शहर है। मैं किसी को क्या जानूं।"

रात को सोये सोये उसने अपनी समस्याओं पर एक बार फिर विचार किया। उसने महसूस किया कि वह नौकरी नहीं छोड़ सकता। नौकरी छोड़ने पर वह अपनी पत्नी की नजरों में गिर जायेगा। यह भी हो सकता है कि हीनता की स्थिति में वह उसे छोड़कर ही चली जाय। उसके भाई की पढ़ाई बीच में ही समाप्त हो जायेगी। गांव और शहर में जो उसका प्राध्यापक होने के नाते मान है वह सब समाप्त हो जायगा। उसके इस वर्तमान अपमान को तो केवल दो चार व्यक्ति ही जानते हैं। सबसे अधिक तो

उसे ही अनुभव होता है । लेकिन नौकरी छोड देन पर जो असीम अपमान होने लगेगा उसे वह सह नही सकेगा । कविता या कहानी उसे बचा नही सकेगी । सबसे बडी बात यह है कि नौकरी छोडना भीरुता है । अगर इसी प्रकार सभी नौकरी छोडने लग जाये तो फिर पढाएगा कौन ? वह उन लडको को याद करने लगा जो उसे मान देते हैं, उसने निर्णय किया कि केवल वह उन्ही लडको के लिए कालेज जायेगा ।

इसके पश्चात वैसा ही जाना-पहचाना रोज का रोज आता रहा और वह कालेज जाता रहा, पढाता रहा ।

हथियार

वह उफ मेरा 'बॉस' मुझे नीम चढे करेले सा कडवा लगता था। कई बार तो वह एस अवसर तैयार कर बैठा कि म उसके प्राण तक लेने को तयार हो गया, परतु मन ही मन मे। एक दो बार तो मैंने मन ही मन म योजना बनाई कि क्यो न रात को छुरा लिये उसके घर म उतर पड़ू। बस एक ही वार मे मामला पार। परन्तु अगले ही क्षण मैं डर गया कि मेरे दीवार फादते ही वह जाग गया और सिरहाने रखी अपनी पिस्तौल मुझ पर प्रयोग कर ली तो। वह साफ बच जायेगा उसका कुछ नही बिगडेगा, अदालत मे कह देगा मैंने तो अपने प्राण बचाये हैं। या मान लो, वह जागता नही है और मैं उसकी हत्या कर दता हू तो फिर मुझको उसके भाई जिन्दा नही छोडेंगे हिंसा मे हिंसा तो बढती जायेगी।

इसलिए मैंने समझ से काम लिया और एक अहिंसात्मक हथियार की खोज मे लग गया।

मेरी और उसकी शत्रुता के कारण बताने की आवश्यकता मैं नही समझता क्यकि उन कारणो को सभी चमचागिरी न करने वाले मातहत बखूबी समझते हैं। वैस उनको बतान भी लग जाऊ तो वे अलग से कई कहानियां बन जायेंगी।

अधिकतर मेरे साथी भी मेरे साथ थे और हम जहा कहीं मौका मिलता हम उसके विरुद्ध उलटिया करनो शुरू कर देते। क्या दफ्तर का पिछवाडा क्या शहर की गलिया हमारा प्रमुख विषय यही रहता। एक दिन मुझ एक साथी ने बताया कि उसके विरुद्ध एक अचूक हथियार प्रयोग मे लाया जा सकता है जिससे उसके पजे तक उखड सकते हैं। और उसको कैद भी हो

सकती है। जिस साथी ने बताया वह मेरा पूरा विश्वासपात्र था और काफी समझदार भी। उसने मुझे बताया कि अपने साहब न बचनसिंह को 'लीव विकेंसी' पर जिस चपरासी को रखा था उसे केवल पिचेत्तर रुपये दिये थे और हस्ताक्षर दो सौ एक रुपये पर करवाये थे। अब अगर हम उसकी शिकायत कर दें और वह चपरासी सही बयान दे दे तो उसकी छुट्टी हो सकती है।

अब मैं उस चपरासी नाम सहीराम की खोज करने लगा। वह अकाल ग्रस्त क्षेत्र से आया हुआ था, पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि जब से उसे दफ्तर से निकाला गया है वह गावों मे इधर-उधर मजदूरी करता है। उसे खोजने की दुविधा मे कई दिन बीत गये।

एक अन्य मित्र ने सुझाया कि तुम उस चपरासी को खोज लो और मजिस्ट्रेट या किसी ओथ कमिश्नर से उसके ये हलफिया बयान तसदीक करा लो। उस परचे को अपनी जेब मे रखो, जब कभी साहब आक्रमण करे जेब से निकालकर सामने रख दो, इस हथियार के आगे पिस्तौल भी पानी भरेगी।

मेरे मन मे भी यह बात गहरे तक बैठ गयी कि चलो इससे साहब की छुट्टी नही हो सकती, परन्तु चोर अपनी चोरी पकड ली जाने पर अवश्य ही घबरा जायेगा। जिस दिन उसे यह दिखा दूगा वह भर आगे पानी भरेगा। कितना सरल उपाय है बास को नीचा दिखाने का। मैं मन ही मन मे वाह ! वाह ! कर उठा।

एक दिन मैंने छुट्टी ले रखी थी। कई धन्धे थे जिन्हें मैं सतोषपूर्वक करना चाहता था। सुबह सुबह ही पत्नी को, एक रजाई सिलने के लिए मकान मालिक की सिलाई मशीन लाकर दी। अन्त मे जाते जाते पत्नी ने उसकी सुई ही तोड दी। बडा दुख हुआ। भारी मन लिये बाजार मे गया। सोचता था पचास पैसे का नुकसान हो गया। इससे तो अच्छा था रजाई बाजार मे ही सिला लेता। परन्तु जब दुकानदार ने पचास की बजाय पिचेत्तर माग लिये तो मेरा मुह और भी ज्यादा लटक गया। सिगरेट पीने को जी करता था ताकि कुछ गम उड जाय। परन्तु फालतू पैसे तो पहले भी बहुत खर्च हो चुके थे इसलिए मन मार के रह गया।

परन्तु उस समय मुझे क्या पता था कि मेरा गम आज दूसरी प्रकार ही दूर होगा । जब मैं अपने चक्की वाले दोस्त के पास बतिया-के गम भुलाने के लिए चक्की पर पहुचा तो मेरे आश्चय का ठिकाना न रहा । सहीराम वही आटा खरीद रहा था ।

मैं देखने ही चहक पडा—'कहो सहीराम क्या हाल है, कभी मिलते ही नही कभी सेवा का कोई मौका नही दिया ।' मैं एक ही सास मे कह गया ।

वह बेचारा दात निकालता हुआ 'बस-बस' करता रहा ।

'आओ अब घर चल वही रोटी खा लेना । मुझे भी तुझस थोडा-काम है ।' मुझे डर था कि कही वह मुकर ही न जाये ।

"तो अभी कह दो क्या काम है ?"

मैं उसे चक्की के पिछवाडे मे ले गया और कहने लगा, 'वैसे तो तू जानता ही है अपना साहब बडा खराब आदमी है । मेरे साथ तो वह खास शत्रुता वाला रुख रखता है । हमने सुना है कि उसन तेरे को पिचेत्तर रुपये दिये और हस्ताक्षर दो सौ एक रुपये पर करवाये ।"

"हा, यह सच है ।"

"तुम यह सब मुझ लिखकर द दो तो यह मेरे लिए बडी काम की चीज होगी ।'

'हा । मैं लिखकर द सकता हू । मुझे भी उस पर बहुत क्रोध है । मैं उसके विरुद्ध मे बयान जहा तुम कहोगे वहा दे दूगा । मैं पचासो रुपये का किराया भर कर भी आ सकता हू ।'

'नहीं अगर आवश्यकता पडी तो हम तेरा किराया नही लगने देंगे ।"

फिर मैं उसे तहसील मे ले गया । उसके हलफिया बयान टाइप करवाये—फला दफ्तर के फला अफसर ने अमुक दिमाक को मुझे इतने रुपये दिये इतने पर हस्ताक्षर करवाये । नीचे उसके हस्ताक्षर हो गये । बयान 'ओथ कमिश्नर' से तसदीक भी करवा लिय ।

मैंने दोस्ती के तौर पर उसे अपना स्थायी पता लिखकर दिया और कभी-न-कभी घर आने को कहा ।

अब मशीन की सुई टूटन का दुख मैं पूणतया भूल गया था । मेरी छाती फूलकर चार गज चौडी हो गयी । मैंने मन ही मन म नालायक बताने

वाले पिता को बताया कि देखा, मैं इतना बड़ा कूटनीतिज्ञ हू । अपन साहब से भी नही डरता उल्टा उस अपने दबाव म रखता हू ।

तभी एक होटल म बैठकर दोस्त के साथ चाय पी । बिल का भुगतान दोस्त का न करने दिया । खुश तो जरूर था परन्तु खुशी का कारण किसी और को नही बताया कही उस पहल ही पता न चल जाय ।

घर आकर पत्नी को सुई का मूल्य ज्यादा लग जान पर डाट नही दी । उल्टा रसोई घर मे बैठकर हस हसकर बातें करने लगा । पत्नी हैरान थी ।

'आज एक चीज लाया हू ।'

'क्या ?

मैंने बयान उसके आगे रख दिये— अब देखूगा उसे । बात-बात म रोब मारता है, तरह तरह की गलतिया निकालता है । अब तो सब बदले म लूगा ।

तभी पत्नी ने कहा—' अगर वह कह देगा यह ता तुम दोनो न मिलकर मेरे विरुद्ध झूठा दोष लगाया है । क्योकि चपरासी को ता मैंन आग नौकरी नही दी तथा तुम वस ही मुझस नाराज हो । ये सहीराम के बयान बिल्कुल झूठ है ।'

सुनकर मेरा मुह कुछ उतर गया । परन्तु मुझे फिर भी विश्वास था कि चोर के पैर नही होते । वह कोतवाल को कभी नही डाट सकता । परतु उल्टा चोर कोतवाल को डाटे वाली कहावत ने मुप मथना शुरू कर दिया ।

दूसर दिन साहब अपन कमरे मे दूसरे चपरासी को डाट रहा था । उसकी दहाड सुनकर मेरा जी डूबने लगा मुझे लगा कि यह कह रहा है— तुम क्या लिय फिरते हो ? ये बयान बिल्कुल झूठ हैं मेरे पास प्रमाण है । तुम्हारे पास बयाना के अतिरिक्त और क्या सबूत ह ? तुम जो हथियार लिये फिरते हो वह कही चलने का नही । हमने भी कच्ची गोलिया नही खेली हैं जो तुम जैसे छोकरे हमे दबा जायें पहले अपनी प्रत्यक साइड सफ करके ही मैंने पसा खाया है । मेरा कोई कुछ नही बिगाड सकता ।

इन्सान और इन्सान

हम दुनिया की खोज-खबर से दूर पाकिस्तान में एक गांव मे बड़े मजे से रह रहे थे। हमारे खूब जमीन थी। जुलाई सन् 1947 की एक शाम को हम पता चला कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बन चुका है। पाकिस्तान मे कोई हिन्दू नही रह सकता और यह भी सुना कि मुसलमान हिन्दुओ को सरेआम हत्याए कर रहे हैं।

हम तो पाकिस्तान मे रह भी कसे सकते थे। गुलाम मुहम्मद जैसा गुडा हमारा जानी दुश्मन था। उसके साथ हमारे जमीन-जायदाद के मामले पर समय समय पर दगा-फसाद होते रहते थे। वह इलाके का एक तरह का डाकू था। अपने साथ बदूक और चार-पाच 'लगवाड' रखता था। लेकिन हमारे आगे उसकी पेश नही चलती थी। हम कानून के मुताबिक चलते थे।

जिस समय हमने समाचार सुना। मेरी भाभिया तन्दूर मे रोटिया लगा रही थी। फिर क्या था? तन्दूर की रोटिया तन्दूर मे ही रह गयी। हम हडबडी करके घर से बाहर निकले। कोठे गेहू और सामान से भरे पडे थे। साथ क्या-क्या चलता? नाम मात्र का सोना और नगदी ले सके सो ले लिया। बस।

हम शीघ्र ही सतलुज दरिया के किनारे पहुच गये। दरिया हमारे गाव के पास से गुजरता था। दरिया के किनारे हमारी नाव बधी थी। सतलुज पार के खेतो मे जाने के लिए हमने खुद ने नाव खरीद रखी थी। हम सब नाव में सवार होकर दरिया पार हो गये।

हम अभी थोडी ही दूर गये थे कि हमे पीछे से एक घुडसवार भागता हुआ नजर आया। हम सब ने सोचा—गुलाम मुहम्मद आ गया। हमारी

मौत आ गयी । अब हमे वह जिंदा नही जाने देगा । जो आदमी हमें इतने दिन मात नही दे सका । आज अपना सारा बदला ले लेगा ।

बडे भाई ने राय दी कि औरतो को वह दुष्ट भ्रष्ट करे इसस अच्छा है, हम सब खुद ही मर जाए । हमन सामूहिक हत्या का निणय लिया और पास ही पडे एक सूखो लकडियो के ढेर की ओर बढे । परतु घुडसवार हमारे इधन मे आग लगाकर कूदने से पहले ही पहुच गया । उसका घोडा तरते हुए बडी जल्दी दरिया पार कर गया था । वह गुलाम मुहम्मद का बडा भाई चाद मुहम्मद था ।

आते ही वह बोला—तुम यू भूखे-प्यासे गाव छोडकर क्यो जा रहे हो ! दुश्मन तो तुम हमारे इतने दिन ही थे । अगर हम इतने दिन ही आप से बदला नही ले सके तो आपकी बेबसी का नाजायज फायदा अब भी नहीं उठायेंगे । तुम हमारे दोस्त हो । हिन्दुस्तान म जाकर तुम्हे कुछ नही मिलेगा । वहा जाकर दर-दर की ठोकरें खाने से अच्छा है तुम यहीं रहो ।

हम सबने मिलकर राय की कि अब मरे तो पडे ही हैं । चलो इन पर एतबार करके ही देख लें फिर भी हमे डर लगता रहा । चाद पर विश्वास हो सकता था परतु गुलाम पर नहीं ।

चाद हमे गाव से बाहर खेतो मे अपनी ढाणी मे ले गया । चाद की घर-वाली ने हमारे लिए रोटिया बनाइ और खाने के लिए मिन्नतें की लेकिन भय और चिन्ताओ के मारे हमारे पेटो मे गाठें बध गयी थी । हा ! थोडा-बहुत बच्चो ने कुछ खा-पी लिया ।

आधी रात के वक्त गुलाम अपने चार पाच साथियो के साथ आया । हम चिंता के कारण सो नहीं पाये थे । हमारे आगे एक बार फिर मौत नाचने लगी । परतु चाद ने गुलाम को कुछ कहा और वह मुस्कराता हुआ हमारे पास आया । हमारे साथ प्रेम से बातें कीं तथा अपने बडे भाई की तरह हमे धीरज बधाया ।

दूसरे दिन गाव में हम अपने घर गये । घर के अदर झाककर देखा तो पाया कि रात रात म सारा सामान गायब हो चुका है । चाद ने लोगों के घरो से ढूढकर कुछ सामान हमे वापिस दिलवाया । अपने ही घर का गेहू हमें लोगो से खरीदना पडा ।

गुलाम मुहम्मद और चाद मुहम्मद तो हमारे मित्र बन गये थे। लेकिन शेष गाव वालो को हमारा यहा बना रहना रास नही आया। उन्होने हमे चेतावनी दी कि तुम यहा मुसलमान बन कर ही रह सकते हो। इन लोगो मे अधिकतर वे ही लोग थे जो इतने दिन हमारे खूब सज्जन बने हुए थे। इन सबके साथ भाई भाई का रिश्ता था। सारे गाव के युवा मुसलमान हमारे बुजुर्गों को चाचा-ताया कहकर बुलाते थे। हम भी उनके बुजुर्गों को अब्बा या अम्मी कहकर पुकारते थे। बुजुग-बुजुग आपस मे भाई साहब या भाई जान कहकर पुकारते थे। कई मुसलमान तो ऐसे थे जो प्रेम प्रेम मे हमसे कहा करते थे—जहा तुम्हारा पसीना बहेगा वहा हम अपना खून बहा देंगे। लेकिन अब वे कसमे न जाने कहा चली गयी थी।

वे लोग गुलाम मुहम्मद और चाद मुहम्मद के बस म भी न रहे और हम चेतावनी दी कि इस्लाम धम कबूल कर लो, नही तो तुम्हे कत्ल कर दिया जायेगा। उस गाव मे हमारे ही खानदान के दो चार घर थे। और कोई हिन्दुओ का घर नही था। उनकी बातें सुनकर पाकिस्तान मे रहने के प्रति हमारा मोह भग हो गया। अब समस्या थी हिन्दुस्तान पहुचने की। हमने पता लगाया तो पता चला कि हिन्दुमलकोट को एक स्पेशल गाडी सात दिन बाद जायेगी। हमे सात दिन वही काटने पडे।

इस बीच एक शाम को मुसलमानो ने ऐलान किया कि हम गाय का मास बना रहे हैं और वो तुम्हे खाना पडेगा। गाव वालो ने हमारे हिन्दू नाम बदलकर मुसलमानी नाम भी रख दिय थे।

मास और वह भी गाय का, हमारे गले से कैसे उतरता? आखिर हम लोगो ने साहस दिखाया। हम भाई-भाई चार-पाच एक जसे जवान थे। दो मेरे चाचे के बेटे भाई और तीन ताए के बेटे भाई भी जवान थे। पिताजी ने कहा—"लाठिया निकाल लो और मास खाने के लिए बुलाने आने वालो पर टूट पडो!"

वैसा ही किया गया। एक-दो के लटठ लग गये तो सारे भडक उठे। सब मिल हमारे पास आये। पिताजी ने उन्हे समझाया—"कोई धर्म किसी पर लादा नही जा सकता। धम तो दिल से स्वीकारने की चीज है। असली मुसलमान हम तभी बनेंगे जब इसे दिल से स्वीकार लेंगे। मास खाने-न-

खाने से क्या फरक पड़ता है ? अगर हम दिल से इस्लाम न चाहें और डर के मारे मास खा भी लें तो क्या हम मुसलमान हो जायेंगे ?"

"तो चलो हमारे साथ चलकर नमाज पढो ।" उनके एक नेता ने कहा।

'हा ! यह बात हम भी पसद है किसी धर्मग्रथ को पढ़ने मे किसी को क्या एतराज हो सकता है ?" हम उनके साथ नमाज पढने चले गये।

आखिर गाडी चलने का दिन आ गया और हम आधी रात को चुप चाप गाव छोड़कर स्टेशन की तरफ चल पड़े । रास्ते म हमारी सहायता के लिए गाव का एक व्यक्ति इनायत अली भी हमारे साथ हम स्टेशन तक छोडने आया । वह बडे भाई का धर्म भाई था।

गाव घर छोडते वक्त पिताजी ने अली से कहा—"एक सेर सोना है। इसे रख लो । हमसे कोई दूसरा रास्ते मे छीन लेगा । साथ म धन रहेगा तो जान को भी जोखिम रहेगा । तुम तो हमारे अपने हो । तुम्हारे पास साना रह भी गया तो भी दिल को तसल्ली रहेगी।"

नही भाई, नही ! मैं नहीं रखता । तुम्हे सोना ले जाते हुए डर लगता है तो मेरे पास छोड जाओ । जब दो दिन बाद हालत सुधर जायेगी तो मैं तुम्हारे पास पहुचा दूगा । तुम यहा से जाकर कहा रहोगे । यह बता दो ।'

'नही तुम इतनी तकलीफ मत करना ।"

'तकलीफ की इसमे क्या बात है, अगर तुम्हारे कुछ काम ही नहीं आया तो धर्म भाई कसा हू ?"

हार कर हमे जगह बतानी पडी । हमने उससे कहा—' हम तो जाते ही फाजिल्का के पास एक गाव है—रूपाणा । उसमे रहेंगे ।"

हमने अपना ठिकाना बता तो दिया लेकिन मन मे सोचा—कौन आता-जाता है फिर ?

लेकिन उसने पूरे उत्साह से उत्तर दिया—"उसी गाव के पास ही तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की हद बनी है । मैं हद पर आकर किसी से कह दूगा । तुम्हे समाचार मिले तो आ जाना ।'

वही अली ठीक अपने वादे के अनुसार सीमा पर दोनो ओर लगे सेना के पहरे को पार करके भी रूपाणे गांव मे पहुचा और सारा सोना हमारे हवाले कर दिया । तब पिताजी को हमारे मकान के एक कोने में गाडा हुआ

थोडा सा धन और याद आ गया जिसे वे हडबडी मे भूल गये थे। पिताजी ने अली से कहा कि उस धन को कोई और नही खोज पाया होगा। तुम जाकर निकाल लेना।

सुनकर अली ने कहा—"चाचा, अगर धन मिल गया तो तुम्हे यही पहुचा जाऊगा।"

हमने उसकी बहुत मिन्नतें की कि अब की बार तू हमारे लिए इतना जोखिम मत उठाना। लेकिन वह नही माना। शेर की तरह दहाडता हुआ कह गया—अगर मुझे धन मिल गया तो पहुचा कर ही जाऊगा।

वही अली दस दिन बाद उक्त धन हमे पहुचाने के लिए हमारे पास आ रहा था। रास्ते मे किसी ने धन क लालच मे उसकी हत्या कर दी। यह बात पद्रह दिन बाद हमे अली के बडे भाई के खत से मालूम हुई।

मृत्यु-भय

अबकी बार वह अपने राजस्थान मे रह रहे भाई के पास आना बिल्कुल ही नही चाहता था। उसके मन मे यह भय बडे जोरो से समा गया था कि वह वहा से बचकर नही आ सकेगा। उसे वहा कोई साप काट लेगा और उसकी मृत्यु वही हो जाएगी।

पहले भी वह राजस्थान मे अपने भाई के पास कई बार गया था। लेकिन सापो के भय ने कभी इतना नही डराया था। अब की बार जब उसका भाई उन्हे मिलने आया था तो उसने ही उन्हें वहा के सापो की भय करता बताई थी। उसने कहा था कि अबकी साल साप कुछ ज्यादा ही हो गए हैं। उसके भाई के साथ खेत मे काम करते मोधू चमार को साप ने काट लिया था और उसकी मृत्यु हो गयी थी।

उसका भाई भी सापो के डर से परेशान था लेकिन उसे तो सापो के देवता 'केसरा जी' पर पूरा विश्वास था। वह सुबह शाम 'केसरा जी' के थान के आगे धूप जलाकर पूजा करता उसके घर केसरा जी के 'थान' पर ऊचे से लटठ के सहारे आधी भगवी और आधी धोली ध्वजा लहराती रहती थी। घर 'देवरे' के समान दिखाई पडता था। उसका भाई हर वक्त ही केसरा जी का स्मरण करता रहता था। उसे विश्वास था कि केसरा जी सापों को उसके पास नही फटकने देंगे।

लेकिन उसे तो झाड-फूक और देवी-देवताओं पर विश्वास नहीं था। उसें तो प्रति-सर्पविष (एंटीवेनोम) दवाइयो पर ही विश्वास था जो कि बडे-बडे अस्पतालो मे ही उपलब्ध थी। ऐसा अस्पताल गगानगर मे वहा से डेढ सौ मील दूर था।

एक बात अबकी बार और भी हुई थी जिसने उसे ज्यादा डरा दिया था और वह यह कि कुछ ही दिन पहले विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक में, एक जगह सापो के अध्याय मे उसने पढा था कि अपने देश मे प्रतिदिन सौ मनुष्यो की मृत्यु सापो के काट लेने से हो जाती है।

उसके मन म बार-बार यह प्रश्न कौंध जाता था—तुम वहा जाकर क्यो मौत खरीद रहे हो ? परन्तु उसका जाना जरूरी हो गया था। उसके भाई का विशेष आग्रह था। उसके नि सन्तान चाचा चाची भी वही रहते थे। उनसे मिलकर आना था। चाची ने कई बार उल्हान दिये थे कि तुम तो आते ही नही। उसके मा-बाप भी यही चाहते थे कि वह जाए और सारे समाचार-बाडी लाए। उसके भाई के गाव मे डाक-व्यवस्था न होने के कारण सिर्फ आने-जाने से ही एक-दूसरे का पता चल सकता था। अब भला वह घरवालो को कैसे कहता कि मैं तो सापो के डर के मारे नही जाता ?

आखिरकार उसने मन-ही-मन मे गाव घर और पीहर गई पत्नी को अन्तिम अलविदा कही और चल दिया। रास्ते मे टीलो की रेत उड उडकर सडक के ऊपर तक चढ आई थी। जगह-जगह कई मजदूर उसे हटाने मे लगे थे। फिर भी कई बार उसकी बस रेत मे फसती फसती बची। एक जगह एक बस और एक ट्रक क्रास करते समय रेत मे धस गए थे और रात भर मे उस सडक का ट्रैफिक जाम था। उन दोनो के पीछे वाहनो की लम्बी लाईनें लगी थी। यह तो अच्छा हुआ कि उन्हे ज्यादा देर इन्तजार नही करना पडा। रास्ता शीघ्र ही साफ हो गया। कोई भी वाहन अपना एक टायर सडक से थोडा सा नीचे उतारता था तब तक बचाव रहता था लेकिन थोडा सा ही ज्यादा हटते फस जाता था। इसलिए उनके ड्राइवर की कई ट्रक वालो के साथ तकरार हुई। ट्रको वाले ड्राइवर साईड न देकर इजन ब ~ क ने अडकर खडे हो जाते थे।

उसने सोचा—मान लो उसे साप काट लेता है। वह और उसका भाई इलाज करवाने गगानगर आते हैं और रास्ते मे उनका वाहन यू ही रेत मे रुक जाता है। फिर तो उसे अस्पताल मे भी नही पहुचाया जा सकेगा।

वह तीन बजे रावतसर पहुचा। वहा बस काफी देर रुकी। वही कई

ग्रामीण लोग बस म चढे। मले पुराने कपडे। शरीर मास विहीन लम्बा चौडा चाखटा। पिचके हुए गाल और गले की हड्डी का 'मीणिया एक इच बाहर निकला हुआ। यही लकडबग्गे से लोग उसके भाई के गाव के आसपास के लोग थे। रावतसर तक तो नहरें हैं। जगतप्रसिद्ध राजस्थान कैनाल रावतसर के पास से गुजरती है। आधी से ज्यादा भूमि की सिंचाई होती है। लेकिन आगे उसके भाई के गाव की तरफ धोरे हैं। ऊचे ऊचे पहाडो जैसे धोरे। इन धोरो पर खेती करने वालो का भविष्य सिर्फ वर्षा पर ही निभर करता है। अधिकतर अकाल पडता है।

रावतसर से आगे धोरे जितने-ऊचे थे, सडक पर रेत उतनी ही कम थी। धोरो की मोटी रेत उडती कम है। अब की बार वहा खेती-पाती ठीक थी। डेहरिया ग्वार, बाजरे मूग मोठ और तिल की फसला से भरी थी। धोरियों की ढलाना पर मतीरे और ककडियो की लम्बी लम्बी बेलें फैली थी। उनसे बडे-बडे मतीरे और लम्बी लम्बी ककडिया लगी थी। खाली भूमि पर लम्बी-लम्बी घास थी। वहा पशुआ के झुड चर रहे थे। झाडिया छोटे छोटे लाल-लाल बेरा से लदी थी। दूर-नजदीक के ऊचे-नीचे धोरो पर हरी भरी फोग उगी थी और हरियाली के इस आवरण के कारण वे पहाडियो के समान दिखाई पड रह थे। लेकिन यह धोरे और हरे भरे खेत अबकी बार उसे जरा भी नहीं भा रहे थे। उस लग रहा था कि इसे ही किसी खेत मे उसकी मौत बैठी है।

उसके भाई का गाव गगानगर से सरदारशहर राजमाग पर पडत पल्लू अड्डे से पश्चिम की ओर दो कोस दूर था। बस एक एक लहरी को पार करती जा रही थी। बस कभी नीचे जाती थी कभी ऊपर। लगभग पाच-पाच मील बाद एक स्टापेज आता था। इक्का-दुक्का ही सवारिया चढती उतरती थीं। कमतासी की ऋतु म सब गाव वाले खेता म काम पर जुटे थे। कोई दो-चार ही शहर या इधर-उधर जाते थे। रास्ते म वह गाव भी आया जहा केसरा जी' का मेला लगता था। कई देहातियो न केसरा जी के थान की तरफ हाथ जोडे—जय हो केसरा जी महाराज की जय हो। उसके मन में यह भी आया कि हो सकता है चाचा जी तथा भाई साप काट लेने की अवस्था मे उसे भी इसी जगह जिद करके ले आए।

वह पल्लू अड्डे पर बस से उतर गया। अड्डे पर दो झोपडियो मे दो ढाबे थ। उसने एक मे चाय पी और जूठा कप स्वय ही धो दिया। ऐसी इधर परिपाटी थी। चाय पीने के बाद उसे शौच फिरने की तलब हुई। पास ही एक बाजरे का खेत था। वह पानी की एक बोतल भर कर बाजरे के खेत मे उतर गया। बाजरे के खेत मे घुसते हुए वह बडा चौकन्ना था कि कही कोई साप न हो।

ढाबे वालो मे उसने अड्डे पर बसो के टाइम भी पूछ लिये ताकि साप काट लेने की अवस्था मे गगानगर जाया जा सके। फिर भी मन ही मन म डर रहा था कि अगर शाम के समय किसी साप ने काट लिया तो मुश्किल होगी।

वह अकेला ही गाव की ओर चल पडा। रास्ता कुछ परिचित था। रास्ता क्या था बस एक पगडडी थी। आगे चलकर पगडडी काफी चौडी हो गयी और उसका इधर-उधर भटक जाने का भय जाता रहा। पगडडी के दोनो तरफ फोग और झाडिया थी। कही-कही बाड भी आ जाती थी। दोनो ओर चूहो के बिल और घास भी खूब थी। उसे रह रहकर डर लग रहा था कि कही इनमे से कोई साप न निकल आए? रास्ते मे कई डह-रिया आइ कई घोर आए और कई खेत आए। उसे थोडी सी प्यास महसूस हुई। वह एक खेत म उतर गया और एक मतीरा तोड लाया। मतीरे से उसकी प्यास बुझ गयी।

आखिरकार एक टिब्बे पर चढते ही उसे गाव नजर आ गया। गाव के बाहर चारो ओर पानी के कई कुण्ड थे। घाघरा और चुनरी ओढे औरतें उनमे से पानी भर रही थी। गाव का कुआ नही चल रहा था। जितने दिन तालाब मे वर्षा का पानी रहता है, कुआ नही चलता। ज्योही तालाब का पानी खत्म होता है कुआ चलने लगता है।

जब वह गाव म पहुचा तो शाम का धुधलका फैल रहा था। तालाब पर भेड-बकरियो के रेवड और गायो भैंसो के झुण्ड पानी पीने आ रहे थे। इक्का-दुक्का ऊट भी उनके साथ थे। उन सब के पावो से आकाश मे धूल उड रही थी। उनके गले मे पडी घटियो की आवाज बडी ऊची थी। गाव के अधिकतर घरो की चारदीवारी बाड से की गई थी। उसे लगा कि यह

बाड तो सापो का घर है। उनके अपने घर के चारो ओर भी बाड थी। उसे लगा कि यहा तो घर के भीतर भी हो सकते हैं।

भाई, भाई के बच्चे और चाचा चाची उसे देखकर बहुत खुश हुए। परन्तु वह खुश नही था। उसके मन मे तो यही बात आ रही थी इन लोगों का यहा रहना ही उसकी मृत्यु का कारण बनेगा।

थोडी देर बाद उसने भाई से पूछा—यहा कोई डाक्टर अभी आया या नही ?

कभी-कभार एक आता तो है, लेकिन है वह नीम हकीम ही।

थोडी देर मे बच्चे आपस मे बतियाने लगे कि मा के आगे आज फिर एक साप आ गया था। लेकिन-बच्चो के सिवाय अन्य किसी ने भी इस घटना की कोई चर्चा नही की। पता नही या तो उन्होने सापो को नियति के रूप मे स्वीकार कर लिया था या वे 'केसरा जी' की वजह से बेफिक्र थे। वैसे 'केसरा जी' के भरोसे बेफिकर होने वाली बात तो नहीं थी। क्योकि आए साल ही उनकी आखो के आगे ही 'केसरा जी' के थान पर ले जाने के बावजूद भी सपदश वाले एक-दो व्यक्ति तो मर ही जाते थे। वह डर रहा था और डर के अन्दर एक कल्पना उपजी —उसे साप ने काट लिया है। भाई से उसने पाव को कटे हुए स्थान के ऊपर से बधवा लिया है। दाती से घाव को छीलकर बहुत सारा रक्त निकाल दिया है। घाव साफ किया है। फिर भी खून बह रहा है। अच्छा है खून के साथ-साथ जहर भी निकल जायगा। वह भाई को गाव के डाक्टर से लाल दवाई लाने के लिए भेजता है। परन्तु मन म डरता है—पता नही डाक्टर के पास लाल दवाई मिलेगी या नही। फिर किसी ट्रक पर गगानगर जाने की कल्पना। अस्पताल की कल्पना। कल्पना ही कल्पना। जीवन की कल्पना। मृत्यु की कल्पना।

दूसरे दिन सुबह जब वह शौच फिरने गया तब भी उसे सप भय पूरी तरह सता रहा था। थोडा-सा दिन चढ वह ऊट पर चढकर भाई के साथ खेत गया। खेत मे मोठो के पौधो का जाल बिछा हुआ था। चाचा, भाई और भाभी मोठ उखाडने लगे। वह भी लगा परन्तु शीघ्र ही उसके मन मे आया कि न जाने किस मोठ के नीचे साप बैठा हो, वैसे थकावट तो थी ही।

साप के भय ने और भी थका दिया। वह बैठ गया और एक मतीरा तोड़-कर खाने लगा।

बूढे चाचाजी टसक-टसक कर मोठ उखाड रहे थे। यू लगता था मानो उन्हें एक मोठ का पौधा उखाडने मे अपने बल से दुगुना बल लगाना पड रहा हो। फिर भी वे उखाड रहे थे। उसे अपने आप पर शर्म आने लगी। अरे तू जवान होकर भी बैठा है, वह डरता-डरता खडा हुआ और सम्भल सम्भल कर मोठ उखाडने लगा। भाई काम को देखकर घबराया हुआ था। अबकी बार फसल अच्छी थी और मजदूर नही मिल रहे थे। भूमि की अधिकता के कारण भूमिहीन लोग बहुत कम थे। लगभग सभी लोगो के पास भूमि थी। मजूरी पर काम वही गरीब लोग करते थे जिन्होंने अपना काम पहले सम्भाल लिया था। मोठ उखाडने से उसके हाथो में पीड होने लगी थी। इसलिए भाई ने उसे मतीरे-काकडिये इकट्ठे करने का काम सौंप दिया। वह मतीरे-काकडिये ढूढने के लिए खेत मे निकल पडा। खेत की सीं' वाले टिब्बे पर जाने पर उसे पडोसी श्योलाल दिखाई पड गया। वह घास इकट्ठा कर रहा था। उसे देखकर श्योलाल बोला—अरे! ये कौन है?

मैं हू मिया।

श्योलाल उसका परिचित था। श्योलाल उस वक्त ढाणी मे ही रहता था। वह हाल चाल पूछने उसके पास चला गया। बातचीत हुई। अभी वे बातें कर ही रहे थे कि श्योलाल की बच्ची ने शोर मचाया—साप! साप! श्योलाल जई लिये उधर दौडा। वह भी। लेकिन उनके वहा पहुचने तक साप घास म छुप चुका था। उसने उसे घास मे आग लगा देने की सलाह दी, लेकिन श्योलाल एक साप के पीछे घास बर्बाद करने को तयार नही था। उसने घास को उठा-उठाकर अलग रखना शुरू किया। उसने कहा—श्योलाल घास को मत छेडो। क्रुद्ध हुआ साप तुम्हें डस लेगा।

यू सापो से डरें तो हमारी पार कैसे पडे।

उसने सारा घास छान मारा लेकिन साप कही भी दिखाई नहीं दिया। आखिर मे कहा—चलो गया कही। केसरा जी' महाराज फिर कभी उसे दिखायी नहीं देने देंगे।

वह वापस अपने खेत म आ गया । भाई तथा चाचा को श्योलाल के खेत वाले साप की घटना बतायी लेकिन उन्होंने उसकी कोई विशेष चर्चा नहीं की । एक बार दोनो ने केसरा जी' को याद कर लिया ।

उस रात वह रह-रहकर श्योलाल के बारे मे सोचता रहा—जिस खत म श्योलाल ने साप देखा है । उसी खेत मे श्योलाल को नीद कसे आयेगी ?

वह रोज भाई के साथ खेत जाता था । सुबह जब खेत जाता था तो सोचता कि आज शाम को वह बचकर घर नही आयेगा । परन्तु शाम हो जाती । उसे कोई साप न काटता । इस प्रकार उसकी मत्यु एक दिन आगे सरक जाती । वह खेत म पाव बडे सम्भल-सम्भल कर रखता था । वह अपनी तरफ स बडा चोकन्ना रहता था । खेत मे भाई के पास काम बहुत था । वह सुबह और दोपहर अम्मल खाता था ताकि थकावट न हो, काम अधिक हो । दिल से तो वह भी चाहता था कि खूब काम करू लेकिन सापो का भय उसे खुलकर काम करने ही नही देता था । इसी भय के कारण ही तो उसन घर वालो को तीन छटिटया कम बतायी थी । काम की अधिकता देखकर एक-दो बार भीतर ही भीतर उसने चाहा था कि सब सच सच बता दू और तीन दिन थोडा बहुत काम करवा जाऊ लेकिन सापो के भय ने उसे ऐसा नही करने दिया ।

सातवें दिन जब वह खेत से घर आया तो भी उसे विश्वास नही हुआ कि अब वह बच जायेगा । उसे अभी बस के अडड तक का रास्ता पदल ही तय करना था । रास्ते म भी साप के काट लेने की पूरी सम्भावना थी। काम की अधिकता के कारण भाई उसे ऊट पर अडडे तक छोड आने म असमथ था ।

रात को वह भाई भाभी और चाचा चाची से देर तक बातें करता रहा । इधर उधर की प्रेम भरी छोटी-छोटी बातें । उसे उनके सान्निध्य मे बहुत सुख मिल रहा था । उसन तब भी एक बार सोचा कि अभी तीन दिन और रह जाऊ ।

लाल-लाल गिरी वाले मीठे मतीरे खटटे मीठे स्वाद वाली काकडिया फोफलियो-खलरियो का साग और घी से चुपडी बाजरे की रोटिया उसका मन मोह रही थीं । उसकी चारपाई के नीचे बडे-बडे मतीरे रखे हुए थ ।

उसके वहा रहने से उसके भाई का मन भी प्रसन्न था। एक-दो दिन पहले उसके भाई ने कहा था कि तुम्हारे यहां आने और रहने से मेरा दिल काफी खिला था। चाची भी इसी टोन मे कह रही थी—क्या खाक ठहरे हो ? सिर्फ दो दिन। उसे सात दिन भी दो दिन के बराबर लग रहे थे।

लेकिन सापो का भय सारी कोमल भावनाओ को दबा रहा था। उसने विचार किया—मैंने कितनी मुश्किलो से सात दिन काटे हैं ? तीन दिन और बढ़ा कर क्यो खामखा मुसीबत मोल ले रहा हू ? अगले दिन वहा से चले जाने का पक्का निर्णय लेकर वह सो गया।

लेकिन सुबह जब वह उठा तो उसका हृदय पूर्ण बदला हुआ था। शौच फिरते हुए उसने सोचा—जब श्योलाल उस खेत मे रात दिन काम कर सकता है जिसमे उसने साप आखो से देखा है और उसकी भाभी भी, तो वह क्यो नही कर सकता ? इस धरती पर जहा इतने साप हैं, वहा उनके दुश्मन नेवले भी तो हैं।

साप स्वय भी तो आदमी से डरता है। वह तो आदमी को तभी काटता है जब वह दब जाता है। आदमी का आभास पाते ही तो वह भागता है। सामने तो तभी होता है जब वह भाग नही सकता।

सुबह-सुबह की ताजी हवा ने न जाने उसे कैसी स्फूर्ति दी कि उसने अपने घर वालों को आश्चर्यजनक निर्णय सुनाया—अभी मैं तीन दिन और ठहरूगा और काम कराऊगा।

तुम तो कह रहे थे म छुट्टिया इतनी ही हैं ?

वह तो मैं जल्दी जाने के लिए बहाना बना रहा था।

वह तीन दिन तक खेत म अपने भाई के बराबर काम करता रहा। थकावट ने भी उतना नहीं सताया। अध्यापक हो गया तो क्या ? था तो वह एक किसान का ही बेटा।

वह खुश था कि उसने सापों का भय निकाल फेंका। दस-बीस वर्ष बाद उसे भी तो खेती करनी थी। यही इन्ही खेतो मे क्योकि पजाब मे उनकी जमीन बहुत थोडी थी। भाइयो मे बाट लेने के कारण उन्हें वहां बहुत थोडी-थोडी भूमि हिस्से मे आती थी।

छलित

वह अगस्त मास की धूप मे पसीने से नहाता साइकिल पर उनके घर पहुचा था। वह उनके पडोसी की लडकी का घर वाला था। उसकी अप्रोच हर दफ्तर म है। उसने बहुत लोगो से सुन रखा था। उसने स्वय ने भी उसे एक दो बार क्षेत्र के एम० एल० ए० के साथ कार मे बैठे देखा था। एक दो बार उसे बाहर से आए मन्त्रियो का स्वागत करते भी देखा था।

अबकी बार जब उसका लडका अपने ननिहाल आया था तो उससे मिला था। उसने जितनी आत्मीयता दिखाई थी उतनी आत्मीयता तो सगे भानजे भी क्या खाक दिखाएग? वह बोला—बडे दु ख की बात है मामाजी, पिताजी के होते आप बेकार बैठे हो। अबकी बार कही कोई वेकेंसी निकले तो आना। आपको अगर न लगा सके तो मैं पिताजी से यह घंधा ही छुडवा दूगा।

वह ज्योही साइकिल से उतरा उसी भानजे ने उसकी साइकिल ठीक उसी प्रकार पकड ली जैसे अफसर की साइकिल चपरासी पकड लेता है। उससे छोटे ने उसे आगन मे बिठाया।

इतने मे बाहर से लडको की मा उर्फ उनके पडोसी की लडकी आ गई। उसने खडे होकर 'राम राम' कही।

वह खुश होते हुए बोली—आज तो पता नही सूरज किस दिशा मे चढ़ा है?

फिर लडको से बोली—अपने मामा को कुछ ठडा पिलाया या नहीं? गर्मी में कितनी दूर से चलकर आया है।

थोडी ही देर मे छोटा लडका बर्फ ले आया। वह शीशे के जग में

खुशबूदार शबत भर लाई। जब उसने दो-तीन शबत के गिलास पी लिये और एक खुशबूदार डकार ले ली तो उसे बडी तृप्ति मिली। वह मन-ही-मन कहने लगा—इतना प्रेम तो सगी बहनें भी नही करती। उसे उस पर सभी बहनो से अधिक प्रेम आने लगा।

इतने मे ही वह बोल पडी—मेरे लिए तो जैसा जोगिन्द्र सगा भाई है, वसा तू है। भला तेरे लिए वो कुछ न करेंगे तो किसके लिए करेंगे। दुनिया के तो हजारो काम करवाते फिरते हैं। हमे तो कभी-कभी उनका दिनो तक मुह देखन को भी नही मिलता। हमारे इस डाक्टर का तबादला इन्होंने अभी-अभी कैंसल करवाया है। यहा लाखो की ऊपरी कमाई है। हमारे स्कूल का हैडमास्टर यहा बडा तग था बेचारा', रोज घर आकर गिडगिडाता था। इन्होंने उसको भी उसके गाव मे ही ट्रासफर करवा दिया है। मास्टर और पटवारियो के ट्रासफर करवा देना और नौकरियो पर लगवा देना तो इनके बाए हाथ का खेल है। इस साल इन्होंने दो लडको को थानेदार लगवा दिया है।

इतने मे ही उसका घरवाला आ गया। 'नमस्ते वर्मा जी', उसने खडे होकर नमस्ते की।

वर्मा जी ने मुस्कराते हुए उससे हाथ मिलाया और पास ही कुर्सी पर बैठ गए। लडको ने अपने पिता को भी शरबत पिलाया। वर्माजी ने अकेले न पीकर एक गिलास उसके लिए फिर से भरवा दिया।

उसने मना किया परन्तु वर्माजी बोले—"यार, क्या मैं अकेला पीता अच्छा लगूगा। आज तो हम पहली बार इकट्ठे बैठे रहे हैं।"

शरबत पी चुके तो थोडी देर चुप्पी छा गई, इस चुप्पी को वर्माजी ने तोडा—'कसे दर्शन दिए आज ?"

"अपने जिले का डी० ई० ओ० कुछ अध्यापक अस्थाई तौर पर नियुक्त कर रहा है। साथियो के पास तो इन्टरव्यू काड आ गया है, मेरे पास नहीं आया। क्योंकि मैंने रोजगार दफ्तर मे रजिस्ट्रेशन कुछ लेट करवाया था।'

वह कुछ और भी कहता लेकिन वर्माजी बीच मे ही बोल पडे—"फिर क्या हुआ। इन्टरव्यू कार्ड भी निकल जाएगा और डी० ई० ओ० से सलेक्शन भी करवा दूगा। डी० ई० ओ० तो अपने घर का आदमी है। उसका काम

रोजगार दफ्तर वालो से भी पड़ता रहता है। उसी से हम काड भी निकलवा लेंगे।"

वह आकंठ गद्‌गद हो गया। फिर तो बहुत अच्छा। देखो, मैं अब बेकारी से बहुत तग आ गया हू। और घर वाले मुझसे तग आ गये हैं।"

' भाई, बेकारी से तुम क्या, सभी तग आ जाते हैं। यह साली चीज ही ऐसी है। परन्तु देखो जिले मे आने-जाने मे दफ्तरो के चक्कर लगाने में कुछ खर्च तो आपको उठाना ही पडेगा, किसी बाबू को कुछ देना भी पड सकता है।"

' कितने मे काम चल जाएगा ? '

' कम-से-कम सौ तो दे ही जाओ। बाकी फिर देखा जाएगा। हमें तो कुछ खाना नहीं अपने तो भगवान की दया है। दो लडके हैं। छोटा-सा परिवार है। वैद्यगीरी करता हू। परन्तु कोई करने ही नही देता। मरीज शिकायत करते हैं।'

सौ का नाम सुनकर एक बार तो उसका सास सूख गया। क्योंकि उसे पता था घर वाले इतनी रकम उसे आसानी से नही देंगे—परन्तु उसने मन-ही मन मे सोचा—यह अवसर हाथ से नही जाना चाहिए। अगर नौकरी लग गयी तो आए मास छ सौ मिलेंगे। फिर तो सारे अभाव भर जाएगे। उसने निश्चय किया कि अगर घरवाले पसे नही देंगे तो मैं छात्रवृत्ति के पैसों से खरीदी घड़ी ही बेच दूगा और पसे जुटा लूगा।

अच्छा तो मैं कल दोपहर को पसे दे जाऊगा।"

अपना निणय सुनाता हुआ वह उठ खडा हुआ।

वह उनके ऋण से बहुत दब गया था। उसने सोचा—हल्का महसूस करने के लिए कुछ-न-कुछ तो किया ही जाना चाहिए। उसने अपनी जेब स दो रुपए निकाले और उस लडकी को पकडाने लगा।

उसन कुछ देर न न न', करने के पश्चात पैसे ले लिए। परन्तु उसे फिर भी लगता रहा कि अभी तक तो उसने शरबत की कीमत भी नही चुकाई है।

वह सारे रास्ते उनके व्यवहार और स्वभाव की मन ही-मन प्रशसा करता रहा।

तीसरे दिन उसके पास धर्माजी का बुलावा आया। वह बड़े उत्साह से गया। धर्माजी देखते ही मुस्कराये और चहक कर बोले—तुम्हारे तो भाग्य ही अच्छे हैं। सारा काम हल हो गया। मैं डी० ई० ओ० को सुबह-सुबह घर पर ही मिला था। कहने लगा, 'आपके उम्मीदवार को जरूर नियुक्त कर दूंगा।' मेरा नाम लेकर रोजगार दफ्तर में क्लर्क रामलाल से मिल लेना। वह आपका कार्ड भी निकाल देगा।

मैं फिर उस क्लर्क से मिला तो वह भी अपनी जान-पहचान का निकल आया। कहने लगा—परसों उम्मीदवार को भेज देना मैं उसे इन्टरव्यू कार्ड दे दूंगा। अब तुम कल ही जिले में पहुंच जाओ और अपना कार्ड उस क्लर्क से मेरा नाम लेकर ले लो। मैं परसों सुबह ही आऊंगा और इन्टरव्यू के बाद डी० ई० ओ० को कह दूंगा। तुम्हारी नियुक्ति अवश्य हो जाएगी।

घर आकर जब ये सारी बातें उसने घरवालों को बताई तो उन्हें भी काफी उम्मीद हो गई। मां पड़ोस में जाकर पचास रुपए उधार मांग लाई। बेटा जिले में जायगा। बीसों रुपये किराये में लग जाएंगे। फिर खाना-पीना अलग, बचेंगे तो वापस ले आयेगा। परदेश में दस पन्द्रह रुपये ज्यादा ही ठीक रहते हैं।

दोपहर ग्यारह बजे वह रोजगार दफ्तर पर पहुंचा, अंग्रेजी में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था 'एम्पलायमेन्ट एक्सचेंज'। बाहर की ओर खुलने वाले सब दरवाजे बन्द थे। प्रवेश के लिए एक रास्ता था। एक-दो लोग आ-जा रहे थे। जाने वाले लोग बिना झिझक चिक को एक तरफ हटाकर अन्दर घुस जाते थे। परन्तु उसका साहस न पड़ा। वह चक्कर लगाकर वापिस मुड़ आया—खाली और बेहद घबराया हुआ। उसने गेट पर चपरासी को खोजा परन्तु वह तो बाहर से चाय ला रहा था। उसने उसे रोक कर बुलाना चाहा परन्तु वह उस पर बिना ध्यान दिए अन्दर चला गया। उसकी घबराहट बेहद बढ़ गई, एक बजे दफ्तर बन्द हो जायेगा और उसका काम नहीं हो सकेगा।

वह हांफता-सा होटल पर गया। होटल का बुड्ढा उसे काफी दयावान लगा। उसने सोचा—इसकी मारफत ही इस दुर्ग में प्रवेश पाया जाए। उसने एक कप चाय पी और पैसे देते समय गिड़गिड़ा कर कहा

लगा—"मुझे रामलाल क्लर्क से मिलना है।"

"अभी दो मिनट बैठो चपरासी आता है, जब आयेगा तुम्हें साथ भेज दूंगा।"

होटलवाले ने बकाया नहीं दिया और न ही उसने मांगा चुपचाप दोनों के मध्य समझौता हो गया।

थोड़ी देर बाद वह रामलाल क्लर्क के कमरे में खड़ा था। क्लर्क ने फाइल से नजर उठाए बिना ही पूछा—"कहिये।"

"आपसे सुखदेव एम० एल० ए० के आदमी वर्माजी मिले होंगे।"

"मिले होंगे। याद नहीं।"

उसकी सांस सूखने लगी। गले को तर करने के लिए थोड़ी-सी थूक निगली—'मुझे इन्टरव्यू कार्ड निकलवाना है।'

"साब से मिलिए।'

वह साहब के कमरे के सामने ले गया। दरवाजे पर चिक लगी थी। ऊपर सफेद-सफेद अक्षरों में लिखा था, 'एम्पलायमेंट आफीसर'।

उसने चिक हटाकर देखा—अन्दर साहब के साथ दो आदमी बातें कर रहे थे। वह प्रतीक्षा करता रहा। जब वे दो आदमी चले गए तो एक क्लर्क आ गया। वह साहब के अकेले होने की प्रतीक्षा करता रहा। उसनेमन-ही मन निश्चय किया कि वह साहब की दराज में बीस रुपये ठूस देगा और गिड़गिड़ाते हुए उसके पांव पकड़ लेगा। साफ-साफ कह देगा—साहब, मैं बहुत गरीब आदमी हूं। अबकी बार मैं नौकरी पर न लगा तो मर जाऊंगा।

परन्तु साहब अकेला न हुआ। उसके पास कोई न-कोई आता ही रहा। अन्त में दफ्तर का समय समाप्त हो गया। साहब खड़े होकर बाहर आ गए और पैदल ही अपने घर की ओर चल दिए। वह भी उसके पीछे चल दिया। उसे यह अवसर अनुकूल लगा। वह थोड़ी दूरी से साहब का पीछा करता रहा। काफी दूर आगे निकल जाने पर वह उसके बराबर हो गया और ज्योंही साहब ने उसकी ओर देखा उसने कहा—'जी, मुझे कार्ड निकलवाना है।'

मा कुत्ते। तुझे शरम नहीं आती दफ्तर से मेरा पीछा कर रहा है। ।।मुझे तू अन्दर करवाएगा।'

वह दुतकारे हुए कुत्ते की तरह दूर हो गया। उसे बहुत दुःख हुआ। समझदार होने के बाद मा की गाली आज उसने पहली बार खाई थी। उसे लगा वह व्यर्थ ही इतने दिन अपने को एक पढ़ा लिखा और विशिष्ट आदमी समझता रहा है। वह अपने ही अन्दर बेहद छोटा हो गया।

उसने सोचा—मामला खटाई मे तो पड ही गया। इस साहब को तो मजा चखा दू और इसी उद्देश्य से वह साहब के पीछे बढा भी परन्तु वही एक थाना दिखाई पड गया। गेट पर एक बन्दूकधारी कद्दावर जवान खडा था। कई सिपाही हाथो मे डडे लिये सडक पर निकल आये और इधर-उधर बिखर गए। उन्हे देखकर उसका उत्साह ठडा पड गया। "नौकरी न मिली तो न मिली यहा अन्दर और होना पडेगा।"

वह पराजित होकर फिर दफ्तर पर आ गया। वहा चपरासी ने बताया कि बडा साहब कल छुट्टी पर रहेगा। उनकी जगह गिल साहब बैठेंगे। जितने अध्यापको के कार्ड निकले हैं या निकाले जायेंगे उसकी लिस्ट कल दोपहर को डी० ई० ओ० के दफ्तर मे जायगी। कल दस बजे से पहले-पहले तुम अपना कार्ड निकलवा लो।

सुनकर उसकी जान मे-जान आई। सबसे बडी खुशी तो यही थी कि कल बडा साहब इस दफ्तर मे नही आएगा। दूसरी यह कि कल तक वर्मा भी आ जायेगा। परन्तु उसे केवल वर्मा के भरोसे ही नही रहना चाहिए, अपने आप भी यत्न करना चाहिए। कौन जाने वर्मा आए या न आए?

जिले मे आते समय एक फौजी दोस्त ने उसे बताया था कि मेरा एक दोस्त सन्तोषसिंह पजाब होमगार्ड्स बटालियन फाईव मे मोटर मकेनिक है। उसकी कई दफ्तरो के बाबुओ के साथ उठ-बैठ है। कोई काम पड जाये तो मेरा नाम लेकर उसके पास चले जाना।

वह होमगार्ड्स मे पहुचा। खाकी वर्दी पहने जवान बन्दूको की नालें साफ कर रहे थे। सन्तोषसिंह का पता करने पर उसे जवाब मिला कि वह बाहर गया है। थोडी देर मे आ जाएगा। होमगार्ड्स वाले काफी प्रेमी निकले। उसे ठडा पानी पिलाया और पखे के नीचे बिठाया। नाम-काम भी पूछा।

सन्तोषसिंह चार बजे आया। वह दाढी मूछो वाला लम्बा चौडा जवान

था। उसे देखकर एक बार तो उसके दिल म दहशत-सी पैदा हो गयी। परन्तु थोडी बात चीत करने पर और चाय पीने पर उसका जी कुछ जम गया।

सन्तोषसिंह ने उसे बताया कि उस दफ्तर म उसकी तो कोई जान-पहचान नही पर एक और आदमी को तुम्हारे साथ भेजता हू। वह किसी को कुछ दिलवाकर तुम्हारा काम करवा देगा।

दिलवाकर कुछ करवा देने' वाली बात स एक बार तो वह चौका लेकिन अब भलकर जाना भी कठिन हो गया था। इसलिए वह चुपचाप उस आदमी के साथ हो लिया।

जब वे दफ्तर पहुचे पाच बज चुके थे। दो-तीन बाबू अपने-अपने विभागो मे काम कर रहे थे। उसका साथी अन्दर गया और एक चपरासी जैसा दिखाई देने वाले आदमी को अपने साथ ले आया। उसने उससे कहा कि इसको कुछ दे दो। यह तुम्हारा काम करवा देगा।

उसने जेब मे दस रुपए निकाले तो वह कहने लगा—दस रुपए तो चपरासी भी नही लेते बोतल के भी पन्द्रह लगते हैं।

उसे न चाहते हुए भी बीस रुपए देने पडे। सोचा—न दिए तो यह और गालिया देगा। कहेगा—पैसे जी से नही उतरते तो हमे क्यो परेशान करते हो।

उसकी जेब लगभग खाली हो चुकी थी। उसने भूखे प्यासे धर्मशाला मे रात बिताई। सारी रात मच्छर खाते रहे और पास के गन्दे नाले की बदबू आती रही।

सुबह जब वह दफ्तर पहुचा तो वहा वर्मा भी मिल गया। उसने सारी घटनाए उसस कह दी। वर्मा उस आदमी के पास गया जिसको उसने बीस रुपए दिये थे। वापिस आकर उससे कहने लगा—वह क्या खाक काड निकलवायेगा? उसको कौन पूछता है?

उसे लगा वर्मा भी अपनी ही धाक जमायेगा। आखिर वह उसके पीछे हो लिया और रात को दिए गए पैसो के लिए पछतावा करने लगा।

वर्मा ने रामलाल क्लर्क को चाय मिठाई खिलाई तो उसने बताया कि गिल बडा अच्छा आदमी है वह आपकी बात अवश्य मान लेगा। वर्मा

और बाबू के कहने पर वह गिल साहब के पास गया। उसने अपने रजिस्ट्रेशन नम्बर की स्लिप गिल को दी और कहा— 'साहब मेरा भी इंटरव्यू कार्ड निकाल दो।"

'कार्ड तो हम सभी के निकाल रहे हैं", गिल ने स्लिप ले ली और कह दिया—आपका नाम लिस्ट में चला जाएगा।

बाहर आने पर वह अपने आपको कुछ हल्का महसूस करने लगा। वर्मा ने उसकी पीठ थपथपाई और कहा—' बस अब तो काम बन ही जाएगा।"

वर्मा बाद में उसे एफ० सी० आई० के दफ्तर में ले गया। दोपहर का समय था। वर्मा अन्दर चला गया और उसे बरामदे में बैठना पड़ा, बैठे-बैठे थकावट के मारे उसे नींद आने लगी। उसे बार-बार अहसास हो रहा था कि वर्मा उसके काम के लिए न आकर अपने ही किसी काम से यहां आया है। उसके काम का तो बहाना मात्र है।

जब वह बाहर निकलकर आया तो कहने लगा—"मुझे तो आज राजधानी जाना है। चलो मैं डी० ई० ओ० को फिर से कह दूं।' जब एक बजे डी० ई० ओ० के दफ्तर में पहुंचे तो पता चला कि इंटरव्यू कल के लिए स्थगित कर दी गई है। वर्मा डी० ई० ओ० से दफ्तर में जाकर मिल आया। आने पर कहा—जब कल इंटरव्यू समाप्त हो जाए तो मेरा नाम लेकर साहब से मिल लेना।

वे बाहर आ रहे थे। दोनों चुप थे। परन्तु उसके मन में बहुत उथल-पुथल हो रही थी। उसने हिसाब लगाया कि वर्मा मेरे लिए एक बार ही आया था। आने जाने का किराया पन्द्रह रुपए है। दस रुपए खाने-पीने के दस रुपए किसी मित्र को दिए होंगे। पन्द्रह और कर लो इसकी मेहनत के फिर भी पचास बनते हैं। मैंने दिए सौ थे। इसे पचास रुपए तो वापिस देने ही चाहिए। लेकिन बस स्टैण्ड तक उसका कुछ कहने का साहस न पड़ा।

उसी समय उसे याद आया कि उसकी जेब अब लगभग खाली है। बिना पैसे यहां परदेश में रात कैसे काटेगा और कैसे घर जाएगा? इस बात ने उसे थोड़ा प्रेरित किया और वह पैसे मांग ही बैठा—' वर्माजी, मेरे पैसे तो काफी बच गए होंगे ?"

सुनकर वर्मा का चेहरा तमतमा आया— कहां? क्या बनता है सौ

रुपए का ? अफसरो से मिलने के लिए पता नही क्या-क्या करना पड़ता है। घर पर फल पहुचाने पड़ते हैं। चपरासियों को देना पड़ता है। फिर मैं यहा दो बार आया हू। मैं भी तो खाली पेट नहीं रह सकता ?"

"फिर भी कितना खर्च आ गया है ?"

"मैंने ऐसा हिसाब कभी नहीं लगाया ! लो ! तुम्हारे सौ के सौ वापिस ले लो," उसने सौ का नोट उसकी ओर बढाया।

'सौ के सौ वापिस क्यो ले लू ?' वह दूर हो गया।

डी ई ओ के वर्मा को बात मान लेने का उसे कम ही विश्वास था। फिर भी वह डर गया—जाता जाता यह डी ई ओ को नियुक्त न करने को ही कह जाए ? यह सोचकर वह कुछ ढीला हो गया। माफी मागने की भाषा मे बोला—"आप तो नाराज हो गये मेरे पास पैसे नही थे। अपना समझकर ही मैंने हिसाब मागा था।"

"तो यू बोलो—ज्यादा तो अब मेरे पास भी नही हैं। मैं तो राजधानी जा रहा हू। तो पन्द्रह रुपए ले लो।"

उसने पन्द्रह रुपए लिये और चुपचाप वहा स खिसक लिया। वह सोच रहा था वर्मा पचासो रुपए तो पचा ही गया है।

दूसरे दिन पचास रिक्त स्थानो के लिए दो सौ लड़के लड़कियो ने इटरव्यू दिया। जब इटरव्यू समाप्त हुआ तो वह शिक्षा अधिकारी से मिला।

दफ्तर म जाते समय वह बेहद घबरा रहा था—कही यह भी उल्टा गले न पड जाए

अफसर से मिलने जाते समय लोग होठो पर हसी लेकर जा रहे थे। उसने भी सोचा अफसर को हसता हुआ चेहरा लिये मिलना चाहिए। उसने कुछ देर अपने मुख पर हसी लाने का पूर्व अभ्यास किया। परतु सफल न हुआ। एक बार तो उसने मिलने का विचार ही छोड दिया। परन्तु थोडा बाहर आकर फिर वापिस चला गया।

जब उसने चिक हटाकर अन्दर झाका तो उसके चेहरे पर मायूसी के सिवाय और कुछ नही था। वह साब के सामने जा खडा हुआ। उसे देख कर साहब ने कहा—'हा'।

साहब उसे कोमल ही लगा जिससे उसका उत्साह बढ गया। उसने

कहा—'जी, आपसे सचदेव एम एल ए के आदमी वर्मा जी मिले होंगे।"

'हा। देखेंगे, अगर तुम्हारी नियुक्ति हुई तो तुम्हे घर पर सूचना भेज दी जाएगी।"

वह बेहद उदास गाडी मे घर जाने के लिए बैठ गया।

गाडी मे बैठा वह सोच रहा था कि प्राध्यापक उन्हे आदर्शों से भरा साहित्य पढ़ाते रहे। परन्तु यह कभी नही पढाया कि आपको ऐसे ऐसे ठग मिलेंगे। कभी यह नही बताया कि अगर नौकरी न मिले तो तुम रोटी इस प्रकार कमा लेना। नौकरी के बिना भी खुशी प्राप्त की जा सकती है।

उसे नियुक्ति हो जाने का कम ही विश्वास था फिरभी उसने सोचा—चार पाच दिन तो प्रतीक्षा करूगा और फिर वर्मा को गले से पकड लूगा। इससे जबरदस्ती पसे वापिस छीन लूगा।

गिरी हुई छत

उसके मकान की छत गिर गई थी। कंगाली में आटा गीला होता ही आया है। होता भी क्या न? उसने छत की कड़ियां बड़ी पतली और सस्ती डाली थीं। थोड़े से पैसों से काम चल जाएगा। यह सोच गया था। ऐसी सोच के पीछे गरीबी तो थी ही, एक कारण यह भी था कि उसका मकान धक्का बस्ती में था। धक्का बस्ती का क्या एतबार! न जाने सरकार कब गिरा दे? और सब कुछ व्यर्थ ही चला जाए।

पटटेवाली जगह पर पक्का मकान बनाने की उसकी सामर्थ्य नहीं थी। दस साल की अध्यापकी में वह धक्का बस्ती में कच्चा मकान बनाने लायक पैसे भी नहीं जोड़ पाया था। जिन पैसों से मकान बना, वे मित्र दोस्तों और पत्नी से पकड़े गए थे। खैर किसी तरह मकान बना। एक कमरे वाला। सिर्फ चार महीने बाद बरसात आई और छत चू गई। दूसरी दोपहरी में छत पर थोड़ी-सी मिट्टी और बिछा देने के कारण जरड़ा कर नीचे गिर गई। गनीमत यही हुई कि उस वक्त वह तथा उसका पांच-वर्षीय बेटा बाहर खड़े थे। पत्नी भाग कर बाहर निकल गई। दो वर्षीय बच्ची पर तो कुछ छत ऊपर ही गिर गई थी। लेकिन किसी तरह बच गई। काफी सामान टूट फूट गया था।

उसने इस हादसे को जीवट से झेला था। दीवार के साथ चारपाई खड़ी करके छाव कर ली थी। छत में से जो टूटे फूटे सरकण्डे निकले थे उनसे एक अस्थाई छप्पर-सा बना लिया था।

अबकी बार वह चाहता था कि छत का सामान मजबूत होना चाहिए। सस्ता रोवे बार-बार और महंगा रोवे एक बार। उसका विचार बना कि

हो-न-हो किसी प्रकार छत मे लोहे के गाडर' डाले जाए, लेकिन सवाल पैसे का था। उसे पत्नी से अब भी कुछ उम्मीद थी बेचारी अडोस-पडोस के कपडे सिलकर किसी तरह कुछ जोड पाती थी। लेकिन उसे अपने एक दोस्त से बिल्कुल ही उम्मीद नही रही थी। वह खास दोस्त जो उसका ट्यूशन न करने और फीस के साथ दो-दो रुपए अधिक न लेने के लिए प्रशसक था सुबह-सुबह उसके साथ सैर को जाता था। हर रविवार को दोनो खेतो मे दूर तक निकल जाते थे।

दया धर्म, भ्रष्टाचार, नैतिकता, अनैतिकता, जीवन-मृत्यु, जसे विषयो पर वे घटो बातें करते थे, मित्र उसे बताया करता था कि उसका 'पाट नर' किस प्रकार किसानो का अधिक से अधिक शोषण करने की कोशिश करता है। और वह बीच मे टाग अडाता है। इसलिए दोनो के बीच हर वक्त तनाव बना रहता है।

वह भी उसे अपने स्कूल की बातें बताया करता था कि किस प्रकार अध्यापक ट्यूशन के लिए मरते हैं। बच्चो को पीटते हैं। ट्यूशन रख लने पर पढाते भी कुछ नही और यू ही पास कर दते हैं सरकारी स्कूल मे कितने गरीब घरो के बच्चे आते हैं उनसे भी मुख्याध्यापक पाच पाच रुपए फीस के नाम पर 'झाड' लेता है उसके विरोध का भी कोई असर नही होता। क्यूकि वह अकला है और दूसरे अध्यापक तीन है तीनो ही उससे वरिष्ठ हैं। अध्यापक स्कूल मे ढग से पढाते नही। क्लासें खाली पडी रहती हैं। वे बच्चो से अपने घर का काम भी करवाते हैं। मसलन लकडिया उठवाना, घर पर 'उसारी' के वक्त पर ईंटे इधर-उधर रखवाना इत्यादि।

आगे यह मित्र उसकी सौ पचास की मदद करने के लिए हर वक्त तत्पर रहता था। जब यह मकान उसने बनवाया था तो उसने तीन सौ रुपए दिए थे। उन पैसो को उसने तीन चार माह मे लौटा दिया था। मकान किराये से पिण्ड छूटने पर इतनी कुछ तो बचत होने ही लगी थी। लेकिन अब उससे उम्मीद नही रही थी। उस मित्र ने एक अन्य धनी मित्र से मिलकर एक नई 'फर्म' खोल ली थी और उसमे आकठ डूब गया था। उसने उसके साथ सुबह की सैर छोड दी थी। रविवार को बाहर निकलना बद कर दिया था। उसकी छत गिर जाने का उसे पता चल गया था फिर

भी वह देखने तक नहीं आया था।

नई 'फर्म में पैसा चाहिए' ऐसा आभास उसका मित्र उसे दे चुका था। अब वह उससे पैसा मांगे भी किस मुंह से ?

ले देकर उसे अपने पोस्ट आफिस में चल रहे पंचवर्षीय आवर्ती जमा खाते की याद आयी। इमरजेंसी में कुछ आदेश ऐसे आए थे। मुख्याध्यापक ने उसे ये तभी दी थी जब उसने अपने नाम से खाता खोलकर पास बुक उसे दिखाई थी। इस खाते में वह आए महीने दस रुपए जमा करवाता था। इस खाते में उसके लगभग चार सौ रुपए जमा हो गए थे। उसमें से आधे वापस ब्याज पर मिल सकते थे।

वह पोस्ट आफिस गया तो बाबू ने बताया कि आपने पिछले दो माह से किस्तें जमा नहीं करवाई हैं। पहले वे जमा करवाओ तब जाकर आपको आधे पैसे मिलेंगे। ऐसा नियम है।

तब उसे याद आया कि बीस रुपए उसके बैंक के बचत खाते में पड़े बैंक में यह खाता उसने इसलिए खुलवा रखा था कि कभी-कभार विभागीय पत्रिका में उसका कोई न कोई आलेख पत्र छपता था तथा वे उसे चैक भेजते थे। चैक को भुनाने के लिए बैंक में खाता होना जरूरी था। पिछले ही दिनों उसी विभागीय पत्रिका में उसकी एक रचना छपी थी और उसके नाम बीस रुपए का एक चैक आया था।

लेकिन सिर्फ बीस रुपए बैंक से निकलवाते हुए उसे शर्म आती थी। एक बार आगे उसे बैंक के इसी खाते में से बीस रुपए निकलवाने पड़े थे। लोग जिस खिड़की से लाखों रुपये निकलवा रहे थे वहां से उसने सिर्फ बीस रुपए निकलवाए थे।

बाबू ने उसे बख्शा भी नहीं था। कह दिया था— मास्टर जी सिर्फ बीस रुपए ही निकलवा रहे हो ? क्या इतनी तंगी चल रही है ?

पास खड़े एक अन्य सज्जन ने भी टोक दिया—' इतनी सी रकम का क्या करोगे गुरुजी ?'

भई रकम है ही इतनी तो ज्यादा कहां से निकलवाए ?'

इसी शर्म से बचने के लिए उसने अबकी बार एक रास्ता ढूंढा— पत्नी से अस्सी रुपए लिए और बैंक में जाकर जमा करवा आया।

दो-तीन दिन बाद जाकर सौ रुपए निकलवा लाया। दो सौ रुपए पोस्ट-आफिस वाले खाते मे से मिल गए।

शाम को एक साथी अध्यापक के साथ जाकर वह 'गाडर' खरीद लाया। साथी अध्यापक ने ही राय दी कि दो रुपए रेहडी का किराया काहे को भरते हो, सुबह दो-दो लडके उठा कर तुम्हारे घर फैंक आएगे इन्हे।

पैसा की तगी कह लो या फिर एक खास मौके की वजह कह लो। वह भी लालच मे आ ही गया। परीक्षा हो चुकी थी और छात्र बिल्कुल खाली थे। वे एक बार स्कूल मे हाजिरी देने आते थे। स्कूल की सफाई करते थे और चले जाते थे। अध्यापक कापिया जाचते थे तथा परिणाम तैयार करते थे। उसने सोचा लडको की पढाई का नुकसान तो इन दिनो मे है नही। इस प्रकार दो रुपए बच जायेगे। घर के लिए एक दिन की सब्जी ही हो जाएगी।

दूसरे दिन उसने लडको की हाजिरी लगाई तथा सात-आठ लडको को साथ लेकर हैडमास्टर से पूछकर दूकान पर चला गया। उसने गाडर बच्चो के कधो पर रखवा दिए। कोई ज्यादा बोझ नही था। लेकिन लडके शरारती तो होते ही है। फिर भी इन दिनो मे आकर तो और भी अधिक नितर जाते है। वह साथ ही साथ चल रहा था। फिर भी दो लडके एक 'गाडर' को लिये हुए काफी दूर निकल गए। आगे निकलकर उन्होने न जाने क्या शरारत की कि उनमे से एक ने तो पाव के अगूठे पर चोट खा ली और दूसरे ने हथेली मे।

दोनो के खून निकल आया। अगूठे का नाखून उतर गया। सरकारी अस्पताल पास ही था। लेकिन वह वहा जान बूझ कर नही गया। सोचा, चोट का कारण बताने पर डॉक्टर उस पर बिगडेगा। निकट ही उसके पास पढा एक लडका एक प्राईवेट डाक्टर के यहा कम्पाउडर था। अच्छा हुआ तब डाक्टर दूकान मे नही था और चेला अकेला था। उसने गुरु भक्ति दिखाई और चुपचाप पट्टी बाधने लगा।

जिस लडके के हथेली मे चोट लगी थी उसकी उसने पट्टी नही करने दी। यू ही टिचर लगवा दी। सोचा—चोट तो मामूली है। खामख्वाह घरवाले पट्टी देखकर घबरा जायेंगे। और उस पर बिगडेगे। पट्टी तो

उसके शिष्य ने मुफ्त मे ही कर दी लेकिन दोना के 'टटिनस' का टीका लगवान म उसके दो रुपय खच जरूर हो गए।

'गाडर' उसे फिर भी रेहडो म ही भेजने पडे। वह सोच रहा था कि ठीक है, उसके साथ यही होना चाहिए था। उसने क्यू किया दो रुपय का लालच ? दो रुपये के लिए क्यू बच्चा से गाडर उठवाए। क्या लोग बच्चो को स्कूल म मास्टरो का काम करन के लिए भेजते हैं ?

जिस बच्चे के अगूठ पर चोट लगी थी। उसका घर दूर था और पीडा के कारण उससे चला नही जा रहा था। इसलिए वह किसी का साईकिल मागकर खुद उसे घर छोडने गया। साथ म उसन यह भी सोचा कि लगे हाथ लडके के घरवाला से माफी भी माग आऊगा। नही तो उसके घर वाल अभी स्कूल म आ धमकगे। और उस सबके सामन जलील करगे।

रास्ते म वह उस लडके के परिवार की बदहाली से भी परिचित हो गया। उस पता चला कि उसका बाप ऊट गाडा किराय पर चलाया करता था लेकिन ऊट मर जान म उसका वह काम 'ठप्प' हो गया है। उस लगा कि छत गिरन स उसका तीन चार सौ का नुकसान हुआ है। और इन बेचारा का तीन हजार का ऊट मर गया है। आज बेचारा के लडके के चोट लग गयी। उसन निणय लिया कि इस बच्च के ठीक होन का सारा खच स्वय ही वहन करेगा।

उस बच्चे को घर छोडकर वह स्कूल आया तो हथली म चोट खाया बच्चा रोया उसका बाप सार मास्टरा क बीच बैठा था। नीची नजरें किए हुए जब वह उन सब के पास आकर बैठा तो एक उस अध्यापक को छोडकर जिसन उस बच्चा द्वारा गाडर उठवान की राय दी थी बाकी सब उस सवालिया नजरा स घूर रह थ।

बच्च क बाप न कहा— मास्टर जी इसा पट्टी तो करवा दत ?

मैंन दखा मामूली सी चोट है। पट्टी करवाकर घरवाल खामखा घबरा जायग। बस इसक टीका जरूर लगवा दिया था और दवाई भी दिया था।

यद्यपि उस ज्यादा सनाप मोगा न कहा था लकिन उसका अन्तम

उसे बेहद धिक्कार रहा था। उसका स्कूल के काम मे मन नही लगा। मुख्याध्यापक से छुट्टी माग कर वह घर आ गया।

रास्ते मे वह सोच रहा था -- इतना दु खी तो मैं जिस दिन छत गिरी थी। उस दिन भी नही था। उल्टा उस दिन तो खुश था कि चलो, अच्छा हुआ, सब जी बच गए। छत न तो टूट कर एक-न एक दिन गिरना ही था। कमजोर जो थी।

घर पर उसकी मुरझाई सूरत देखकर पत्नी चौंकी, क्यो क्या बात है। चेहरा इतना उदास क्यू है ?

उसे सारा हादसा बताया।

सुनकर पत्नी ने ढाढस दी—कोई बात नही, मकान की छत गिरने की वजह से ही तुम्हारे भीतर की छत गिरी है। जब मकान की छत मजबूत हो जाएगी तो तुम्हारी आत्मिक छत भी मजबूत हो जाएगी। फिर तुम्हें यू थोडे-थोडे पैसा के लिए जलील नही होना पडेगा।

'सच' पत्नी के बताये सूत्र को सुनकर उसकी बाछें खिल गइ। और वह लोहे के गाडर चढाने के लिए दीवारा पर चढ गया।

क वर्ग

एक सस्था म व पाच थे—क, ख, ग, घ ङ, । स्पष्ट है र्वारिष्ठता क अनुसार "क' उस वग का मुखिया था । ख, क के जितना निकट पड़ता था उतना ही अधिक क का पिछलग्गू था । अगर दिन के बारह बजे भी क कहता कि अब रात है तो पीछे ख भी कह उठता—हा ! रात है ! क सार वग के लिए सख्त आदेश निकालता लेकिन ख इसस जरा भी विचलित न होता । वह सोचता कुछ भी हो अपने लिए तो कोई न-कोई चोर रास्ता निकल ही आयेगा ।

क और ख सत्ता मे थ, तो "ङ' सत्ता के बिल्कुल बाहर था । लेकिन जिस प्रकार विपक्ष के नेता का कुछ-न कुछ महत्व होता है वही महत्व ङ का उस सस्था मे था । वह क का खुलकर विरोध किया करता था । क को अकेले ही या ख के साथ मिलकर खाने की आदत थी लेकिन ङ क विरोध स्वरूप वे पूरा नही खा पाते थ । पूरा खाने के लिए आवश्यक था कि ग घ और ङ को भी शामिल किया जाता । एसा करने पर प्रत्यक के हिस्से मे बहुत थोड़ा आन की आशका थी । यद्यपि व लोगो का पूरा शोषण नही कर पाते थे फिर भी यह अकेले अकेले खाने का ढर्रा ठीक है । क की ऐसी सोच थी ।

ङ" को उनकी इस भ्रष्ट प्रवत्ति पर बडा क्रोध आता था । वह सोचता कि क' द्वारा लोगो को ठगने नही देना चाहिए । वह क को एसा न करने को कहता और बाज न आने पर ऊपर शिकायत करने की धमकिया देता रहता । फलस्वरूप क की नीद भी हराम हो जाती थी । लकिन सस्कारवश न तो खाने की प्रवृत्ति छोड सकता था और न ही अहवश ङ को अपन साथ मिला सकता था । ङ, क" की इन घिनौनी प्रवत्तियो का जिक्र अपने मित्र

दोस्तो मे भी किया करता था। उसके मित्र उसे महान सुधारक समझते थे।

ग अजीब प्रवत्तियो का आदमी था। सामने होने पर ख के विरुद्ध एक शब्द भी न बोलता, कभी कभी प्रशसा कर दिया करता था। लेकिन ड के साथ होने पर ड की पीठ ठोकता रहता था। वरिष्ठता क्रम मे उसका तीसरा नबर पडता था। कभी उस पाचो के नाम पर लिखने पडते तो वरिष्ठता क्रम का बडा खयाल रहता था।

घ कुछ कुछ स्पष्ट था। वह न तो क की प्रशसा करता था और न ही घोर विरोध। वह ड का साथ तो देता, लेकिन हमेशा आगे ड को ही रखता।

ड को विरोध का मजा चखाने और सीधे रास्ते पर लाने के लिए पिछले साल क ने सस्था मे एमरजेंसी लगा दी थी। ख कहता ही क्या, शेष भी कुछ न कह सके थे। एमरजेंसी मे मुह जो बन्द हो जाता है सबका? फिर जो कुछ किया था, वह राष्ट्रहित मे था। एमरजेसी के नियम बडे कठोर थे। और सब तो किसी तरह खीच ले गये, लेकिन ड बेचारा भला इतना कठोर नियमो को कैसे सह पाता? ख चोर रास्तो से नियमो की कठोरता मे बच जाता इसलिए ड ने ख के चोर रास्तो को लेकर क की आलोचना शुरू कर दी।

क, 'ख' के चोर रास्ते बन्द नही कर सकता था। दुनिया मे केवल यह एक ही तो उसका अधभक्त था। फिर इतनी सख्ती प्रयोग करते-करते क तग आ गया। कुछ इसे इन्सानो के मौलिक अधिकारो की याद भी आ गई। इसलिए उसने एमरजेंसी मे कुछ ढील दे दी।

क ने एमरजेंसी लगाकर ड को डरा तो जरूर दिया लेकिन फिर भी वह कोई बहुत बडी मनमानी नही कर सकता था, इसका उसे बहुत अफसोस था।

तभी घ ने एक योजना की खोज की। इस योजना मे सभी के सहयोग की आवश्यता थी। अत उसमे सबको मिलकर बराबर खाने की व्यवस्था थी। यह किसी अकेले के बस की बात नही थी। इसीलिए तो घ ने अपने इस व्यक्तिगत आविष्कार को सबके सामने रख दिया था। क ने भी इस योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी उसे इस बात का सतोष था कि जितना

यह पहल अकेला अकेला खा रहा है उतना तो अकेला खायगा ही यह तो 'एक्सट्रा' है।

उसने सोचा—यह तो घ द्वारा आविष्कृत नयी राह है। इस राह का मुझे तो ज्ञान ही नहीं था। मुझे तो दुहरा लाभ होगा। य लोग भी अपनी ही चाल स मरी बिरादरी म शामिल हो जायेंगे। फिर मरा काई विरोध नहीं कर सकेगा। योजना में सबको शामिल कर लेन से क्या फक पड़ता है? इससे उन्ह लगगा कि मैं उनकी बात भी मान लेता हू।

ख और ग को तो विरोध करना ही नहीं था। ड ने भी नहीं किया। इस योजना का प्रस्ताव उसके ही आदमी न रखा था। और फिर खाने को देखकर उसके मुह स भी लार टपकने लगी।

चूकि यह योजना घ की ओर स प्रस्तावित थी और घ का क, ख विपक्ष का आदमी मानते थे इसलिए हा करके भी उन्होंने इसम पूरा सह योग नहीं दिया। यह बात ड को अखरती तो जरूर थी लेकिन थोड़ा-बहुत कहने के सिवाय उसने कुछ नहीं किया। मसलन योजना बद करने लिए उसने कोई जिद नहीं की जबकि वह कर सकता था। पहल अगर ड की तरफ स हो जाती तो क इसे शायद बद भी कर देता। लेकिन नहीं। वह घ ख के साथ हाथ मिलाता और खुश रहता मानो कुछ हो ही न रहा हो। वह सोचता—चाहे कुछ भी है, हीग लग रही न फिटकरी, फिर भी रग चोखा आ रहा है। कुछ-न-कुछ खाने को भी मिल रहा है और प्रत्येक बात का विरोध करने वाली बुराई स भी पिंड छूटा है।

कभी-कभी ट सोचता है कि वह एक वग विशेष का हिस्सा बन गया है उसका अब अलग से कोई अस्तित्व नहीं रहा।

एक बार फिर

उन्हें गोरमिन्ट बड़ी अच्छी लगती थी। गोरमिन्टी आश्वासना को सिर माथे रखे वे अडीक करते रहे। उन्हें पूरा भरोसा था कि एक-न एक दिन तो यह बात सच होगी कि जमीन उसी की है जो उसे बीजता है। फिर वे मुजारा से मालिक बन जायेंगे। गोरमिन्ट जब कहती है कि किसी के पास अठारह एकड से अधिक भूमि नही रहेगी तो फिर वह सेठ हजारो किलो का मालिक कैसे बना रहेगा ? आखिरकार एक न-एक दिन तो गोरमिन्ट इसकी मल्कियत तोड़ देगी और उन्हे मालिक बना देगी। फिर उन्हें सेठ की हवेली मे दाने नही डालने होंगे। जितने भी दाने और कपास खेत मे पैदा होगी सब उनके अपने घर आयेगी। फिर उनके बच्चे भूखे और नगे नही रहेंगे। फिर सेठ की हवेली में हमारी कपास का गलत हिसाब रखने वाले मुनीमा का फावा ही मुक जायेगा। फिर उन्हें सेठ की हवेली और खेतो मे बेगार भी नही देनी होगी।

लेकिन नहीं। ऐसा नही हुआ। इन्तजार करते-करते बुड्ढे चल बसे, जवान बुड्ढे हो गये और बच्चे जवान हो गये। न ही तो सरकार ने सेठ से जमीन छीनी और न ही उन्हें मालिक बनाया। राज्य सरकार के कानूनो के दायरे, जिनमे आकर कोई मुजारा मालिक बन सकता था बडे सकडे थे। जिस किसी मुजारे के नाम छ साल से खेत की गिरदावरी होती थी वही मुकदमा लडकर मालिक बन सकता था। तभी तो इस प्रकार का मुकदमा छ साला कहलाता था।

सेठ बडा चालाक था। आए साल हर मुजारे की भूमि का टुकडा बदल देता। पहले साल किसी मुजारे का खेत गाव के अगूण मे होता था तो अगले

साल आयूण मे कर देता था। आए साल खेत बदल जाने के कारण किसी भी बटाईदार के नाम गिरदावरी छ साल तक नही हो पाती थी। इस प्रकार सेठ प्रत्येक मुजारे को अपने मातहत रखता था। खूब बेगार लेता था और बटाई का हिस्सा भी थोडा देता था।

मुजारो को आधी रात तक सेठ की हवेली मे काम करना होता। उसके पशुओ को चराना होता नहलाना पिलाना होता। सेठ के खेतो मे बेगार देनी पडती थी। अपने घर चाहे कितना ही जरूरी काम होता या घर पर कोई रिश्तेदार मिलने आया होता तो भी सेठ के बुलावे पर उन्हे हाजिर होना पडता था। इस प्रकार अपने घर के पशु बिना चारा-पानी के खडे रह जाते थे। और कई मिलने आये उनके रिश्तेदार बिना बात किये ही चले जाते थे। गेहू इत्यादि की फसल के दाने तो मुनीम आकर खले मे ही बटा लाते लेकिन कपास ज्यो-ज्यो थोडी-थोडी चुगी जाती थी, उन्हे सेठ की हवेली मे तुला तुला कर गेरनी होती थी। रोज की हवेली मे आने वाली कपास का हिसाब किताब मुनीम रखते थे। सेठ कपास बहुत लेट बेचता था। जब तक सारी कपास चुग न ली जाती तब तक उसका हिसाब न करता था। गरीब आदमी पैसे के बिना तग होते रहते थे।

आखिरकार मुजारे तग आ गये उनका सबर टूट गया। कब तक और इन्तजार करते वे? जब वे शहर जाते तो पढे लिखे लोग उन्हे समझाते कब तक यू गुलामो की जिदगी जीते रहोगे? अब तो राजा महाराजाओ के दिन भी लद गये। फिर भी तुम सेठ के इतने अत्याचार क्यो सह रहे हो? अबकी बार अपने खेत का कब्जा मत छोडो। सेठ को खेत न बदलने दो। जो कोई खेत मुजारा अबकी बार जोत रहा है, वही अगले साल जोते और इसी प्रकार आगे जोतता चला जाय। इस प्रकार छह साल तक अपने नाम गिरदावरी कराते चले जाओ। फिर तुम [illegible]-साला करने के काबिल हो जाओगे।

धीरे धीरे कुछ मुजारो के दिमाग मे यह बात आयी। उन्होने औरो को भी अपने पीछे लगाया और सेठ के विरुद्ध बगावत का झडा गाड दिया। गाव मे सरेआम घोषणा कर दी कि अबकी बार वे अपने खेत छोडकर दूसरे नही लेगे। पुराने खेत पर ही कब्जा रखेंगे। कपास भी हम अपने घरो

म ही इकट्ठी करेंगे और अन्त मे बटाई करवा लेंग। हमारे हिस्से की कपास हम खुद बेचेंगे।

सेठ ने उनकी मागा को ठुकराते हुए उनकी चुनौती स्वीकार कर ली और कह दिया कि मैं सभी मुजारो को खेतो से निकाल दूगा।

चत का महीना था। कपास बीजने के लिए भूमि जोतने सवारने का समय। मुजारे खेत म नहर का पानी लगा-लगाकर जमीन तैयार कर रहे थ। गाव म खबर फली कि आज सेठ मुजारो के खेतो मे अपना ट्रैक्टर चलायेगा और उन्हे बेदखल करेगा।

यह खबर सुनकर सब बटाईदार लाठिया लिये गाव के गुवाड मे इकट्ठे हुए। एक लोटे पानी म थोडा-सा लूण घोला और उसे सबने पीया। सबने आखरी सास तक सेठ के विरुद्ध लडने का व्रत लिया। सेठ तथा सेठ के आदमी ट्रैक्टरो और जीपो म चढे हुए, हवा मे गोलिया छोडते हुए, उनके पास से निकले। लेकिन वे मुजारो को डरा न सके। आखिरकार वे घास की रोटिया खाते हुए भी सम्राट अकबर का मुकाबला करने वाले महाराणा प्रताप की धरती के लोग थे। उन्हे पता था कि गोलियो और लाठियो का क्या मुकाबला लेकिन वे तो अपने अधिकारो के दीवाने थे। शोषण की पीडा न उन्हे मृत्यु भय स मुक्त कर दिया था।

'जय बजरग बली की' आकाशभेदी हुकार लगाते हुए उनकी बाढ गोलिया का मुकाबला करने, आगे बढ गयी। गोलियो की बौछार स वे रुके नही। एक दो लाठियो वाले ट्रैक्टर तक पहुच गये। लाठिया वालो से वे मार तो कैसे खाते? लेकिन उन्हे भागना पडा। मार तो लाठिया वालो ने ही खाई। बीस आदमी घायल हो गये। पाच गम्भीर रूप से घायल थे।

घटनास्थल पर पुलिस आयी थी। वहा के फोटू लिए थे। इधर-उधर बिखरे पडे कारतूसो के खोखे इकट्ठे किये जिनकी एक बोरी भर गयी। मुजारो ने रपट म सेठ तथा अन्य पाच आदमियो का नाम लिखवाया था। इस अत्याचारपूर्ण घटना का समाचार प्रात के प्रमुख पत्र मे आया था। मुजारे सोचने लगे अब सेठ जल्दी ही सीखचो मे बद हो जायेगा।

लेकिन नही। ऐसा नही हुआ। सेठ ने नीचे से लेकर ऊपर तक सारी सरकारी मशीनरी को नोटो की गड्डियो से ढाप दिया। वह प्रात के मंत्रियो

और मुख्यमंत्री से मिल आया परिणामस्वरूप घायल मुजारों के शरीरों में से, शहर के सरकारी अस्पताल में गोलियों के छर्रे तीन दिन बाद निकाले गये। सेठ तथा सेठ के आदमियों की गिरफ्तारियाँ नहीं हुई। बात तफ्तीश इत्यादि में उलझ कर रह गयी।

फिर भी मुजारे सोचते रहे कि आखिरकार यह जाँच-पड़ताल पूरी होगी और सेठ को कैद होगी। उनके दो चार नुमाइंदे थाने-कचहरी के चक्कर काटते रहे। तारीखें भुगतते रहे।

तभी हाड़ी की फसल खेतों में तैयार हो गयी। मुजारों ने बड़े हौसले से फसल काटनी शुरू कर दी। वे दूसरे पड़ोसी गाँवों से मजदूरियें भी लाए ताकि फसल जल्दी से जल्दी काटकर घर ले आयें लेकिन नहीं ज्यों ही उन्होंने फसल काटकर मण्डिलियाँ बनाई सेठ पुलिस लेकर खेतों में पहुँच गया। पुलिस ने उनको खेतों से बाहर निकाल दिया। सेठ की धड़धड़ाती हुई ड्रमी चलने लगी। कनक निकल निकलकर सेठ की हवेली में आने लगी। सेठ की हिफाजत के लिए खेतों तथा गाँव की गलियों में पुलिस-ही पुलिस हो गयी। शराबी कबाबी पुलिस वालों के कारण मुजारों की बहू-बेटियों को घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया।

सेठ दूसरे गाँवों से दिहाड़िये ले आया और उनकी सहायता से खेती करने लगा। मुजारे अपने खेत हथियाने के लिए सेठ के साथ लड़ें नहीं इसलिए गाँव में एक स्थाई पुलिस चौकी तैनात कर दी गयी।

उनका कमाया-कजाया गेहूँ जब सरकारी सहायता से सेठ की हवेली में पहुँच गया और आगे जोतने के लिए जमीन मिलने की कोई आस न रही तो जो गोरमिन्ट उन्हें अच्छी लगती थी वह बुरी लगने लगी। तब वे बड़बड़ाते—साली, गोरमिन्ट ही निकम्मी है। इससे तो अच्छा हो गोरमिन्ट नाम की कोई चीज ही न हो। अगर यह गोरमिन्ट न होती तो क्या सेठ म्हारी कनक यूँ अपने घर ले जाता? इतने आदमियों पर यूँ अंधाधुंध गोलियाँ बरसा कर क्या वह जीवित रह जाता? साले को एक दिन में काट देते। तभी देश में आम चुनाव हुए। पुरानी रूलिंग पार्टी को अपना मत न देकर उन्होंने उसके प्रति अपना क्षोभ प्रकट किया। सारे देश में वह पार्टी हार गयी मानो उनकी तरह उस पार्टी से सारा देश ही खार खाये

बैठा था।

देश मे नये लोगो का, नयी पार्टी का राज आया। इस पार्टी मे वही लोग थे जो पुरानी व्यवस्था को विकास की धीमी गति के लिए, भ्रष्टाचार भाई भतीजावाद और कमजोर वर्ग के शोषण के लिए, कोसते रहते थ। मुजारो को इन नये लोगो से काफी कुछ कर गुजरने की उम्मीदें थी।

लेकिन हुआ कुछ भी नही। चार माह तो मुजारे सबर किये बैठे रहे। सोचते थे—नये-नये लोग हैं। तजुरबा होने पर सब कुछ होगा। लेकिन जब एक साल गुजर गया वे आपस मे ही लडने-झगडने लगे तो मुजारो का इन लोगो के प्रति भी मोह भग हो गया।

उनके नुमाइदे थाने कचहरी के चक्कर लगाते रहे। न तो सेठ की कैद हुई और न ही उन्हे जोतने के लिए भूमि मिली। उन्होंने अपने राज्य के मुख्यमत्री से फरियाद की लेकिन सब बकार। हारकर उन्होंने इस नई व्यवस्था को भी निकम्मी घोषित कर दिया और सेठ के प्रति अपने दिलो मे नये सिरे से आग सुलगानी आरम्भ कर दी। उन लोगो को बहुत रज था। केवल उन्हे ही नही उस इलाके के प्रत्येक सवेदनशील व्यक्ति के दिल मे सेठ के प्रति नफरत धधक रही थी। उसने मानवो पर गोलिया चलाई और धन के जोर पर दो दिन के लिए भी गिरफ्तार नहीं हुआ।

लोग सोचत थे न जाने किस दिन किसी का मौका लग जाये और वह सेठ को । उस दिन वाली घटना को देखकर उम्मीद भी बधती थी, जिस दिन वे निहत्थे लोग, गोलिया के मुकाबले मे उठ खडे हुए थे।

लेकिन जहा यह सम्भावना थी वहा यह भी सच था कि सेठ किसी एक व्यक्ति का दुश्मन नही था। अगर उसने एक परिवार पर इतने अत्याचार किये होत तो उसका कत्ल हो चुका होता। मुश्किल तो यह थी कि वह किसी एक का दुश्मन न होकर चालीसो का था। मारना तो सभी चाहते थ लेकिन पहल कोई नही कर रहा था। सब सोचते थे—यह काम कोई दूसरा ही कर द तो ठीक है। मैं क्या खामखा तोहमत मोल लू। सारी उमर कद काटनी होगी। या फासी लगेगी।

अब सेठ को तो उनम से अब तक कोई नही मार सका है। लेकिन दूसरो आजादी के कणधार अपने कायकलापो के कारण मर गये हैं। और इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से एक बार सत्ता फिर उन्ही लोगो के हाथ म आ गयी है जिनमे शुरू शुरू म वे खार खाए हुए थे। ये लोग सेठ के हको पर कुठाराघात करके, उनके हको की बहाली कर सकेंगे मुश्किल लगता है। एक बार फिर उनका भविष्य अधर मे लटक गया लगता है।

अथ-तत्र

आज से चार माह पूर्व उसे पिता का पत्र मिला था—तुम्हारी बहन सुनीता के विवाह पर तुम्हें कम-से-कम एक हजार रुपये तो देने ही चाहिए। वह तभी से चिन्तित हो गया था। उसे लगा था कि अबकी बार मेरे और घर वालों के बीच जो मुलायम तन्तु खिंचे हैं वे भी टूट जायेंगे। पहले भी घर वालों ने इसी प्रकार उससे पैसे मांगे थे। वह दे न सका था परिणामस्वरूप घर वाले तने-तने रहने लगे।

लेकिन फिर भी उसने प्रयास किया था कि किसी प्रकार सुख दुःख के अवसर पर घर आने-जाने वाली बात बनी रहे। उसने बहुत यत्न किया कि किसी प्रकार एक हजार नहीं तो पांच सौ रुपये तो जोड़ ही लें जिससे पिता कुछ ठंडा पड़ जाये और उसे भी दो दिन बहन के विवाह में शामिल हो जाने दे।

पर पैसे कहां से जुड़ जाते? दो कोठरियों का किराया तो हर हालत में देना ही पड़ता था। रोटी भी खानी ही पड़ती थी। मतलब उसका कोई खर्च ऐसा न था जिसे वह छोड़ सके। आखिरकार हार कर उसने छोटे बच्चे का दूध बन्द किया और अपनी चाय बन्द की तब कहीं तीस-पैंतीस रुपये महीना बचत होने लगी। इस प्रकार भी चार मास में वह डेढ़ सौ रुपये ही बचा पाया। उसने उधार भी मांगा परन्तु कौन देता उसे पांच सौ रुपये उधार? था तो वह एक मामूली-सी कपड़े की दूकान के आगे बैठने वाला मामूली-सा दर्जी ही। वह भी अपरिचित कस्बे में।

आखिर उसकी बहन का विवाह आ गया। पत्नी ने सुझाया कि जितने भी पैसे हैं उनकी, बहन के लिए घड़ी ले आओ और एक सूट जो मैं मायके से

लायी थी वह ले जाओ।

उसने न चाहते हुए भी पत्नी स कहा— 'तुम भी सब चलो।"

तुम्हें एक को वे घर मे घुस जाने दें तो भी गनीमत समझो।"

उस पत्नी की बात सोलह आने सच लगी। वह बाजार से घडी खरीद लाया और पत्नी का नया सूट थैले म डालकर बस मे जा बैठा। फिर भी वह बेहद डरा हुआ था। उदासी के मारे उसका दिल डूबा जा रहा था।

क्या कुछ लाये हो ? बहन के दहेज मे क्या हिस्सा डाल रहे हो", बस मे बठे भी पिता का चेहरा उसकी आखो के आगे छा गया।

क्या ला सकता हू मैं। मेरे पास कुछ बचता ही नही। मैं ता मेरा पेट भी मुश्किल से भरता हू। मेरे खुद के तीन बच्चे है।" वह अपनी सफाई पेश करता है।

' फिर यहा क्या मुह दिखाने आये हो ? तुम्हारा मुह देखकर तो सबधी सतोष नही कर लेंगे। उन्हे तो नोट चाहिए। साले पहले से माग लेते हैं।'

फिर वह पिता से कुछ नहीं कहता, अन्दर जाता है। मा के पाव छूता है। शायद मा उसकी वस्तुओ को स्वीकार कर ले। इसलिए मा को घडी और सूट दिखाता है—मैं ता ये दो वस्तुए भी बडी कठिनता से बना सका हू।

तभी बाहर से गजता हुआ पिता अन्दर आकर पूछता है—"क्या लाया तेरा बडा लाल ?'

' य हैं, एक तो घडी है, एक सूट है।"

नही चाहिए हमे कुछ भी इसका" पिता घडी और कपडे बाहर फेंक देता है। निकल जाओ। सोच लेंगे हमारे बडा बेटा था ही नही।"

वह आसू बहाता हुआ घर से बाहर निकल पडता है। अन्तिम बार घर के अन्दर झाकता है। मा और बहन उदास नजरो से उसे ताक्ती है परन्तु उसे रोकती नही। वह वापस आ जाता है।

नहीं-नही ऐसा नही हो सकता।' वह बस मे बडबडाया। अन्य सवारिया चौंक पडी —'क्या हो गया भाई ?'

'कुछ नही। कुछ नही। यू ही जरा आख लग गयी थी और कोई बुरा स्वप्न आ गया था। उसन लज्जित होत हुए भी सफाई पेश की।

बस चली जा रही थी। गावा मे अड्डे आ रहे थे। रास्ते के चित्र उसे बरबस अतीत मे ले गये। कभी वह इसी रास्ते से घर जाते हुए कितना खुश हुआ करता था। परिवार के सदस्य भी उसके घर पहुचने पर कितने खुश होते थे। मा खीर और हलवा बनाती थी। साथ मे घर का घी भेजती थी। माह के अन्त मे जाता था तो सौ-सौ के दो-तीन नोट पिता को पकडाता था। तब उसका विवाह भी न हुआ था। वेतन मे से बहुत कुछ बच जाता था।

परन्तु वह नौकरी ज्यादा दिन न रही। तभी से उसका दुर्भाग्य जाग पडा। वह नया-नया ही सरकारी कर्मचारी था परन्तु हडताली कर्मचारियो ने उसे भी अपने साथ मिला लिया था। सघ के नेता चिल्लाते थे—भाइयो, सगठन को मजबूत करने के लिए अबकी बार नये और पुराने सभी कर्मचारी हडताल मे भाग लें। जब एक भी कर्मचारी काम पर नहीं जायेगा तो सरकार एक दिन मे ही घुटने टेक देगी। चाहे नया हो चाहे पुराना किसी भी कर्मचारी का शोषण नही होने दिया जायगा। अबकी बार हमारी पहली माग यही होगी कि आन्दोलन मे भाग लेने वाले किसी कर्मचारी का शोषण न हो अर्थात किसी को बरखास्त न किया जाये।

तब कौन जानता था। जोश जोश मे वह भी शामिल हो गया था। बडे-बडे नेता मरणव्रत पर बैठे थे और उसे लगता था कि अगर वह हडताल नही करेगा तो उनके मरने की जिम्मेदारी उसके नाम होगी।

परन्तु सभी ने ऐसा नही सोचा। हडताल मे पचास प्रतिशत कर्मचारी ही शामिल हुए। शेष काम पर चले गये। फिर भी आन्दोलनकारी पीछे नही हटे। वे दिल्ली गये। अन्य सघो से सहयोग की कामना की। सबने खब आश्वासन दिये कि तुम डटे रहोगे तो हम भी तुम्हारे साथ मिल जायगे। कई ससद सदस्यो ने ससद मे मामला उठाने और सरकार का ध्यान उनकी जायज मागो की ओर दिलाने का वायदा किया। परन्तु हुआ कुछ भी नही। उनकी स्वय की कमजोरी को देखते हुए अन्य सघ उनमे नही मिले। परन्तु हिम्मत उन्होने भी नही छोडी। वे जेल गये। वहा की सडी हुई रोटिया और पत्थर-ककरो वाली दाल खाई पर लाभ न हुआ।

आखिरकार सरकार के थोडे से जबानी आश्वासनो पर सघ के नेताओ

ने अपनी हड़ताल वापिस ले ली। बेचारे नेता भी क्या करते? अन्य संघों ने सहयोग नहीं दिया और अपने संघ के कर्मचारी भी धोखा दे गये। उन्होंने ऊपरी आश्वासनों को ही जाते चोर की लंगोटी समझ लिया। परिणाम यह निकला कि उस जैसे हजारों नये भर्ती किये गये हड़ताली कर्मचारियों को बरखास्त कर दिया। संघ वाले चुप बैठे रहे।

बाद में घर वालों ने उसका विवाह कर दिया। विवाह पर खर्च हो गया था और उसे कोई अन्य नौकरी नहीं मिली थी। धीरे धीरे वह घर वालों को कड़वा लगने लगा। वे उसे छोटे नाम से बुलाने लगे जबकि विवाह के बाद किसी को छोटे नाम से नहीं बुलाया जाता। जब वे उसे छोटे नाम से बुलाते थे तो उसका स्वाभिमान जाग उठता था। एक बार उसने कहा भी—"आप मुझे छोटे नाम से क्यों बुलाते हो।"

"कहीं जाकर अफसर लग जाओ वहां तुम्हें कोई भी छोटे नाम से नहीं बुलायेगा। सब साहब साहब कहेंगे।" ऐसे कई स्वर पिता ने उसे सुनाये।

कोई नौकरी प्राप्त करने के लिए दौड़ धूप करने में भी तो उसे घर वालों की ही सहायता लेनी पड़ती थी। आखिरकार वह सब कुछ करते-करते हार गया। कई नौकरियों के लिए ओवर एज' हो गया। उसने सिर्फ पेट भरने का सीधा सा रास्ता पकड़ लिया। एक दोस्त से सिलाई का काम सीखा। उसी से एक पुरानी सी मशीन मोल ले ली। और एक अन्य कस्बे में जाकर काम करने लगा। अन्य अच्छे-अच्छे 'टेलरों' की प्रतियोगिता में पड़ने की उसकी हिम्मत न हुई।

जब वह अपने मुहल्ले में पहुंचा तो उसे लगा कि यहां की एक-एक इंट उससे पूछ रही है—यहां क्या लेने आये हो?

उसने घर में कदम इस प्रकार रखे मानो वह घर किसी दुश्मन का घर हो। सर्वप्रथम उसका सामना पिता से ही हुआ। पिता को देखकर उसके प्राण और भी ज्यादा सूख गये। औपचारिकता निभाने के लिए पांव छुए। पांव छूते हुए मुंह से राम राम' मरियल आवाज में बहुत धीमे से निकली, जीभ तालू से चिपक गयी। पिताजी ने तो शायद सुनी ही नहीं।

पिता ने जब कुछ भी न कहा तो उसे कुछ राहत मिली। अन्दर गया तो मां बोली— 'अकेला ही आया है क्या? बहू बच्चों को नहीं लाया?'

"उसकी तबीयत खराब है', उसके मुह से बिना प्रयास ही निकल गया।"

"क्या हो गया ? तू भी बडा थक गया है। कुछ खाने-पीने को मिलता है या नही।"

उससे छोटे जवान बहन भाई इधर उधर घूमते रहे। उस पहले नही बुलाया। किसी ने नमस्ते' नही की। परन्तु उसने बारी बारी सबसे हाल पूछा जिसका उसे रुखाई से जवाब मिला। उसे लगा कि सब समझते हैं। इस निखट्टू' के पास कुछ नही।

मा को अकेले म उसने घडी और सूट पकडा दिया। बेचैनी बढने के कारण वह घर स बाहर हो गया। एक-दो पुराने दोस्तो से मिलकर जब घर पहुचा तो पिता छोटे भाइयो से कह रहा था—लडकी को घडी तो बडा ले आया है। अच्छा ही है। हमने तो ली ही नही थी।

उसे लगा कि पिता ने उसे उस रूप म भी स्वीकार कर लिया है। फिर भी वह घर वालो से इतना घुलमिल नही पाया जितना कि चाहिए था। घर वालो ने भी उसे मौका नही दिया। पिता विवाह के काय छोटे भाइयो से पूछ पूछ कर ही करता था मानो वह कोई पराया व्यक्ति हो और घर वालो ने उसे विवाह पर काम करने के लिए बुला लिया हो।

उससे छोटे भ य दो भाई जो बैक मे बाबू थे विवाह पर छाय रहे। घर वाले उनसे बेहद खुश थे और जो कुछ वे चाहते थे वही हो रहा था। उसे लगा कि यह इ जत उनकी नही उनके जुडे पसे की है। उसने पसे के लिए ठडी आह भरी और भीतर ही भीतर बेहद बौना और छोटा हो गया।

चौधरी साहब

चुनाव के वक्त जब चौधरी साहब को अपना पलडा कमजोर पडता दिखाई दिया तो वे बडे चिन्तित हुए। पिछले पाच सालो मे एम० एल० ए० रहते हुए उन्होने काफी कुछ कमा लिया था। नगद कमाई के साथ-साथ आमदनी के स्थायी स्रोत भी बढा लिये थे। गाव मे ईंटो का एक भट्टा लगा लिया था और शहर मे अपने भतीजे को ट्रैक्टरो की एजेन्सी दिला दी थी।

अबकी बार तो मन्त्री पद तक के चान्स थे। सबसे बडी बात उन्हे यह लगी कि अगर चुनाव हार गए तो गाव मे पडे पडे यू ही सड जाएगे। कहा तो राजधानी मे और शहर मे जाकर एम० एल० ए० के रुतबे का लाभ उठाना और कहा गाव की सीमा मे कद हो जाना? राजधानी मे जाकर क्या-क्या नही कर सकते थे? गाव मे तो बदनामी के डर से ही जी मसोस कर रह जाना पडता है। वहा होती है खुली छूट।

नक्षत्रसिंह, जिसे उन्होने राजधानी मे बैंक मे नौकर लगवा दिया था, वही उनके साथ रहता था। नयी-नयी लडकिया लाना उसी के जुम्मे था। एम० एल० ए० फ्लैट मे लडकिया लाने मे कुछ कठिनाइया आती थी। इसलिए उन्होने राजधानी के भीतरी भाग मे एक कोठी किराये पर ले ली थी।

इसी कोठी मे उनकी प्रेयसी 'कम' रखल गाव के स्कूल की शहरी मास्टरनी, कुछ दिन रह आयी थी। उसके छ वर्ष के लडके को जिसे वे अपना ही खून समझते थे, एक होस्टल वाले स्कूल मे डाल दिया था।

चौधरी साहब को एम० एल० ए० शिप के कई और मजे भी याद आ रहे थे। उन्होंने कई पार्टिया अटेण्ड की थी। पार्टियो मे शराब की नदिया

बहती थी। लोग अपनी सु दर-सुन्दर पत्नियो को साथ रखते थे। एक पार्टी की याद तो उ हें भुलाए भी नही भूलती थी। एक मिनिस्टर की लडकी का ब्याह था। मिनिस्टर ने बारात को खान से पहले शराब की पार्टी दी थी। बारात मे कई जवान लडकिया भी आई थी। लडकी वालो की औरतें और लडकिया भी उस पार्टी मे शामिल हुई थी। उन्हें भी बुलाया गया था।

उनकी आख बारात मे आयी एक लडकी पर शुरू से ही अटक गयी थी। उस रात शराब का ऐसा दौर चला कि सब पागल हो गए। शराब लाकर देने वाले बेयरे भी लोट-पोट हो गए। चौधरी साहब को पूरा होश था। जब उन्होंने देखा की सब आखें चढाए कुर्सियो पर लोट पोट हो रहे हैं और कोई भी दूसरे को नही देख रहा है और न ही दूसरे के बारे मे सोच रहा है तो उन्होंने उस लडकी को बाहो म उठा लिया—' तुम्हे बहुत चढ गयी है, आओ मैं तुम्हे सुला दू।"

"कहा ?"

"यही पास ही धमशाला मे जहा तुम्हारे ठहरने का प्रबध किया गया है।"

वह उनके साथ धमशाला म चली गयी। धमशाला बरात के लिए 'रिजव' थी। उन पर शक भला कौन करता ? वे उसे एक कमरे म ले गये। थोडी देर कमरा ब द रहा। फिर वे अपनी कोठी पर चल आय।

और भी कितनी ही सुखद स्मतिया थी। कितने ही भवना का उन्होंने शिला यास किया था। कितने ही उदघाटन किये थे। कितन ही स्कूल कॉलेजा के सास्कृतिक कायक्रमो की अध्यक्षता की थी। पद्रह-पद्रह बीस बीस वष की जवान छात्राओ क नत्य गीत मे कितना मजा आता था। जहा कही भी जाते थ। सु दरियो के सान्निध्य का सुख मिलता था। उ हे लगता था कि वे परियो के देश म रह रहे है।

एम० एल० ए० काफी लोग होते हैं। लेकिन वे एक श्रेष्ठ विधायक थे। मिनिस्टरी तो उ ह इसीलिए नही मिली थी क्योकि वे पहली बार विधायक बने थे। उनकी 'धाक' मिनिस्टरो स कम न थी। उनकी सेहत अच्छी थी और वाकचातुय भी उनम खूब था। इसलिए अबकी बार तो मत्री-पद मिल जाने का पूरा चान्स था। मिनिस्टरी मिलने का अथ था

मौज मेले मे बढोतरी होना। उन्होंने देखा था—मिनिस्टरो पर तो लोग नोटो और सुन्दरियो की वर्षा कर देते है।

इसलिए वे सोच रहे थे किसी भी प्रकार यह चुनाव अवश्य ही जीता जाना चाहिए। उन्होने अपनी बुद्धि के घोड़े चारो ओर दौडाए। उनके ध्यान मे आया कि अपने हल्के मे बटाईदारो और भूमिहीन लोगो की वोटें अधिक हैं, अगर इस वर्ग को किसी प्रकार खुश कर दिया जावे तो जीत निश्चित है। उन्होने अपने मुनीम और वकील को आदेश दिया कि मेरे सभी 'मुजारो' को कह दो कि उन्हे मामूली सी रकम अदा करने पर मालिक बना दिया जावेगा। मेरी सौ बीघा जमीन दस भूमिहीनो को जोतने के लिए और दे दो।

फिर क्या था। सब ओर चौधरी साहब के यश की हवा फैल गयी। जो आदमी स्वय अपने बटाईदारो को मालिक बनाता है और अपनी भूमि भूमिहीनों को देता है, वह तो देवता है।

उनके विधान सभा क्षेत्र के सब बटाईदार और भूमिहीन कह उठे—हमें ऐसा आदमी और कौन मिलेगा ? अगर ऐसा आदमी जीत गया तो सारे राज्य के 'मुजारे' मालिक बनेंगे और सभी भूमिहीन भूमि वाले हो जाएगे।

लेकिन निम्न वर्ग जहा चौधरी साहब के इस कदम से खुश था, वहाँ उच्च वर्ग निराश भी था। इस वर्ग के कई लोग जो चौधरी साहब के विश्वासपात्र थे, चौंक गए। वे सब मिलकर चौधरी साहब के पास गए—"क्यो चौधरी, आप तो लोगो मे भूमि बाट कर मिनिस्टर बन जाओगे लेकिन हमारी भूमि और अधिकार चले गए तो हम क्या करेंगे ?"

"कौन मादर तुम्हारे हक छीनेगा ?" प्यारे दोस्तो और रिश्तेदारो, यह सब तो लोगो की आखो मे धूल झोकने के लिए किया है। चुनाव जीत लेने के बाद आप देखना कि मैं इन लोगा को कैसे ठेंगा दिखाता हू।"

चौधरी साहब की जाति के लोग, चौधरी साहब, जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए चले गए। चौधरी साहब को पूरा विश्वास था कि वे चुनाव जीत जाएगे।

वार्ड नम्बर नौ

नगरपालिका के चुनाव म नौ नम्बर के रिजव घोषित होने से यहा के आम मतदाता नाखुश है। यह उन सवादो से स्पष्ट हो रहा था जो घरो और गलियो म यहा वहा सुनने को मिल रहे थे।

'एक नम्बर वाड मे तो एक एक वोट के हजार-हजार मिल रहे हैं।'

'अरे यहा तो कोई सौ भी देने वाला भी नही।'

"सौ-सौ तो क्या यहा तो कोई पाच-पाच देन वाला नही।

कई नासमझदार अभी भी जिद कर रहे थे, 'हम तो वोट उस ही देंगे, जो हमे कुछ न कुछ देगा।'

'चलो नोट न सही पीएगे तो जरूर।"

इस वाड म अधिकाश तेरहवे महीन के मारे हुए लोग हैं। तेरहवा महीना यानी बेकारी और तगी का महीना। यह महीना साल म दो बार आता है। एक बार तो आसोज मे, जब सावणी की बुआई हुए काफी अर्सा हो जाता है और अभी कटाई म काफी दिन बाकी होते हैं। दूसरी बार फाल्गुन म, जब हाडी की बुआई हुए काफी अर्सा हो जाता है और कटाई मे कुछ दिन शेष हाते है। यद्यपि यह एक कस्बे का वाड है फिर भी इसमे अधिकाश लोग खेतीहर मजदूर है। मजदूरो को काम और बाजीगरो, ढाढियो ढोलिया को इनाम कटाई और बुआई के वक्त ही मिलता है।

यू होने को तो कस्बे म कई कारखाने भी हैं लेकिन वे सब इस मुहल्ले से काफी दूर हैं। उनमे काम करने वाले मजदूर अलग हैं। उनकी बस्ती अलग है। इनम से तो दो चार को कभी-कभार कमी पडने पर ही बुलाया जाता है। फिर इस वाड के कुछ लोग नये भी हैं। उनकी जान-पहचान

भी इतनी नही कि उन्हे ऐसे-वैसे कामो म लगा लिया जाए।

भाट और सीगीकाट तो हैं भी मुफ्तखोरन इनकी लुगाइयां और बच्चे तो अब कहीं सिफ एक काम कपास चुगने का करने लगे हैं। वह भी किसानों की खुशामद करन पर। इस इलाके क किसानो को कपास चुगने की जल्दी हुआ करती है। क्योंकि वे कपास वाली जगह पर गेहू बीजते हैं। इसलिए वे ट्रैक्टर ट्रालिया लेकर इनके 'वास' मे आ जाते ह और इन्हे चढा कर खेतो म ले जात हैं। शाम को घर छोड भी जाते हैं। पसा भी अच्छा बनता है। इसलिए व चले जात हैं। नही तो सारा साल ये कस्ब की गलियो मे भीख मागते हैं या कूडा-कचरा बगैरत फिरते है।

हां! इस वाड के भगियो की स्थिति अच्छी है। वे सब नगरपालिका क सफाई कमचारी है आदमी भी आर लुगाइया भी। सब महीन की महीने तनख्वाह पाते हैं।

आम मतदाता जहा इतने मायूस थे वहा विभिन्न जातिया के मुखिया खुश थ कि वे अपनी बिरादरी के बल पर मेम्बर बन जाएगे और जो चयर मन बनगा उससे अपना खचा पानी वसूल कर लेंगे।

सीगीकाटिया ने अपनी एक मीटिंग बुलाई और अपना एक नेता चुन-कर उसे उम्मीदवार खडा कर दिया। इसी प्रकार ढोलियो, भाटो, भगियो, नायको मघवालो और बाजीगरो न किया। शेष धानक, रायसिख कम्बो, मजहबी आदि के एक एक, दो दो घर थे। इसलिए वे बेचारे मन मसोसकर रह गए।

इस वाड के चार पाच घर भाग्यशाली भी थ। भाग्यशाली इस दृष्टि से कि उनके वोट अग्र वार्डों म बन गए थे। और इसी बदौलत उनके घर दोनो वक्त टेम से चूल्हा जलने लगा था। ठड के दिनो मे काया पर कपडा आ गया था। पोलिंग वाले दिन उन्हे चढाकर ले जाने के लिए कारें और जीपें उनके झुग्गो के आग आ खडी हुई।

लालूडे धानक की घरवाली कार म चढकर वोट डालने गयी जबकि उसके पडौसी जेले मजहबी की घरवाली बुखार म भी सात-आठ जगह बठती-उठती किसी प्रकार मतदान केन्द्र तक पहुची।

जेला मजहबी खेत मजदूर था। कई दिना से बेकार। उसकी घरवाली

को ठड लग कर बुखार हो गया था। शायद साथ मलेरिया भी था और उसके पास दवाई-पानी के लिए पैसा नही था। उसे उम्मीद थी कि कोई-न कोई उम्मीदवार उसकी घरवाली क दवाई के पसे दे देगा। हर वोट मागने आने वाले के पास वह अपनी घरवाली के बीमार होने का जिक्र करता था। और फिर अन्त मे यहा तक कह जाता था कि अगर यह ठीक न हुई तो मत डालने कसे जाएगी ? सारे उम्मीदवार जेले की बात का अथ समझते थे। लेकिन उनके पास पैसे कहा थे ? फिर वे सब यह भी जानते थे कि लोग वोट न देंगे तो और उसका करेंगे क्या ?

जेले की घरवाली मतदान केन्द्र से थोडी दूर जमीन पर पसर गई। पास ही वह बठ गया। उसने देखा, ढोलिया, बाजीगरी, भाटा, भगियो और मेघवालो न अपने-अपने खेमे अलग-अलग बना रखे हैं। हर जाति के लोग अपने-अपने खेमे मे जाते हैं। वहा से पर्ची लेते हैं और मतदान केन्द्र के अदर चले जाते है। उसने देखा कि उम्मीदवारो के नजदीकी लोगो मे काफी उत्साह है। वे मतदान के लिए आने वालो को समझा रहे है। अपने निशान इत्यादि के बारे मे बता रहे हैं। एक खास बात उसन और देखी कि बाजीगरा के उम्मीदवार को सपोर्ट बाजीगर ही कर रहे है। ढोलियो की ढोली, नायको की नायक लेकिन मेघवालो की सपोट ऊची जात वाले चौधरी भी कर रहे हैं। उन्होंने सींगीकाटियो के उम्मीदवार को मघवाला के हक मे बठा भी दिया था।

प्रत्येक खेमे के लोगा ने जेलासिह और उसकी पत्नी को उस हाल म बैठे-पसरे देखा। वे सब बारी-बारी उनसे मतदान अपने हक मे करने के लिए कहने गए। यहा भी जेले न अपनी पत्नी के बीमार और मत डालने मे असमथ होन की बात कही। साथ ही यह भी कहा कि इसे एक टीका लग जाता और गोली मिल जाती तो यह खडी होकर वोट डाल आती। प्रत्येक उम्मीदवार जेलासिह की बातो का अथ पहले से ही समझता था। इसलिए सब चुप्पी लगाकर रह गए।

तीन-साढे तीन बज गए। जेलासिह की पत्नी को किसी न एक गोली भी लाकर नहीं दी। तभी वहा एक हल्ला-सा मच गया। मतदान केन्द्र मे मेघवालो के पोलिंग एजेन्ट के सिवाय सब ऐजेन्ट बाहर निकल आए।

लोग झगडते हुए से कहने लगे—' यह तो सरासर अन्याय है। दूसरे गावो वाले यहा वोटें क्यो डाल रहे हैं ?"

"यह काम चौधरी जी का है।"

चौधरी जी के आदमी और मेघवाल कह रहे थे—जिनका नाम लिस्ट मे है। वे तो वोट डालेंग ही।

एक व्यक्ति ने कहा—"यह होने को तो रिजव वाड है, लेकिन यहा से जीतेगा तो चौधरी जी का पिटठू।'

जेलासिंह ने यह सब सुना और खडे होकर अपनी फटी-पुरानी मलेशिये की चादर फटकार कर झाडते हुए जोर से कहा—"साले का दे चुनाव है। लोगा नू खराब करदे फिरदे नें।"

सुनने वाले हैरान थे कि जेलासिंह ने यह किस वजह से कहा है। पता नहीं तो एक रिजव वाड से भी चौधरी के पिटठू के जीत जाने की वजह से या फिर उसे कुछ मिला नही इस वजह से।

बराबरी

हरफूल की औकात सरपंच के मुकाबले मे कुछ नही थी। सरपच के पास कार, कोठी और दो मुरब्बे थे। बेचारे हरफूल के पास थे मात्र तीन बीघे। वो भी पैतक नही थे। हरफूल का बाप सरपच की बिरादरी के ही एक बड़े मालिक का मुजारा था। कई सालो से वह उस मालिक की तीस बीघे भूमि जोत रहा था। भूमि सुधार के कानून बनने लगे और भूमि की सीलिंग होने लगी तो हरफूल के बाप ने कोर्ट मे मुकदमा ठोक दिया। मालिक बराबर झगड़ता रहा। जीत तो हरफूल के बाप की ही होती लेकिन मालिक ने पिछले सालो की बटाई न देने का झूठा आरोप लगाकर उसे बेदखल करने की कोशिश की। फलस्वरूप मामला लम्बा होता गया। आखिर स्थानीय विधायक के कहे सुने दोनो ने आपस मे सुलह कर ली। हरफूल के बाप ने आधी भूमि छोड दी और आधी का किस्ता म मूल्य चुका दिया। हरफूल वगैरह पाच भाई थे। पाचो न जमीन जब आपस मे बाटी तो तीन-तीन बीघे हिस्से मे आयी।

फिर भी हरफूल अब की बार सरपच के मुकाबले में चुनाव लड़ना चाहता था। यह बात नही थी कि हरफूल सरपची प्राप्त करके अपनी अकड दिखाना चाहता था। वह तो सरपची इसलिए चाहता था कि ग्राम और ग्रामवासियो का कुछ भला हो सके। गाव मे कोई काम हो। वतमान सर पच दिन रात शराब पीये पडा रहा था। बेचारे गाव वाले अपनी कोई समस्या लेकर उसके पास आते थे और वह आगे शराब म 'धुत' पडा मिलता था। शुरू-शुरू मे जब यह सरपच बना था तो गाव मे कई काम हुए थे। गाव मे डिग्गी बनी थी। कई शौचालय और खेतो मे कई पुले बनी थीं।

लेकिन लगातार कई बार सरपंची का चुनाव जीत जाने पर सरपंच गरूर मे डूबता चला गया। उसने गाव का ध्यान रखना छोड़ दिया था और अपना ध्यान रखने लगा था। गाव की पचायत की आमद अच्छी थी। मत्री लोगो के बीच पैंठ भी थी। फलस्वरूप उसके खेत मे बाग और ताजमहल सी कोठी खड़ी हो गयी थी। उसके बीच जीप की जगह कार आ गयी थी। देशी ठर्रे की जगह विलायती शराब चलने लगी थी। इसी सरपच की वजह से ही गाव पार्टीबाजी मे आकठ डूब गया।

होने को तो हरफूल और हरफूल के भाई भी सरपच की ही पार्टी के थे। लेकिन दिनो दिन हरफूल का मन सरपच से विद्रोह करने की सोच रहा था।

यह ठीक है कि हरफूल का खानदान सदा से गरीब था। लेकिन दिल और ईमान का बडा धनी था उनका खानदान। अग्रेजो के जमाने मे भी हरफूल के बाप-दादे गाव के बडे-से-बडे चौधरी की 'मिया' करा देते थे। हरफूल का बाप और चाचे-ताये लाठी के पूरे खिलाडी थे। गाव भर मे माई का लाल कोई उनके सामने नही देख सकता था। वे चार-पाच सारे गाव को ललकार देते थे।

यही खानदानी दिलो दिमाग की ताकत थी जो हरफूल को सरपच को ललकार देने के लिए उत्साहित कर रही थी। इतना ही नही हरफूल ने सोचा—यह तो वोटो की लडाई है। फिर वोटें तो हमारी ही हमारी हैं। मेरे खुद दादे की औलाद की ही पूरी सौ वोटें है। हरफूल का एक ताया सदा पचायत का मेम्बर बनता आया था और अबकी बार वह मेम्बरी उसे भी हासिल हो गयी थी।

हरफूल यह भी जानता था कि सरपच की पार्टी के और भी काफी लोग खार खाये बैठे है। लेकिन वेचारो मे हिम्मत नही है विद्रोह करने की। अगर व उसे छोडकर खेताराम की पार्टी मे जाते हैं तो यहा उन पर विश्वास नही किया जाता। पुरानी रजिश भुलाकर जाना है भी कठिन। वह सोचता—अगर वह आगे आये तो लोग उसके पीछे लगने के लिए आसानी से तयार हो जायेंगे। खेताराम की पार्टी के कुछ लोग भी उसके पीछे हो जायेंगे।

सिर्फ सरपच को ही बदलना होता तो हरफूल खेताराम की पार्टी मे

मिल जाता। लेकिन उसे खेताराम और खेताराम की पार्टी के बडे आदमियो का चरित्र भी सरपच से कोई भिन्न दिखाई नही पडता था। हरफूल चाहता था कि बहुमत के आधार पर सरपच निचले तबके से होना चाहिए।

निचले तबके के कई लोग हरफूल को चुनाव मे खडा होने के लिए उत्साहित कर रहे थे। वह हर गरीब व्यक्ति के हारी-बीमारी मे काम आने वाला आदमी था। स्वभाव का शील। जो भी उसके सपर्क मे आता था उसका होकर रह जाता था। अब तो सरपच की जगह गाव के लोगो के छोटे छोटे झगडे भी वही सुलझाने लगा था। वह किसी से लाग-लपेट नही रखता था। दूध का दूध और पानी का पानी करके रख देता था। एक दो बार उसने अपने चाचे के बेटे भाइयो का भी पक्ष नही लिया। गलत काम करने पर उन्हें सरेआम बुरा-भला कहा। एक बार तो उन्होने मुंह भी फुलाये। लेकिन फिर अपनी गलती का अहसास हुआ तो सीधे हो गये।

हरफूल के पास सरपची करने के लिए कार या जीप नही थी। धन नहीं था। लेकिन सरपची करने के लिए जो फुरसत चाहिए वह हरफूल के पास थी। दो लडके कमाते थे, उसी म किसी-न किसी तरह गुजर हो रही थी। हरफूल के अपने खेत मे तो कितना काम था? लडके कभी-कभार दिहाडी मजूरी भी कर लेते थे। और पचायती भूमि ठेके पर भी ले लेते थे। लडके भी देख रहे थे कि बाप दो आदमियो म उठता-बठता है और नेक काम करता है तो अपना क्या लेता है? भला ही है। इसमे अपनी भी शान है।

सारे गाव मे हरफूल के हक मे हवा बन रही थी। लोग घर आकर बैठते थे। हुक्का-पानी पीते थे अपनी समस्या रखते थे और समाधान करवाने के लिए उसे साथ ले जाते थे। गाव म जैसे-तैसे करके लोग उसकी बात को मानने लगे थे। हरफूल को अपने भविष्य मे अच्छे आसार नजर आ रहे थे।

लेकिन जब वह सरपच और सरपच की बिरादरी के लोगा के धन की ओर देखता था तो उसका मन डूब जाता था। वह सोचता था—पहली बात तो यह है कि य धन से लोगा को खरीद लेंगे। लोग अगर न भी बिके और मैं सरपच बन भी गया तो य मेरा और मेरे साथी लोगो का जीना भर कर देंगे। मेरे भाई-बधु या जो मेरे पीछे लगेंगे इन्हीं के खेत-क्यार में

कमा कजा कर खाते हैं। अगर ये कुपित हो गये तो गाव के सारे गरीब तबके को मनाही कर देंगे। कहीं से नये मजदूर ले आयेंगे। खेत मे नया चक बसा देंगे। फिर हमारा क्या होगा !

कभी वह सोचता—यह सब तो मेरे कमजोर मन की बातें हैं। यह तो वोटा का राज है। यानि जिसके पास अधिक वोटें हो वही राज करे। फिर मेरी भी तो थाने-तहसीलो मे कुछ चलने लगेगी। गरीब लोगो के बिना इनका काम कैसे चलेगा ? ये नये गरीब लोगो को लाकर चक बसायेंगे तो हम उसकी घेराबन्दी कर लेंगे। गाव मे दूसरे गाव का एक भी मजदूर नही घुसने देंगे। इन लोगो की ज्यादतियो की तरफ सरकार का ध्यान भी खींचा जा सकता है।

इस प्रकार हरफूल कभी अपने दिल को जमाता था तो कभी खो बैठता था। पचायती चुनाव होने की अफवाहें फैलने लगी थी। हरफूल का मन सरपची का चुनाव लडने के लिए दृढ होता जा रहा था। तभी एक घटना घटी।

एक रात हरफूल के बेटे की बहू ऐसी बीमार हुई कि अब मरी ! अब मरी ! गाव के आर० एम० पी० को बुलाया। उसने हाल चाल देखकर जवाब दे दिया और कहा, शीघ्र ही शहर ले जाओ, नही तो बचना मुश्किल है।

रात को शहर कैसे जाया जा सकता था ? फिर एक बीमार को लेकर ? रात को सडक पर बसें तो आती-जाती नही थी। गाव मे जीप कार के लिए दौड लगाई गयी। एक घर की जीप तो घर पर नही थी। दूसरे न जवाब दे दिया क्योंकि कभी हरफूल ने उसके विरुद्ध पचायत मे कुछ कह दिया था। ले-देकर सरपच ही बच गया। हरफूल का लडका कार मागने गया। सरपच का ड्राईवर झट कार लेकर हाजिर हो गया।

सरपच की कार म जब वे शहर के सरकारी अस्पताल मे पहुच गये तो हरफूल सरपच के अहसान से दब गया। उसने सोचा—अपने जैसे लोग इससे दुश्मनी लेकर कसे जीयेंगे ? अगर यह आज ही न बचाता तो बहू घर पर मर जाती। चलो वोटो की गज से ही सही अपना मान-सम्मान तो रखता है। उसने निर्णय लिया कि वह सरपच के विरुद्ध चुनाव नही लडेगा और न ही उसकी पार्टी छोडेगा !

आखिरकार

अन्य दिनो की भाति आज भी उसकी नियुक्ति न हो सकी। दस स्थान खाली थे पर पहुचे सैकडो। इन स्थानो के लिए अनिवाय न्यूनतम योग्यता मैट्रिक थी। वह एम० ए० था। और भी बहुत से प्रत्याशी उच्च योग्यता प्राप्त थे। इसीलिए तो उसका क्रोध नियुक्ति विभाग पर नही गया।

आज उसका धीरज पूणतया टूट गया। उसे लगा कि नौकरी उसे कही भी नहीं मिलेगी। अब वह सडक पर चल रहा था। उसने देखा सारे लोग अपने-अपने काम धधो मे लगे हुए हैं। दुकानदार जल्दी-जल्दी माल बेच रहे थे। होटलो मे चहल-पहल थी। किसी ने रडी लगा रखी थी। कोई कपडे सी रहा था। वह बहुत निराशापूवक उनको देख रहा था।

स्थापित लोगो का देखकर उसके मन मे ईर्ष्या उठने लगी। वह मन ही मन मे उन सबके लिए अशुभ की कामना करने लगा। तभी उसे विश्वास हुआ कि अवश्य ही कुछ-न कुछ हो जायेगा। दो साल पूव वह निर्दोष थाने म पकडा गया था तो उसने चाहा था कि इस शहर मे बम गिरने लग जायें। और सचमुच ही इसके दस दिन बाद इस शहर पर पाकिस्तानी जहाजो ने बम बरसा दिय थे। बहुत व्यक्ति मारे गये। शहर के बडे लोग बाहर भाग गये। उसने चाहा कि काश ! अब भी ऐसा कुछ हो जाये। साथ ही उसने यह हिसाब भी लगाया कि क्या उसका इस प्रकार सोचना ठीक है। कभी तो वह स्वय ही ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले आदमियो से घणा करता था। वह समाज और देश के लिए बहुत कुछ करना चाहता था। परन्तु जब समाज और देश ने उसे यह कह कर ठुकरा दिया कि हमे आपकी कोई आवश्यकता नहीं तो वह कुछ भी करने के लिए स्वतत्र था।

उसे लगा कि उसका सोचना ठीक है। ये समाज वाले, ये राजनीतिज्ञ, ये सुखी लोग दुखी और निराश लोगो का ध्यान क्यो नही रखते ?

थोडी-सी दूर जाने पर उसे सदीप मिल गया। वह बी० ए० तक उसके साथ पढा था। वह कालेज का सवश्रेष्ठ खिलाडी था। कालेज के लिए न जाने कितनी ही शील्डें जीतकर लाया था। पारितोषिक वितरण म आधे पारितोषिक उसी के हुआ करते थे।

परन्तु अब कुछ भी नही था। इतनी लोकप्रियता और सम्मान कोई काम नही आया। वह उसे कई दिनो से शराब पीये प्राईवेट बसो मे टिकट चैक करते हुए देख रहा था। वह थककर पहले से आधा हो गया था।

आगे जाने पर उसने देखा—एक दुकान मे हवन हो रहा है। सुभाष आग के सामने बैठा मत्र बोल रहा था। वह उनकी कालेज पत्रिका का सम्पादक हुआ करता था। उसके जी मे आया कि पूछ ले तुम्हारी साहित्यिक गतिविधियां कैसी हैं ? पर पूछने से क्या लाभ। वह स्वय ही जानता है कि बचारे को कोई स्थानीय पत्र भी नही छापता।

एक डॉक्टर की दुकान मे उनके कालेज के दो लडके शीशियां धो रहे थे। उससे रहा न गया और पूछ ही बैठा 'भाई यही काम करना था तो कालेज म चार साल क्यो नष्ट किये ? यह काम तो तुम पहले भी कर सकते थे।'

"यार क्या करें। पढने की भूल हो गयी सो हो गयी। अब तो सुधार कर लें।"

वही उसने देखा—कालेज की बस लडकियों से भरी हुई पास से गुजर रही थी। स्कूल से छूटे लडके सडक पर समा नही रहे थे।

उसने आश्चर्यपूर्वक सोचा—अभी भी लोग क्यो पढे जा रहे हैं ? परन्तु उसे याद आया कि जब कोई पढता है तो उसे यह याद कहा रहता है कि पढाई व्यर्थ ही जाएगी। सब ऊचे ऊचे सपने देखते हैं। उसने भी देखे थे।

ज्यो-ज्यो उसका घर निकट आ रहा था त्यो-त्यो उसका हृदय और भी अधिक डूबा जा रहा था। वह सोचने लगा कि उसकी घर वाली को भाभी खरी-खोटी सुना रही होगी। मुन्ने को पीने के लिए दूध नही दिया होगा। वह किसी कोने मे उस पर आस लगाये पडी होगी कि आज तो मैं जरूर

खुशी का समाचार लिये घर आऊगा। विवाह होने से पूर्व बेचारी ने न जाने क्या-क्या सपने देखे होंगे? अभी दिन बहुत खड़ा था। उसे कुछ देर और भ्रम में रखने के लिए वह लाइब्रेरी की ओर मुड़ गया।

वह सोच रहा था कि आज जब वह अपनी असफलता भाई से कहेगा तो वह भी उस पर बरस पड़ेगा। वह भी तो सच्चा है। आखिरकार कोई किसी को कब तक सहारा दे? मैं तो बराबर का भाई हू। अकेला नहीं हम तीन हैं। उसका कोई दोष नहीं। दोषी तो मैं हू। जो कोई अन्य धन्धा नहीं अपनाता। मैं क्या करू? कोई शान शौकत वाला काम चलाने के लिए पैसा चाहिए। पैसे कहा से आयेंगे? तभी सामने उसे एक ताजमहल की तरह चमकती हुई कोठी दिखाई दी। उसे बड़ी जोरों की डाह हुई। साथ ही कोई उसे कहने लगा, "इस कोठी में बहुत पैसे हैं। साहस करो छुरा लेकर कूद पड़ो। सेठ मौत के डर से सब कुछ दे देगा।"

इसे सुनकर उसके चेहरे पर रौनक आ गयी। उसने जोर से अपनी मुट्ठिया भीची। उसे अहसास हुआ कि उसमें बहुत शक्ति है।

परन्तु अगले ही क्षण वह डर गया। पास से एक पुलिस की गाड़ी निकल रही थी। "नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकता, ऐसा करने पर उसे कद में जाना पड़ेगा।"

"इस जीवन से तो कैद ही भली है।'

'पर बीवी-बच्चा का क्या होगा?'

"उन्हें ससुराल में छोड़ आना चाहिए।"

पुस्तकालय में उसने एक स्थानीय पत्र उठाया। कोने में एक खबर थी कि शहर का बर्खास्त किया थानेदार तस्करी करने वालों के गिरोह में जा मिला।

पढ़कर वह बहुत खुश हुआ। उसे लगा कि वह अकेला नहीं रहेगा। इसके पश्चात वह रोज ही शहर के गुण्डों से दोस्ती बढ़ाने लगा। ताकि जल्दी-से-जल्दी उस गिरोह का पता लगा सके। अब उसके मस्तिष्क में नौकरी ढूढने या कोई धन्धा चलाने का कोई विचार नहीं था।

□□